मानव मन्दिर

जुलाई-अगस्त, 2014 (वर्ष-41, अंक 07-08)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक : **परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज**

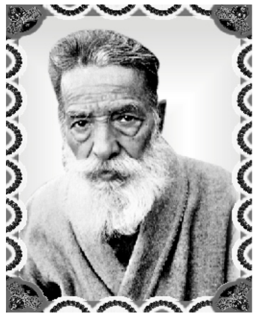

- प्रबन्धक सम्पादक :
  श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)
  (+91 94177-66913)
- प्रकाशक :
  श्री राणा रणबीर सिंह
  (जनरल सैक्रेटरी)
  +91 94631-15977, +91 97791-05905
  E-MAIL : ranbirrahal@outlook.com

अनुक्रमणिका

1.	शब्द सुमन	02
2.	महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज : पहचान पूरे गुरु की	03
3.	महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज द्वारा रचित : महारामायण	07
4.	परमसन्त हजूर परमदयाल जी महाराज : परम सुख ज्ञान का स्वरूप हो जाने में	17
5.	परमसन्त हजूर परमदयाल जी महाराज : सुनो मेरी विनती गुरु दाता	32
6.	परमसन्त हजूर परमदयाल जी महाराज : गुरु पूजा	43
7.	परमसंत मानव दयाल जी महाराज : आये गुरु महाराज री	62
8.	सत्संग दयाल कमल जी महाराज : गुरु पूजा	77
9.	के. एम. सी. परदेसी नहीं रहे	98
10.	आभार प्रदर्शन	102

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

FAQIR LIBRARY CHARITABLE TRUST (REGD.)

Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur–146001 (Pb.) Ph.: 01882–243154
e–mail : manavtamandirhsp@gmail.com
web : www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

शब्द सुमन

जब तुम्हें चिन्ता सतावे, गुरु का तुमको ध्यान हो।
मिट रहे अज्ञान पल छिन में, जो सच्चा ज्ञान हो॥

दुख संकट में विपत में, सोच में चिन्ता में भी।
नाम का सुमिरन सदा हो, नाम का अनुमान हो॥

सोते उठते बैठते और, खाते पीते जागते।
गुरु को अपने पास समझो, परिचय का परमान हो॥

कौन सी आपत है जो, टाले नहीं टलती कभी।
नाम है हथियार जानो, तुम नहीं अनजान हो॥

राधास्वामी की दया से जब शरण तुझको मिली।
कुछ दिनों अभ्यास पीछे जीते जी निरवान हो॥

(फ़कीर शब्दावली से उद्धृत)

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज
पहचान पूरे गुरु की

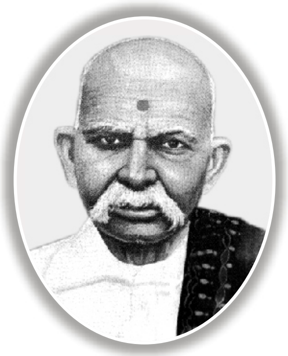

गुरु सोई जो शब्द सनेही,
शब्द बिना दूसर नहिं सेई।

गुरु वह है जिसका शब्द के साथ स्नेह है और जो शब्द के सिवाय किसी और बात से सम्बन्ध नहीं रखता।

जिस मनुष्य का शब्द के साथ ऐसा गहरा सम्बन्ध है जैसे मछली को पानी के साथ होता है उसका नाम 'स्नेही' है। मछली एक क्षण के लिए भी पानी से अलग नहीं रह सकती। मछली की जात पानी है वह पानी में पैदा होती , पानी में क्रीड़ा करती है, पानी में जीती है और मरकर भी पानी में मिल जाती है। इसी प्रकार शब्द भी वास्तव में जात है। जिस मनुष्य ने शब्द को अपनी जात समझ लिया वह भी ऐसी मछली और पानी की तरह ही है। शब्द तो सारे संसार की आत्मा है शब्द के बगैर कोई रह नहीं सकता। सब उसी से पैदा होते है, उसी में रहते हैं और उसी में समा जाते हैं। ऐसी कोई भी जिन्दगी नहीं है जो एक क्षण के लिए भी शब्द से खाली रह सके परन्तु इस बात का ज्ञान किसी-किसी जीव को होता है। ज्यादातर लोग इस ज्ञान से खाली रहते हैं।

जल में मीन प्यासी
मोहे देख के आवे हांसी।

मछली पानी में रहती हुई अगर किसी से यह प्रश्न करे कि पानी कहाँ है? मैं प्यासी हूँ और पानी पीऊँगी तो लोगों को सुनकर हँसी आयेगी। इसी

प्रकार प्राणी शब्द में रहते हुए किसी के समझाने-बुझाने पर भी अगर यह प्रश्न करे कि शब्द कहाँ है? हम शब्द की जिन्दगी कैसे गुजारें तो क्या यह हँसी-मखौल की बात नहीं होगी। परन्तु दुनिया में ऐसा ही हो रहा है।

जिसने शब्द के भेद (रहस्य) को अच्छी तरह समझ लिया, शब्द में जिसकी निष्ठा है, जो शब्द के सिवाय दूसरे किस्म का कोई शुगल नहीं करता और जो अपने आप को शब्द स्वरूप समझता हुआ शब्द ही के कारोबार में मग्न रहता है उसका नाम गुरु है।

शब्द कमावे सो गुरु पूरा,
उन चरनन की होजा धूरा।

जो शब्द की कमाई करता है वही पूरा गुरु है, उसके सिवाय दूसरा कोई और गुरु नहीं है। ऐ सच्चे जिज्ञासु! तू उसके पवित्र चरणों की धूल होकर रह। गुरु की पहचान यह बताई गई है कि जिसने शब्द को पा लिया है और जिस के जीवन का आदर्श शब्द है उसी की संगत और सेवा करने की आज्ञा है। जो मनुष्य इस विशेषता से खाली है उसकी सेवा और संगत से परमार्थ का सच्चा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता।

नदी में पानी है, नदी स्वयं पानी है, नदी पानी से भरी हुई है जिसको जीवन के ताजापन, जीवन की उन्नति की आवश्यकता हो और प्यास बुझाने की इच्छा हो वह नदी के पास रहे, नदी में नहाये, नदी का पानी पिये तब उसकी इच्छा पूरी होगी। जिस जीव को गर्मी की इच्छा है वह अग्नि के पास रहे और अग्नि का बनकर रहे तो उसे गर्मी का फायदा हो जायेगा। बिल्कुल इसी तरह गुरु शब्द स्वरूप है। जिसको गुरु के शब्द से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा हो वह गुरु की संगत करे, गुरु की सेवा करे तब उसे शब्द का लाभ पहुँचेगा।

गुरु शब्द संस्कृत की धातु 'गृ' (गिरा) से निकला। गिरा कहते हैं वाणी या शब्द को। यह सारा संसार शब्द से ही प्रकट हुआ है और शब्द से ही भरा हुआ है। इस संसार में सबसे ज्यादा शब्द स्वरूप और सुन्दर मूर्ति

का नाम गुरु है। शब्द ने जिस शरीर में अपनी खूबी का चमत्कार दिखाया है और जिसने सबसे ज्यादा सुन्दरता के साथ जिस प्राणी में अपना प्रकटाव कर रखा है उसी का नाम गुरु है और उसी की संगत और सेवा सबसे जरूरी है।

और पहचान करो मत कोई
लक्ष्य अलक्ष्य न देखो सोई।

गुरु की और पहचान न करो। वाच और लक्ष्य पर न जाओ क्योंकि प्रकट रूप में यह तुम्हारी समझ से बाहर है।

लक्ष्य कहते हैं आदर्श को, ideal को। अगर कोई आदमी इन झगड़ों में पड़े तो पहले तो आदर्श का समझ में आना ही मुश्किल है, दूसरे वह लफ्जी झगड़ों में पड़ कर '**तत् त्वम् असि**' की बहस की तरफ चला जायेगा। इसमें '**तत्**' लक्ष्य है और '**त्वम्**' वाच है और '**असि**' दोनों को मिलाने वाली कड़ी है। अब तुम समझो जिस आदमी ने अच्छी तरह साधन नहीं किया वह इस वाच और लक्ष्य को क्या समझेगा और व्यर्थ ही वाद-विवाद में पड़कर अपना समय बरबाद करेगा इसलिए सन्तों ने साधारण तौर पर 'शब्द स्नेही' गुरु की निशानियाँ बता दी हैं जिनका असर स्वयं ही सत्संग में सत्संग करने वालों के दिलों पर होता रहेगा।

जब वह घट का भेद सुनावें,
नभ की ओर सुरत मन भावें।

जिस समय वह सत्संग के वचन कहेंगे, सुनने वाले की आत्मा उनके वचनों से प्रभावित होकर स्वयं ही आकाश की ओर उड़ने लगेगी और उसमें मस्ती आएगी। दूसरी पहचान शब्द स्नेही गुरु की यह होगी कि उनके वचनों से सत्संगियों में एकता और प्रेम का उदय होगा और मेरे-तेरेपने की बुरी आदत सदा के लिए चली जायेगी।

हम तो आए हंस चेतावन,
धारा शब्द रूप मन भावन।

सत्तलोक हँसत ले जाऊँ,
काल जाल से जीव छुड़ाऊँ।

यह 'गिरा' यानि गुरु के शब्द का मकसद है जिसकी समझ खुद-व-खुद सत्संग में आएगी और सत्संगी का दिल उनके साथ मोहब्बत और प्रेम करने से परमार्थ की तरफ आएगा और उसे लक्ष्य और अलक्ष्य के झगड़े में पड़ने की जरूरत नहीं रहेगी।

शब्द भेद लेकर तुम उनसे,
शब्द कमाओ तुम तन मन से।

ऐसे गुरु से शब्द का भेद लेकर तुम तन-मन से शब्द की कमाई में लग जाओ। नदी पानी से भरी हुई है उसके पास जाओ अपना लोटा पानी से भर लो और खुश होकर पानी को पी लो ताकि तुम्हारे अंदर और बाहर में ताज़गी आ जाए। इसी प्रकार शब्द का सागर उमड़ रहा है उसकी कमाई में लग जाओ। गुरु के अन्तर और बाहर में पूरी सुन्दरता के साथ शब्द अपना प्रकटाव कर रहा है वहाँ वह परमार्थ के रूप में है। तुम भी शब्द स्वरूप हो परन्तु इसमें शब्द का प्राकट्य सुन्दरता के साथ नहीं है। तुम लड़ाई-झगड़ों ईर्ष्या-द्वेष, मेरे-तेरे पने और साम्प्रदायिक वाद-विवाद में पड़े रहते हो, तुमको अपने अन्तर शब्द के बारे में पता नहीं। तुम अपने आपको गुरु के आधीन करके शब्द का भेद लो और तन और मन से उसकी कमाई में लग जाओ। यह हिदायत है।

●

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज
द्वारा रचित
महारामायण

(गतांक से आगे)

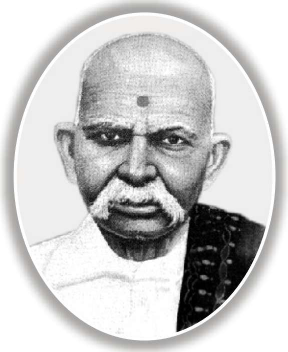

सातवाँ समुल्लास

समुद्र तट पर राक्षसों का आगमन

समुद्र का किनारा राक्षसों से भरा था। उनमें रावण के दूत थे। बन्दर अभय थे। इन्हें पकड़ा, नोंचा, खसोटा, बांधा और इनके नाक-कान काटने के पीछे पड़े। इन्होंने राम लक्ष्मण की सौगन्ध दी- ''हमको न मारो, न सताओ, न हमें कुरुष बनाओ। हम राम के शरणागत हैं।''

लक्ष्मण ने सुना-''दया आई और छुड़वा दिया। इसके पश्चात् विभीषण का दल पहुँचा। बन्दर उतावले होते हैं। इनके भी पीछे दौड़े। विभीषण का नाम सुनकर चुप हो रहे।''

राम ने इनके आने का समाचार पाया और सभा की । रीछ, बन्दर और मंत्री बैठे। बात-चीत होने लगी। किसी ने कहा हमारे बीच में शत्रु दल के किसी पुरुष का आना ठीक नहीं है। इनको ताड़ना करके लौटा दिया जाए। किसी ने कुछ और किसी ने कुछ सम्मति दी। राम ने सावधान होकर सबकी बातें मान लीं और सबसे अंत में कहा- ''पहिले यह जान लेना चाहिए कि विभीषण क्यों आए हैं। वह रावण के भाई मंत्री और राजकुमार हैं। जाओ, उन्हें यथोचित सम्मान से ले आओ''

वह लाए। साष्टांग दण्ड प्रणाम किया। राम तपस्वी और वन वासी थे। रेत की भूमि और कुशासान! विभीषण ठाट-बाट के साथ थे। राम उठे। उन्हें छाती से लगाया। लक्ष्मण का बर्ताव भी उनके साथ वैसा ही हुआ।

राम ने अपने आसन के पास उन्हें आसन दिया। कुशल पूछी। विभीषण बोले-''कुशल तो केवल आपके चरणों में है। जब दुःखदाई संसार महाउत्पात मचा लेता है और मनुष्य सब प्रकार से दुखी हो जाता है तब उसे आपकी भक्ति की सूझती है और यह केवल आपकी शरण लेकर भक्त हो जाता है। मैं राक्षस हूँ। काम, क्रोध, लोभ, मोह का सताया हुआ। मुझमें कुशल कहाँ। मेरा इन चरणों के समीप आना ही मेरी दशा पर प्रकाश डालता है। मैं शरणागत होने आया हूँ।''

राम-''कुछ तो कहो लंका की क्या दशा है।''

विभीषण-''रावण की बुद्धि भ्रष्ट हो गई । मैने समझाया कि सीता को लौटा दो। राम की शरण लो। इस अपराध में उसने मेरे लात मारी । भरी सभा से निकल जाने और आपके समीप जाकर रहने की आज्ञा सुनाई। मैं घर भी नहीं गया आकाश मार्ग से आपके चरणों में चला आया।''

राम ने उस समय समुद्र से पानी मँगाया और विभीषण को राज तिलक देकर कहा-''भाई! आज से तुम लंका के राजा हो। रावण मरेगा। जल्द मारा जाएगा। उसका काल आ गया और लक्ष्मण, उस की जगह तुम को सिंहासन पर बिठाएँगे।''

''रघुकुल की यह रीति है कि जो शरण में आ जाते हैं उनकी तन, मन धन से रक्षा की जाती है। शरणागत को मारने वाला भी आ जाये तो रघुंवंशी इसके लिए अपनी जान तक लड़ा देगा। हमारे वंश का दूसरा नियम है कि वचन को नहीं पलटते। तुम मेरे पास आ गए अच्छा किया। अब अभय रहो। भयभीत होने से तुम विभीषण कहलाते थे। अब तुम्हारी दशा कुछ और होगी। मैं तुम्हारा नाम बदल सकता था, परन्तु उसकी आवश्यकता

नही है तुम्हारे भय के अंग को भी बुरा नहीं कहता । जिसकी प्रकृति में सतोगुण प्रधान होता है उनकी ऐसी ही गति रहती है। देवता इसी गुण की अधिकता से डरने वाले प्रसिद्ध हैं। अभय या तो मूढ़ होता है या ज्ञानी होता है। तुम ज्ञानी नहीं हो, अज्ञानी हो। अब मेरी संगत और शरण में आने से तुमको ज्ञान की प्राप्ति होगी।''

विभीषण के राजतिलक के पश्चात् सुग्रीव आदि ने जब विभीषण के साथ राम का यह बर्ताव देखा, उनके आशय और मन्तव्य को समझ गए। बन्दरों की चंचल वृति की रोकथाम की। फिर सब राक्षस राम की शरण में आते गए और राम ने राक्षसी दल का सेनापति विभीषण को बनाया।

फिर क्या था। धीरे –धीरे लंका के कई राक्षस आए। हनुमान बहुत चौकन्ने रहते थे कि कहीं रावण के गुप्त दूत दल में सम्मिलित न होने पाए। विभीषण से पूछ कर तब उन्हें रहने की आज्ञा मिलती थी।

आठवां समुल्लास

राम की सेना की पूर्ति

पुल बँध रहा था। बन्दर और रीछ़ काम से लगे हुए थे। राम ने विभीषण, हनुमान, सुग्रीव और जामवन्त को बुलाया। वह आए। लक्ष्मण पास बैठे हुए थे।

राम ने कहा–''मित्र सुग्रीव! किष्किधाँ में सैना के इक्कट्ठा होने के समय मैंने कहा था कि अभी तक केवल दो अंग एकत्रित हुए हैं। एक अंग की कसर रह गई है। तुमको सुनकर आश्‍चर्य हुआ था। मैंने कहा था किसी समय यह रहस्य समझा दूँगा। वह समय आज आ गया। तुम्हारी सेना का तीसरा अंग आकर जुड़ गया। अब वह त्रुटि जाती रही और सेना सर्वांग से आज पूरी है और तुमको अवश्य रावण पर विजय प्राप्त होगी और वह पराजय होगा।''

सुग्रीव ने चकित होकर मुँह खोला –''मैंने अब तक भी इसे नहीं समझा''

राम बोले–''विभीषण आ गए। उनके आने से कमी की पूर्ति हुई है और तुम्हारी सेना अब पूरी त्रिगुणात्मक है।''

कसर जो भी आज जाती रही।
नहीं तो यह चिंता सताती रही॥
अभय होके अब काम अपना करो।
न सोचो न दुविधा से जी में डरो॥

सुग्रीव–''मैं बन्दर हूँ समझ–बूझ से रहित! और भी समझाइये।''

राम–''मनुष्य शरीर में मन के तीन अंग होते हैं – सतो गुण, रजोगुण, तमोगुण, इन्हीं को वैष्णवी , ब्रह्मवी और शैवी भी कहते हैं। बात एक है, मन्तव्य एक है। केवल शब्द प्रयोग का भेद है।

मन के तीन अंगों का स्वरूप यह है–''अज्ञानी वृति राक्षस है जो सुरक्षा, स्वार्थ , सम्मान की भूखी रहती है। इसी से इस का नाम राक्षस है और वह विभीषण भय आसक्त है।''

''चंचल वृति बन्दर है, जो संकल्प–विकल्प उठाती रहती है और उसी में कूदती–फाँदती और उछलती है। इसका नाम इसी दृष्टि से बन्दर रखा गया और वह तुम लोग हो।''

''मूढ़ वृति रीछ़ है। 'ऋक्ष' संस्कृत में चलने को कहते है। यह चुपचाप बिना कहे सुने काम में लगे रहती है। इसका नाम रीछ इसी दृष्टि से रखा गयाा और वह बूढ़ा वीर जामवन्त है।''

''जब तक यह तीनों इक्कट्ठे न हो जाँए और इन तीनों की नियमानुसार रोकथाम न करली जाए, तब तक किसी प्रकार की सिद्धि शक्ति, विजय और कीर्ति नहीं मिलती। अब तीनों अंग पूरे हो गए, त्रुटि जाती रही और मेरी चिंता दूर हो गई।''

इधर राक्षस है उधर वीर बन्दर।
मिले रीछ बलवान दोनो के अन्दर॥

यह तीनों बली साहसी और योद्धा।
साधे साधे और तीने ही के जो सोचा॥
करेंगे यह काम अपना निष्काम होकर।
थकेंगे न उक्तायेंगे जाग होकर॥
नहीं सामना इनका कोई करेगा।
जो लड़ने को आएगा आकर मरेगा॥

सुग्रीव–''यह तो मैंने समझ लिया। आपने भली-भांति मुझे समझा दिया। अब संशय नहीं है। सावधान हो गया। प्रभो! अब यह बताइये कि इस शरीर में इन तीनों वृतियों के स्थान कहाँ है, कहाँ और यह कैसे-कैसे और किस-किस विधि से काम करती हैं।''

राम ने कहा–''मैं रेत पर चित्र खींचता हूँ उसे देखोगे तो यह रहस्य भी तुम्हारी समझ में आ जाएगा।'' और राम ने पृथ्वी पर अपनी उंगलियों से रेखा खींच कर मनुष्य का अर्ध चित्र बनाया(देखो चित्र)

राम बोले– ''इस चित्र में तीन जगह तीन बिदियाँ दी हुई हैं। पहिली (1) भ्रू- मध्य दोनों भौओं के बीच आँजना चक्र में यहाँ मन की अज्ञानी, सतोगुणी ऊँची और राक्षसी वृति रहती है। इसके काम का मंडल सारे शरीर में है। दूसरी (2) दोनों छातियों के बीच हृदय चक्र या अनाहत में है। यहाँ मन की चँचल रजोगुणी बिजली और बानरी वृति रहती है। इसके काम का मंडल यों तो चोटी से एड़ी तक है फिर भी उसे बड़ा नहीं कहते। तीसरी (3) नाभि चक्र या मनी पर में मूढ़ वृति रहती है तमोगुणी तामसी निचली और रीछ है। इसके काम का मंडल बहुत बड़ा है।''

''हे सुग्रीव! ये न मानसिक वृत्तियों के रहने के स्थान हैं। यह तीनों मिली-जुली रहती हैं। इनके कामों पर ध्यान देने से इनका पता लगता है।''

सुग्रीव ने पूछा – ''इनके काम क्या हैं?''

राम ने उत्तर दिया–''मन की निचली वृति जानती-बूझती, सोचती-समझती है और अपने भाव को प्रगट करती रहती है। जैसे तुम खाना खा

रहे हो दाँत से काटते हो, जिह्वा से चुबलाते, रस लेते और ग्रास बना कर गले के नीचे उतारते जाते हो और साथ ही कहते जाते हो कि खाना लोना है या आलोना इत्यादि।''

''खा पीकर यह खाना नाभि चक्र को सौंप दिया गया । यहाँ मन की मूढ़ वृति काम करती है। यह न स्वाद लेती है , न बोलती है। केवल अपना काम करती रहती है। भोजन को पचाया, रस, रक्त, चर्बी , वीर्य , ओजस आदि बनाया और एड़ी-चोटी तक सब को आहार पहुँचा दिया। इसका मंडल शरीर की छष्टि से सर्व व्यापक है।''

अज्ञानी वृति जोत्राकार है। यह किसी किसी में जब फुरती है तो मनुष्य में बल वृद्धि आ जाती है। इस से जो प्रश्न करो सच्चे-सच्चे उत्तर दे देती है। यह तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर यथाशक्ति दिए गए, लेकिन जब यह पूछोगे कि मेरा रूप क्या है या आत्मा ईश्वर ब्रह्म क्या है, कहाँ रहता है, तब चुप हो जाएगी। इसका ज्ञान उसे नहीं है इसलिए अज्ञानी कहलाती है। खाती पीती, अपनी रक्षा भी करती है और नहीं भी करती है। इसका भी मंडल बहुत फैला हुआ है। जब यह किसी-किसी में फुरती है तो अनाड़ी कहते हैं कि भूत प्रेत की छाया है और समझदार जान जाते हैं कि इस में अज्ञानी वृति के फुरना हुई है। यह इन तीनों के तीन काम के मंडल हैं।

सुग्रीव–''तब तो यह तीनों निष्फल हुए।''

राम–''क्यों?''

सुग्रीव–''ज्ञान इन तीनों में से किसी को भी नहीं हुआ।''

राम–''यह सच है। ज्ञान अनुभव से होता है। जब मन की यह तीनों वृतियों एकाग्र हो जाती हैं और गुरु मिल जाता है, तब ज्ञान की प्राप्ति होती है और वह अनुभव सम्पन्नता है। साधन सम्पन्न पहिले होना पड़ता है।

नवाँ समुल्लास

बन्दर वृति (चंचल वृति) की मुख्यता और उत्तमता

सुग्रीव ने राम की बातों को बड़े ध्यान से सुना। अन्त में कहने लगा– ''हम आपके सेवक और सच्चे भक्त हैं। अब तक समझते थे कि हमसे अधिक आपकी भक्ति किसी में नहीं है। अब आज बातों से जान पड़ा कि चंचल की उपेक्षा अज्ञानी में विशेष भक्ति है और उसका पद बड़ा है।''

राम बोले–''तुमने समझने में भूल की। इन तीनों में मुख्यता चंचल वृति ही है। यह न हो तो फिर कोई काम ही नहीं हो सकता। यह युक्ति को पाकर अज्ञानी और मूढ़ दोनों वृतियों को अपने वशीभूत करके ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक का पता लाती है और वे उसकी सहायक हो जाती हैं।''

सुग्रीव–''प्रभो! अभी आपने कहा कि इसके काम का मंडल छोटा है और यह विचला है और अब कहते हैं कि यह ऊपर–नीचे हर जगह में जा सकता है।''

राम–''हाँ! लेकिन यह बात उस समय के लिए भी जब इसने दोनों वृतियों को अपना साथी नहीं बनाया था और न उसकी एकाग्रता थी। एकाग्रता में तीनों मिल–जुल एक होकर रहते हैं उनको अलग कर दिखाना कठिन हो जाता है।''

सुग्रीव–''इसका उदाहरण?''

राम–''सोते समय अपनी मूढ़ वृत्ति को कहो कि ठीक बारह बजे रात को जगा देना और वह जगा देगी। जब इस प्रकार यह वशीभूत हो गई तो यह आप चंचल वृत्ति को चेतावनी दे देकर अज्ञानी वृति के वश में लाने का उपाय बना देगी पहिले ऐसा साधन होगा। फिर जब तीनों मिल कर एकाग्र हो गए तो राम ने वाले राम की सेना पूरी हो गई और त्रिकुटि (लंका) पर चढ़ाई करने की सूझी। यह साधारण बातों से छष्टाँत दिया गया। अब साधन , कर्म, क्रिया और व्यवहार का दृष्टान्त सुनो:–

हनुमान, बन्दर और मन की एक चंचल वृत्ति है। उसने जामवन्त की मूढ़ वृत्ति को साथ लिया। सीता की खोज के लिए निकले। सब व्याकुल हुए। जामवन्त ने हनुमान को चेतावनी दी। ''यह काम तुम ही को सौंपा गया है।'' हनुमान में उमँग उत्पन्न हुई। समुद्र को लांघा। अज्ञान वृत्ति विभीषण को साथ लिया। अब तीनों एकाग्र हैं और यह मिल–जुल कर अपना काम करेंगी।''

सुग्रीव– ''अच्छा समझा! अच्छा समझाया। समझाने की विधि अच्छी है। अब यह बताइये कि क्या यह वत्तियाँ एक–एक हैं या इनमें अनेकता भी है?''

राम–''मूढ़ वृत्ति एकाँगी होती है। वह अपने काम से सम्बन्ध रखती है। अज्ञान वृत्ति रक्षा का काम करती है। इसीलिए राक्षस कहलाती है। यह भी एकाँगी है। अब रह गई चंद वृत्ति, वह पाँच अंग वाली होती है और उनके नाम अहंकार, काम, क्रोध और लोभ, मोह है।''

सुग्रीव–''दृष्टान्त से समझाइए।''

राम –''हँसे''

अपनी बातें पूछते हो रूप अपना जानकर।
मानते मनवाते हो कहलाते भी मानकर॥
तुम में जो मद है इसी का नाम हनुमंत जान लो।
तुम में जो है काम सुग्रीव इसको अब पहचान लो॥
अंग देने वाला अंगद क्रोध ही का अंग है।
काम का साथी बना और काम के वह संग है॥
लोभी नल है जो इकट्ठा करता है सामिग्रो।
मोह है यह नील बन्धन में पड़ा है हर घड़ी॥

हे सुग्रीव! अलंकृत बन्दर रूपी चंचल वृत्ति के यह पाँच अंग हैं।

हनुमान – अहंकार।
सुग्रीव – काम।
अंगद – क्रोध।

नल – लोभ और

नील – मोह।

इतना समझा कर राम चुप हो गये।

सुग्रीव ने फिर पूछा – 'जो कुछ आपने कहा वह सब सच है, लेकिन यहाँ राक्षस दल भी है और रीछ दल भी है। क्या राक्षस और रीछ दल के वीर लड़ाके अज्ञानी और मूढ़ वृत्तियों के अनेक रूप नहीं कहे जा सकते हैं?'

राम– ''कहने को जो चाहो कहो लेकिन यह दोनों एक अंगी ही हैं। सबका अंग मिलाकर एक ही होता है। पाँच अंगी केवल चंचल वृति ही है।''

मुझे देखो! मेरी माता सतोगुणी कौशल्या। मैं राम उसका एक पुत्र हूँ। मेरी दूसरी सौतेली माता तमोगुणी कैकई। भरत उसके एक ही पुत्र हैं। मेरी तीसरी सौतेली माता रजोगुणी सुमित्रा इसके दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं।''

''बन्दर रजोगुणी हैं। उनमें पाँच मुख वृत्तियाँ हैं और भी हो सकती हैं। मुख्यता केवल पाँच की हैं। रीछ तमोगुणी, उसमें केवल एक वृत्ति है। राक्षस सतोगुणी, उसमें भी एक ही वृति है।''

काम का सारा भाग चंचल वृति पर है और यही कारण है कि मैंने तुम्हारे साथ मित्रता का नाता जोड़ा। तुम न मिलते तो न रीछ मेरे साथी होते न राक्षस। जो कुछ हुआ, होगा या हो रहा है, वह सब इसी चंचल वृति (बन्दर) का खेल होगा। और इसकी मुख्यता और उत्तमता है और मुझे तुम बन्दर सब से प्यारे हो।

सुग्रीव बहुत प्रसन्न हुये और हनुमान के साथ राम के चरणों में गिरे।

धन्य लीला आपकी है धन्य अद्‌भुत खेल है।
धन्य है यह मित्रता और धन्य ही यह मेल है॥

अब एक और रह गया।

राम– ''उसे भी कह डालो।''

सुग्रीव– ''हम सब आपके भक्त हैं। अब ऐसी शिक्षा दीजिये कि हम किस तरह आपकी सेवा करें कि हमारी भक्ति जल्द फलदायक हो।''

राम–''वह युक्ति हनुमान के नाम में पहिले ही से है। उन्होंने अपने मान का हनन कर दिया। तुम्हारा मान अपमान मेरे लिये हो। तुम्हारा क्रोध मेरे नाम पर हो। तुम्हारा लोभ और मोह भी मेरे नाम पर मेरे ही लिये हो। यह केवल वृति का उलट फेर है। यही भक्ति है और ऐसी भक्ति मुझे प्यारी लगती है।''

क्रमशः

●

॥ सूचना ॥

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab Natonal Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No.– 02060001000-57805, IFSC Code–PUNBoo20600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code–PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानियों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

परमसन्त हजूर परमदयाल जी महाराज

परम सुख ज्ञान का स्वरूप हो जाने में।

मासिक सत्संग **दिनाँक 14 मार्च, 1976**

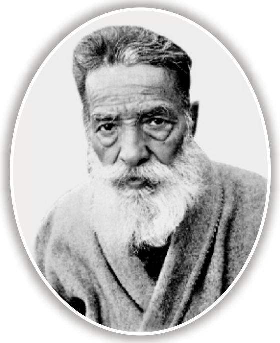

राधास्वामी :- ऐ मेरे बनाने वाले और संसार को पैदा करने वाले। बचपन से तेरी तलाश थी। इस तलाश के सिलसिले में मौज, हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लालजी महाराज के चरणों में ले गयी। उस पवित्र विभूति ने मुझे छाती से लगाया। उन्होंने मेरे अवगुण नहीं देखे। मैं उस मालिक को ढूँढता हुआ आ रहा हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। मैं सोचता हूँ कि इस को कैसे पूरा करूँ। उन्होंने मुझे कहा था कि तू फकीर बन। ऐ संसार वालो! मैं सत्य प्रिय व्यक्ति हूँ। मैं नाक-कटों में शामिल नहीं हुआ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे तीन कार्य बताये थे।

1. निर्बल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना।
2. जीवों को भवसागर से पार करना।
3. जगत कल्याण का कार्य करना।

पहला प्रश्न तो मैं अपने आप से करता हूँ कि क्यों फकीर! क्या तू भवसागर से पार हो गया? क्या तेरा कल्याण हो गया? क्या तेरी निबलता, अबलता और अज्ञानता मिट गई? मैं अपना क्रियात्मिक पक्ष वर्णन करता

हूँ। सुनो! इन सब से परे मैं एक ऐसी अवस्था में चला जाता हूँ। जहाँ न मैं है न तू है, न गुरु है और न चेला है, न राम है न रहीम है, न शरीर है न मन है। मगर है सही कुछ। मेरी पिछली आयु आ रही है। अब मैं उसी अवस्था की ओर जा रहा हूँ। ये मेरा कर्म भोग है और हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा है। अब मैं सोचता हूँ कि मैं किसी का कल्याण कैसे कर सकता हूँ। तुम लोग मेरे पास आते हो। बाहर जाता हूँ तो भी बहुत से लोग मुझे घेरे रहते हैं। मैं अपने आप को उस अवस्था में रखना चाहता हूँ जो एक संत या फकीर की होनी चाहिए। वो अवस्था क्या है?

निज चित सोधें मन परबोधें जीव दोष नहीं दृष्टि।
अपने भाव में बरतें निसदिन, करें दया की वृष्टि॥

ये फकीर के जीवन का परिणाम है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा था।

तू फकीर है मेरे प्यारे सुन फकीर की बानी।
साधू कहें फकीर को भाई साधु जग सुख दानी॥
पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी।
अवगुण त्यागो, गुन के ग्राहो, दया भाव चित धारी॥
निज जिच सोधें मन परबोधें जीव दोष नहिं दृष्टि।
अपने भाव में बरतें निस दिन, करें दया की वृष्टि॥

मैंने फकीर बनने के लिए सारी आयु खो दी मगर फकीर मुझे तुम लोगों ने बनाया। जबसे मुझे आप लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जगह-जगह और देश-विदेश में प्रकट होता है, उनके काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो मैं सोचने के लिए विवश हो गया कि मेरे अन्तर में भी जितने रूप-रंग, विचार, भाव और शक्लें पैदा होती हैं ये असल में हैं नहीं, ये Suggestions और Impression हैं जो पढ़कर, सुनकर, देखकर और छूकर या प्रारब्ध कर्म के अनुसार मेरे मस्तिष्क पर पड़े हुये हैं। यह उनकी छाया है। मैं मालिक को मिलने निकला था। अब

जब मैं साधन करता हूँ तो इन सब चीजों को छोड़ जाता हूँ। आगे हैं प्रकाश और शब्द। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा और फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। इसलिए मैं अपने कर्म भोगवश घसीटा जा रहा हूँ। प्रकृति मुझे किसी ओर घसीट कर ले जा रही है। जो लोग मालिक को मिलना चाहते हैं, उनके लिए मेरा क्या संदेश है? जो धर्मदास कहता है वही मेरा अनुभव है:-

कैसे मैं आरती करूँ तुम्हारी, महा मलिन प्रभु देह हमारी।
छूती से उपजे संसारा, में छूतिया गुन गाँऊ तुम्हारा॥

जो मेरा अनुभव है वही धर्मदास का था। क्या अनुभव निकला? कि हमारा मन और हमारा जीवन बाहर के संस्कारों से बनता है। सारा संसार Radiation से बनता है। हरेक चीज़ की Radiation दूसरी चीज़ों पर पड़ती है और हम पर भी पड़ती है। जब तक कोई आदमी इस Radiation खिंचाव और संस्कारों से परे नहीं जायेगा वो मालिक को नहीं मिल सकता। क्योंकि सूर्य का खिंचाव, पृथ्वी का खिंचाव और चाँद सितारों का खिंचाव हमारे शरीर और मन पर असर डालता है और दूसरे हमारे एक दूसरे की Radiation और संस्कार एक दूसरे पर पड़ते हैं। इसलिए धर्मदास ठीक कहता है कि हमारी देह मलिन है। विभिन्न प्रकार के संस्कारों के कारण कोई आदमी मालिक को कुछ समझता है कोई कुछ लेकिन वो तो मालिक नहीं है। जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता यदि लोग इसे मालिक का रूप समझते हैं तो वे भ्रम में है। इसलिए जब तक कोई आदमी अपने मन से या अपने विचार से मालिक को याद करता रहेगा वो मालिक को नहीं मिल सकता। जो रूप किसी के अन्तर प्रकट होता है वो मालिक नहीं है वो उसके संस्कारों, श्रद्धा, प्रेम और विश्वास का परिणाम है:-

झरना झरे दशों दिश द्वारे कैसे मैं आऊँ साहिब निकट तुम्हारे।

दस द्वारे क्या हैं ? पाँच कर्म इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ जब तक किसी की सुरत इन दस इन्द्रियों में है वह दस द्वारों में है इसी का नाम झरना है। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि दस द्वारों से आगे जाओ तब आगे सतगुरु मिलेगा। जब तक कोई आदमी दसवें द्वार से आगे नहीं जायेगा या महासुन्न से आगे नहीं जायेगा वह मालिक को नहीं पा सकता। न ही अपने आद घर की ओर जा सकता है। पुरुषोत्तमदास! बसरे-बगदाद में तुम मुझसे कहा करते थे कि कुछ बताओ। अब बता रहा हूँ कि जो आदमी मालिक को मिलना चाहता है। जब तक वह Radiation के चक्र से परे नहीं जायेगा अर्थात् पाँच कर्म इन्द्रियों और पाँच ज्ञान इन्द्रियों से परे नहीं जायेगा वह मालिक को नहीं पा सकता। यही सनातन धर्म कहता है और यही राधास्वामी मत कहता है:-

जो प्रभु देवो अग्र की देही तब हम होवें साहिब नाम सनेही।

धर्मदास ठीक कहता है। वह प्रार्थना करता है कि ऐ प्रभु! यदि आप मुझे अग्र की देही दें तो तब मैं मिल सकता हूँ। जब तक कोई आदमी प्रकाशमय या नूर रूप नहीं हो जाता वो न ही आगे जा सकता है और न ही मालिक को मिल सकता है। अग्र की देह का क्या अर्थ है? हमारे अन्तर नाना प्रकार की रोशनियाँ हैं। अग्र की देह है केवल निर्मल और सफेद रंग की रोशनी। क्योंकि अग्र की रोशनी सूक्ष्म पवित्र और बिल्कुल साफ होती है। सहस्र दल कमल में पीले रंग की रोशनी होती है। त्रिकुटी में लाल और सुन्न में चाँद की रोशनी जैसी सफेद रोशनी होती है। उसमें कुछ नीलापन होता है। लेकिन वह जो असल प्रकाश है वह केवल सफेद और निर्मल होता है। रोशनी रोशनी में अन्तर होता है। प्रकाश का साधन सब धर्मों में है हिन्दुओं में गायत्री मन्त्र और प्राणायाम् हैं। ये भी सावित्री अर्थात् प्रकाश का साधन हैं। इस लिए हिन्दुओं में बचपन से ही गायत्री मंत्र का साधन बताया जाता था कि तुम प्रकाश को पकड़ो। इसलिए यदि कोई मालिक को मिलना चाहता है तो उसको पहले प्रकाशमय होना चाहिये। इससे पहले

यदि किसी को कोई देवी-देवता, गुरु स्वरूप या कोई और दृश्य या कोई और रोशनी नज़र आती है, तो वह रूप उसके अपने बनाये हुए हैं और वे रोशनी भी प्राकृतिक है।

ये भेद मैं इसलिए खोल रहा हूँ कि इस समय देश में अनेक प्रकार के धर्म, पंथ और गद्दियाँ हैं। इन गद्दियों और पंथों के कारण और अज्ञान के कारण मानव-जाति आपस में बँट गई और एक दूसरे से अपने आपको जुदा समझते हैं और आपस में द्वेष भाव रखते हैं। हर एक गद्दी वाला अपने आपको सच्चा और दूसरों को झूठा या ग़लत समझता है। मेरे जिम्मे हजूर दाता दयाल जी महाराज ने ड्यूटी लगा रखी है-

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही॥

मैंने जगत कल्याण के विचार से इस भेद को खोला है ताकि समझदार लोग मालिक के नाम पर आपस में लड़ाई झगड़े न करें और मानव जाति में एकता हो जाये, एकता पैदा हो। मालिक एक है। मालिक कहाँ है? प्रकाश अर्थात् ब्रह्म से परे वहाँ तक जाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? वही करना चाहिए जो धर्मदास कहता है। कोई राधास्वामी नाम को नाम समझता है, कोई पाँच नाम को नाम समझता है, कोई राम नाम को, कोई अल्लाह को और कोई वाहेगुरु को नाम समझता है। ये सब भूले हुये हैं। नाम उस समय मिलता है जब आदमी अपने आपको पहले प्रकाशमय बनाये सफेद रंग के प्रकाश में जाये, फिर उससे आगे नाम की प्राप्ति होती है। स्वामी जी महाराज ने फरमाया है -

नाम रहे चौथे पद माहीं, ये ढूंढें तरलोकी माहिं।

यह जुबान से किसी नाम का जाप करना, राधास्वामी नाम का, राम राम का, अल्लाह का या वाहेगुरु का। यह ग़लत नहीं है। ये वर्णात्मिक नाम मन को इकट्ठा करने के लिए हैं। जब तक किसी का मन इकट्ठा नहीं होगा उसके अन्तर प्रकाश पैदा नहीं होगा। शरीर, मन, प्रकाश और शब्द ये

हमारी देह हैं। इन में जो असल में हम हैं वह रहते हैं। इसलिए मन को इक्कट्ठा करने के लिए चाहे राधास्वामी नाम से करो, चाहे राम-राम से करो, चाहे पाँच नाम से करो, अल्लाहू से करो, चाहे वाहेगुरु से करो और चाहे एक-दो-तीन-चार-पाँच गिनती करके करो। भाव तो मन को इक्कट्ठा करने से है। मैं सच्चाई वर्णन कर रहा हूँ। एक गद्दीवाला दूसरी गद्दियों का खण्डन करता है, ये सब कोरे हैं। किसी को सार का पता नहीं और कोई सच्चाई नहीं बताता। सब हमको अपने पंथ और अपने डेरों में फँसाते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि मानव-जाति आपस में बँट गई। सन्तमत आया था संसार में एकता पैदा करने के लिए मगर यह भी बँट गया, जगह-जगह गद्दियाँ बन गई। इसका परिणाम? आपस में द्वेष आ गया। एक गुरु के चोला छोड़ने के बाद उसके कई-कई चेले अपनी-अपनी गद्दियाँ बनाकर एक दूसरे का खण्डन करते हैं।

दाता! आपने काम दिया था। पता नहीं मैंने जो कुछ किया है और कर रहा हूँ, यह ठीक है या ग़लत है, मगर मेरी नीयत साफ है। आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ और अपना कर्त्तव्य पूरा करता हूँ कोई सुने या न सुने।

सनातन धर्म के अनुसार और धर्मदास के कहने के अनुसार और अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कहता हूँ कि ऐ मानव! तू नाम के पीछे दौड़ता है लेकिन नाम कब मिलता है? **नाम प्रकाश से आगे मिलता है। प्रकाश तक पहुँचने के लिए जो साधन है जब तक कोई आदमी वह साधन नहीं करता वह प्रकाशमय नहीं हो सकता।** वे साधन क्या है? अभ्यास के समय जो विभिन्न प्रकार के रंगरूप शक्लें और विचार तुम्हारे सामने आते हैं वे तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़े हुये जो संस्कार होते हैं, उनको दूर करने के लिए अपने अन्तर पहले किसी सरगुण स्वरुप का प्रेम पैदा करो। माँ-बाप की सेवा का या गुरु की सेवा का प्रेम पैदा करो। पब्लिक की भलाई का प्रेम पैदा करो। जब एक का विचार मस्तिष्क में बैठ जायेगा तो बाकी सब विचार समाप्त हो जायेंगे।

इसलिए नाम को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले किसी वस्तु या व्यक्ति से प्रेम है। यह इश्के-मजाज़ी है। अर्थात् प्रकृति की किसी वस्तु में लय हो जाना इश्के-मजाज़ी है। संसार केवल स्त्री के प्रेम को ही इश्के मजाज़ी समझता है। राम या कृष्ण, गुरु या देवी-देवता एक की पूजा करोगे तो तुम्हारा मन अनेक संकल्पों को छोड़कर एक खव्त में आ जायेगा और एक अवस्था में ठहर जायेगा और फिर तुमको यदि मालिक को मिलने की खोज है तो फिर प्रकाश से आगे तुमको नाम की प्राप्ति होगी। आजकल लोग एक-दो किताबें पढ़कर या तो शेयर लिखना आरम्भ कर देते हैं या किताबें लिखना आरम्भ कर देते हैं। उनको नाम की प्राप्ति नहीं होती। नाम की प्राप्ति अमल करने से और साधन अभ्यास से होती है। मेरे पास लोग आते हैं। मैंने कभी किसी से यह नहीं कहा कि तू अपने गुरु का ध्यान छोड़ दे। सरगुण स्वरुप का ध्यान आवश्यक है लेकिन केवल सरगुण तक ही सीमित रहने से तुम भवसागर से पार नहीं जा सकते। जो लोग सारा जीवन हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज का, हजूर दाता दयाल जी महाराज का, बाबे फकीर का या कृष्णा का ही ध्यान करते-करते मर गये उनको नाम की प्राप्ति नहीं हुई। नाम की प्राप्ति प्रकाश से आगे है। हजूर महाराज ने अपनी प्रेम-बाणी में लिखा है कि मरते समय जीव के सामने फिल्म चलती है। जिस गुरु से नाम लिया होता है वह भी आ जाता है और शब्द भी सुनाई देता है। उस जीव को भी कुछ समय के लिए ऊपर के लोकों में रहना पड़ेगा, वहाँ उसको गुरु का दर्शन और सत्संग भी मिलता रहेगा। फिर जब कोई समय का संत सत्गुरु इस संसार में आयेगा तो वह जीव भी जन्म लेकर उस संत सत्गुरु के सम्पर्क में आयेगा और बाकी की कमाई पूरी करके अपने आदि घर वापिस पहुँच जायेगा।

मैं ऊँचा बोल रहा हूँ। यह मेरे वश की बात नहीं है जिस अवस्था में कोई होता है वह उसी मंजिल की बात करता है। नाम की प्राप्ति के लिए

जल्दी मत करो। वह व्यक्ति कहता है कि मैं जब अभ्यास करने बैठता हूँ तो शरीर पीड़ा करने लग जाता है और सुन्न हो जाता है। अरे भाई ! जिसको शरीर से प्यार है उसके लिए नाम नहीं है। प्रारम्भ में तो शरीर सुन्न होगा ही।

दाता ! यदि मैं भूल में हूँ तो मेरा दोष क्षमा होना चाहिए क्योंकि मैंने अपनी नीयत को साफ रखकर काम किया है और अपने निजी स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया। लेकिन मेरे स्पष्ट वर्णन से हानि भी है। एक तो मुझे धन नहीं आता और दूसरे जीवों का जो अन्ध-विश्वास है वह टूटता है। लेकिन इसने तो टूटना ही है। आज नहीं तो कल या कल नहीं तो दो दिन बाद। जो कुछ मेरे पास है या मैं देना चाहता हूँ उसको तो लेने के लिए कोई आता नहीं, जो भी आता है अपने सांसारिक कामों के लिए आता है। किसी के बेटा नहीं है, किसी का विवाह नहीं हुआ है, कोई बीमार है और किसी को मुकद्दमा है। यह तो संसार का चक्कर है। नाम वालों का इन चीज़ों से क्या सम्बन्ध ? कर्म का भोग सबको भोगना पड़ता है। बड़े-बड़े सन्त बीमार हुये। उनके लड़के मरे। जब वह भी न बच सके तो फिर हमें करना क्या है? जब तक शरीर में हो और मन में हो अपनी नीयत को साफ रखकर काम करो। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी की हानि मत करो। जब तुम्हारी नीयत साफ होगी तो आगे के लिए तुम्हारे कर्म नहीं बनेंगे, लेकिन जो पिछले किये हुये हैं वे तो अवश्य भोगने पड़ेंगे। मैं कई बार सोचा करता हूँ कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी। मैं क्या शिक्षा बदलूँ? जब मैं देखता हूँ कि पिछले कर्म सबको भोगने पड़ते हैं तो फिर मैं यही कहता हूँ कि ऐ मानव ! पिछले कर्म खुशी से भोग और आगे कोई बुरा कर्म न कर ताकि तुम्हारे बुरे कर्म न बनें। यह संसार में रहने का ढँग है और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने भी निम्नलिखित शब्द में यही फरमाया है :-

ऐ मेरे प्यारे भाई देखो सम्भल कर चलना।
खोटे कर्म न करना, खोटी न बात कहना।
दुख दोगे दुख मिलेगा सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को फिर गम पड़ेगा सहना।
कौल और खियाल करतब दरया से हैं मुशाबा।
तुम देखना न इसकी लहरों में पड़के बहना।
मन इन्द्रियों पे भाई ज़ब्त रखना तुम बराबर।
ज़ाबत बने रहोगे खुशहाल होके रहना।
अपनी निशिस्त रखना तुम आत्मा पे हरदम।
आत्म स्वरुप रहकर संसार में विचरना॥

आत्म स्वरुप होना क्या है? अपने अन्तर में प्रकाशमय होना। परमात्मा प्रकाश स्वरुप है और आत्मा उसकी अंश है। जब आत्मा शरीर में आती है तो मन, चित्त, बुद्ध, अहंकार पैदा हो जाते हैं। कोई आदमी चाहे लाख अभ्यास करे लेकिन यदि उसका मन शुद्ध नहीं है तो वह प्रकाश को पकड़ नहीं सकता और यदि वह बलपूर्वक पकड़ेगा भी तो उसकी वासनायें बढ़ जायेंगी। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। किस को नाम दूँ? नाम का हरेक आदमी अधिकारी नहीं हैं। तुम्हारे मन में बड़ी भारी शक्ति है। जिस विचार को लेकर सुमिरन ध्यान करोगे प्रकृति के नियम अनुसार तुम्हारी वह आशा पूरी होनी चाहिए। तुमने देखा होगा Mesmerism वाले दीवार पर एक काला निशान लगाकर उसकी ओर प्रतिदिन टिकटिकी लगाकर देखते हैं और चाहते हैं कि यह फूल बन जाये। जब उनको यह निशान फल की शक्ल में दिखाई देने लग जाता है तो उस समय उनमें सिद्धी शक्ति आ जाती है। ऐसे ही सुमिरन ध्यान और भजन से जब अभ्यासी की Will Power बढ़ जाती है तो यदि उसकी वासनायें गन्दी हैं तो वे बुरी वासनायें उससे बुरा काम अवश्य करायेंगी और उसकी हानि हो जायेगी। मैं इसी लिए सदा सत्संग कराया करता हूँ ताकि जीवों को समझ आये और उनको Line of Action मिल जाये। यूँ तो मेरे वचन ही नामदान हैं।

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन नाम हराम है, जा पूछो वेद पुरान।

गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। यदि समझ के बिना नाम जपोगे तो नाम तुमको खा जायेगा। आजकल गुरुओं ने अपने नाम, अपने मान और अपने डेरों के लिए जो भी आया उसको नाम दे दिया। यह नाम अपने डेरे अपने नाम और अपने चेले बनाने के लिए दिया गया है। प्रकाश को प्राप्त करने के लिए अपने विचारों को शुद्ध रखो, कल्याणकारी विचार रखो और अच्छे विचार रखो। आज जब मैं मंदिर में आया तो विचार आया कि फकीरा तूने यह क्या मकड़ी का जाला बना लिया है। मैं स्वयं इस काम से सुखी नहीं हूँ। क्यों? लोग आते हैं किसी का कोई झगड़ा है, किसी का कोई फसाद है, एक–दूसरे के विरुद्ध कहते हैं। जो सत्संगी हो के इन बातों को भूल नहीं सकता वह काहे का सत्संगी है।

सेवक सेवा में रहे, कभी न मीड़े अंग।
दुख सुख सिर पर सहे, कभी न हो चित्त भंग।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने यह काम करने की मुझे आज्ञा दी थी। मैं हूँ सेवक। दुख और सुख अपने सिर पर सहता हूँ और निष्कपट होके अपना कर्त्तव्य करता हूँ, जिसकी इच्छा करे मेरे सत्संग में आए जिसकी इच्छा न करे, न आए। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे फरमाया था।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी है निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।

तुम लोग आये हो अपना जीवन बनाओ। यदि मन गन्दा है तो तुम प्रकाशमय नहीं हो सकते। यदि बलपूर्वक प्रकाश प्रकट करोगे तो हानि उठाओगे जैसे तांत्रिक विद्या वाले साधन करने के बाद दूसरों को हानि पहुँचाते हैं।

मलियागिर पर बसे भबंगा, विष अमृत रहे एको संगा।
तिनका तोड़ दियो परवाना, तब हम पाय साहिब पद निर्वाना॥

मलियागिर चन्दन है। इसके साथ साँप लिपटे रहते हैं ऐसे ही हमारे शरीर और मन में और हमारे जीवन में नेकी भी है और बदी भी है। इस नेकी और बदी से कोई भी न बच सका। धर्मदास जी कहते हैं कि **''तिनका तोड़ दिया परवाना''।** परवाना कहते है आज्ञा को। अर्थात् गुरु ने मुझे आज्ञा दी कि ऐ फकीर।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बिगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई नहीं यगाना।

गुरु ने सत्संग में मुझे समझ दी तो मुझे ज्ञान हो गया कि मैं न शरीर हूँ और न मन हूँ। मेरा घर प्रकाश से आगे है। शरीर में तो नेकी भी है और बदी भी है। यह त्रिगुणात्मिक जगत् है। इसीलिए हिन्दुओं ने, मुसलमानों ने और संतों ने प्रकाशमय होने के बारे में कहा। हिन्दू यज्ञ करते हैं। इसका क्या भाव है? अपने अन्तर ज्योति जलाकर अपने मन के सब विचारों को उसमें जला दो। लेकिन अब अन्तरमुखी तो कोई होता नहीं बाहर में ही आग जलाकर उसमें आहुतियाँ डालते रहते हैं। पदनिर्वाण का साधन प्रकाश से आगे है। आगे भी अभ्यास के दर्जे हैं। जिस प्रकार शरीर के चक्कर और मन के चक्कर हैं ऐसे ही आगे भी चक्कर हैं। कबीर साहिब ने तीन शब्दों में इनका वर्णन किया है :–

1. कर नैनों दीदार, महल में प्यारा है।
2. कर नैनों दीदार, यह पिण्ड से न्यारा है।
3. तू सुरत नैन निहार, यह अण्ड के पारा है।

अर्थात् वह मन से परे है। स्वामी जी महाराज ने अपने शब्दों में वर्णन किया है और मैंने भी यही कहा। अन्तर केवल शब्दों का है लेकिन भाव एक है।

धनी धर्मदास कबीर बल गाजे, गुरु प्रताप आरती साजे।

धर्मदास जी कहते हैं कि मैं कबीर साहिब जी के बल से बोलता हूँ ऐसे ही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। मैं भी उनकी आज्ञा से यह काम कर रहा हूँ। इसलिए मेरा किसी पर उपकार नहीं है मेरा तो कर्त्तव्य है। कई बार मुझे यह विचार आता है कि लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनके अन्तर राम रूप प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है। यह क्या मामला है? मैं बाहर जाता हूँ। लोग मेरे नाम के करिश्मे बताते हैं तो मेरे पाँव से मिट्टी निकल जाती है। एक आदमी ने मुझे बताया कि मैं बीमार था। डॉक्टरों के पास फिरता रहा लेकिन कोई आराम न आया। फिर मैं धाम पर गया वहाँ मेरे अन्तर आपका रूप प्रकट हुआ और कहा कि चने खाया करो, तुम ठीक हो जायोगे। मैंने चने खाने आरम्भ कर दिये। अब मुझे 6 महीने से बिल्कुल आराम है। अब मैं सोचता हूँ कि मैं तो गया नहीं और न ही मुझे कोई पता है तो फिर कौन गया? सब का अपना विश्वास और श्रद्धा है, मैं नहीं जाता। अब वैसाखी के बाद अमेरिका जा रहा हूँ। पिछली बार जब अमेरिका गया था तो प्रैज़िडेन्ट निक्सन का बोडीगार्ड और दो तीन डाक्टर काफी दूर से हवाई जहाज द्वारा मेरे पास आये और कहने लगे कि आपका रूप हमारे अन्तर प्रकट होता है और हमारे कई काम कर जाता है लेकिन मैंने उनसे साफ कह दिया कि मैं नहीं आता। सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। वहाँ मेरे सत्संग में एक आदमी की समाधि लग गई। दूसरे दिन उसने सारा समाचार लिखकर हमें दे दिया। उसने लिखा कि आपका रूप मुझे वहाँ ले गया, यह कर दिया और वह कर दिया।

ऐसी घटनायें सुन कर मैं सदा सोचा करता हूँ कि फकीर! ऐसी बातों को सुनकर यदि तू लोगों को सच्चाई नहीं बतायेगा तो लोग तुमको धन देंगे, मान–प्रतिष्ठा करेंगे। यह धन, मान, प्रतिष्ठा तुमको खा जायेगी। तभी तो मैं कहता हूँ कि ऐ वर्तमान महात्माओं और गुरुओं! गुरु पदवी पर आने

से जो अनुभव मुझे हुआ है यदि सचमुच तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होता है तो यदि तुम संसार को सच्चाई नहीं बताते और लोगों से गलत ढंग से और उनको अज्ञान में रखकर धन, मान, प्रतिष्ठा लेते हो तो तुम संसार को लूटते हो और भूल में हो। इसीलिए मैं फकीर के चोले में अवतार लेकर अनामी धाम से संसार को यह बताने के लिए आया हूँ कि ऐ मानव जाति! होश कर। तुमको अज्ञान में रखकर लूटा जा रहा है। क्या देवी और क्या देवता, किसी को कुछ नहीं देता। कुछ दिन हुये आप लोगों ने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि दो भाई ज्वालाजी, हिमाचल प्रदेश गये। देवी की मूर्ति के सामने बड़े भाई ने छोटे भाई का सिर काट दिया। उसने बताया कि देवी ने मुझे तीन बलि देने को कहा है। यह अज्ञानता है। न कोई देवी बाहर से किसी को कुछ कहने के लिए आती है और न कोई देवता। न बाबा फकीर किसी के अन्तर कुछ कहने के लिए जाता है और न हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज। जिस प्रकार के संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं वही शक्ल बनाकर आदमी के सामने आते हैं। क्योंकि जीव निर्बल, अबल और अज्ञानी है, इसलिए मैं आया हूँ सत्यता वर्णन करने के लिए। जो कुछ मैं तुमसे कहता हूँ यही मेरा नाम दान है जो समझ सकते हैं वे समझें। कल मैंने सत्संग में बताया था कि स्वामी जी महाराज ने चैत्र महीने का वर्णन करते हुए फरमाया है।

सतगुरु सन्त दया करी, भेद बताया गूढ़।
अब सुन जीवन न चेतई, तो जानो अति मूढ़।

मैंने अपने-आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है। कई बार सोचता हूँ कि फकीर! एक दिन मर जाना है, क्या तू लोगों को धोखा तो नहीं देता? नहीं। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान और सच्ची समझ का और वही मैं संसार को देता हूँ। स्वामी जी कहते हैं कि यदि अब भी किसी को समझ नहीं आई तो वह मूढ़ है। मैं कई बार अपने आपसे यह प्रश्न भी किया करता हूँ कि तुम्हें लोगों को उपदेश करने का क्या अधिकार है? कोई नहीं। क्योंकि हजूर

दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर निबल अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना और जीवों को भवसागर से पार जाने के लिए उनकी सहायता करना और जगत् कल्याण का काम करना। इसलिए मैंने जो स्वयं अनुभव किया है वह लोगों को बताता रहता हूँ। यदि मान लो कि यह ग़लत है तो मैं दोषी नहीं हूँ क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे इस काम को करने की आज्ञा दी थी और फिर जब मैं हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास 1942 में गया था तो उन्होंने फरमाया था कि फकीर! मुझसे सच्चाई वर्णन नहीं हो सकी क्योंकि जीव अधिकारी नहीं। तुम निर्भय होके काम करे जाओ मैं तुम्हारा संरक्षक रहूँगा। जो कुछ मैंने जीवन में समझा उसकी पुष्टि वाणी करती है। आप लोग आ जाते हैं। जहाँ तक हो सके अपनी नीयत को साफ रखो। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से हेरा-फेरी मत करो। धोखा मत करो। यही मैंने सारा जीवन किया है।

मैं अपना कर्म भोगता हूँ। मैंने Free Eye Hospital बनाया। मन्दिर में जो रुपया आता है उसके लिए यह नियम है कि उसको उचित ढंग से एक उचित सीमा तक खर्च किया जाये। हस्पताल तो मैंने खोल दिया लेकिन इसका खर्च बहुत है। यद्यपि बहुत बड़े-बड़े और धनी आदमी मेरे जानकार हैं लेकिन मैं किसी को कहना नहीं चाहता क्योंकि मुझे माँगने की आदत नहीं है। यदि चलेगा तो चलाऊँगा वरना बन्द कर दूँगा। यदि खुशी से कोई देना चाहता है तो बड़ी खुशी से दे।

निज चित सोधें मन परवाधें, जीव दोष नहिं दृष्टि।
अपने भाव में वरते निस दिन, करे दया की वृष्टि॥

मुझे अपने भाव में आपने पहुँचाया। अब वहाँ रहने का यत्न करता हूँ और चाहता हूँ कि जो दुखी मेरे पास आयें वे सुखी हो जायें। मैं केवल यही कुछ कर सकता हूँ। हो सकता है कि मेरी शुभ भावना लोगों की सहायता करती हो लेकिन मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। यदि ये बड़े-बड़े महात्मा

भी सचमुच नहीं जाते थे या मौजूदा महात्मा भी नहीं जाते हैं और उन्होंने परदा रखा और लोगों को अज्ञान में रखकर उनसे झूठी मान–प्रतिष्ठा और धन लिए हैं तो तुम तो कहोगे कि वे सतलोक गये मगर मैं कहना नहीं चाहता। क्या कहूँ? केवल इतना ही कहता हूँ कि उन्होंने संसार को धोखा दिया है। यह धोखा नहीं तो और क्या है? इस सच्चाई का खुले शब्दों में पब्लिक में न स्वामी जी महाराज ने कहा और न कबीर साहिब ने कहा है। कबीर साहिब ने धर्मदास को यह भेद बताया मगर साथ ही यह कह दिया–

संत बिना कोई भेद न जाने, वो तोहे कहे अलग में।

उन्होंने क्यों परदा रखा? उस समय विदेशी शासन था। कबीर साहिब ने एक शब्द में लिखा है–

साँच कहूँ तो मारसी, यह तुरकानी जोर।
बात कहूँ परलोक की, कर गह पकड़े चोर॥

पिछला समय और था। अब हमारा राज है। इसलिए इस परदे को जो पिछले सन्तों ने रखा अब खोलने की आवश्यकता है ताकि भारत वर्ष में धार्मिक और पंथिक एकता पैदा हो।

सबको राधास्वामी

परमसन्त हज़ूर परमदयाल जी महाराज
सुनो मेरी विनती गुरु दाता।

दिनाँक 10 जुलाई, 1976

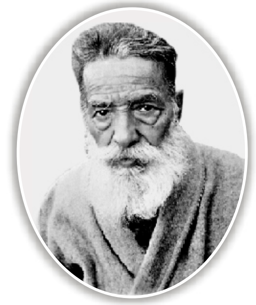

सुनो मेरी विनती गुरु दाता।

तुम तो आये जीव उदान, दया क्षमा के काजा।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा।

मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा दम्भी मानी गुमानी।
दुखी जानकर चरन लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी।

दुख कलेश ने चहुँ दिस घरा, मुझसा दुखी न कोई।
मुझे तार लो जब मैं जानूँ, पतित अधम गति सोई।

भलों की तुम नहीं तारन आये, तुम्हें बुरे है प्यारे।
इनकी जाल तुम्हारे हाथ, तुम इनके रखवारे।

राधास्वामी दीन दयाला, दीनन के हितकारी।
बाँह गहो दुख मेटो काटो, काल का बन्धन भारी।

राधास्वामी! आप गुरु पूर्णिमा के सिलसिले में आये हैं। यह आपने भी सुना और मैंने भी। मेरा अपना जीवन मेरे सामने है। मैंने छोटी आयु में कुछ गलतियाँ की, उदाहरण के रूप में, छः महीने माँस खाया, तीन बार शराब पी और एक बार वेश्या के पास गया। इसके सिवाय यदि कोई पाप मैंने किया होगा तो वह मुझे याद नहीं। ये पाप मैंने किये।

इनके कारण मेरा मन दुखी रहता था। इसलिए मैं राम को मिलने निकला था ताकि मेरे ये पाप धुल जायें। इस सिलसिले में मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई और उन्होंने यह गुरुमत मेरे हवाले किया उन्होंने मेरे जिम्मे कर्त्तव्य लगाया था कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। सन्तमत की वाणियाँ मैंने पढ़ी इनमें जो सबका खण्डन किया हुआ है उसको मेरी आत्मा सहन नहीं करती थी और साथ ही हजूर दाता दयाल जी महाराज से मेरा विश्वास भी नहीं टूटता था। इसलिए मैं उनको छोड़ नहीं सकता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि मैं सच्चा होकर इस मार्ग पर चलूँगा और गुरुमत से जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊँगा अब मैंने यह शब्द सुना। यह जो जीव पुकार करता है और उसके अन्तर जो तड़प है और यह जीव जो अपने अन्तर में निर्बलता महसूस करता है क्या यह निर्बलता दूर हो सकती है? यह मेरे अन्तर में एक प्रश्न है जो मैं अपने ही आपसे पूछता हूँ।

सुनो मेरी विनती गुरु दाता।
तुम तो आये जीव उबारन, दया क्षमा के काजा।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा।

अपनी आत्मा से कहता हूँ कि ऐ फकीर! तूने अपने अहंकार में आकर या गुरु आज्ञा वश और या अपना कर्म भोगने के लिए इस संसार में अपने-आपको समय का सन्त सत्गुरु कहकर प्रकट किया है। अब तू बता कि ऐसे जीवों को जो इस प्रकार के भाव रखते हैं क्या तू उभार सकता है? ऐ मेरी आत्मा! तू सोच! मैं इन जीवों को कैसे उभार सकता हूँ मैं तो स्वयं इस प्रकार के भाव रखने वाला था। मैं प्रार्थना किया करता था और अब भी करता हूँ। अब भी जब गुरु ज्ञान को भूल जाता हूँ तो

दुखी हो जाता हूँ। वह गुरु ज्ञान क्या है? हो सकता है जो गुरु ज्ञान मैंने समझा है वह गलत हो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है।

मैं अमरीका गया। अढ़ाई महीने के बाद यहाँ वापिस आया पता लगा कि मेरे मित्र श्री मंगल सैन, जो कुछ साल पहले चोला छोड़ गये थे, की स्त्री का देहान्त हो गया। सन्त सेवासिंह दिल्ली वाले मेरे बड़े प्रेमी थे, वह चोला छोड़ गये। ठाकुर शंकरसिंह जी सैक्रेट्री राधास्वामी सत्संग हनमकुण्डा भी पूरे हो गये और श्री देवी चरण मित्तल सम्पादक ''मनुष्य बनो'' भी इस संसार से चल बसे। मैं जब अमरीका से दिल्ली आया मुझे देवी चरण मित्तल के लड़के ने बताया कि मरने से बारह दिन पहले वह मेरे फोटो को देखते रहते और प्रार्थना किया करते थे। आखिरी दो दिन जब उनकी जुबान भी बन्द हो गई थी फिर भी वह अन्तिम समय तक फोटो को देखते रहे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि जब वह मेरी फोटो को देखता था और प्रार्थना करता था और या जब वह मर गया तो क्या तुमको अमरीका में पता था कि वह तेरी फोटो को देखता है और प्रार्थना करता है और क्या तुमको पता था कि वह मर गया है? नहीं। ऐसे ही कई और आदमी है जो यह कहते हैं कि वे मेरा ध्यान करते हैं और मुझे याद करते हैं और मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मुझे कुछ पता नहीं होता। इस एक बात ने मुझ पर गुरुमत की बड़ाई प्रकट की।

सुनो मेरी विनती गुरु दाता।
तुम तो आये जीवन उबारन, दया क्षमा के काजा।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा।

मैंने अपने-आपको सन्त सत्गुरु कहा है। सोचता हूँ कि क्या तुम किसी को उभार सकते हो? यदि उभार सकते हो तो कैसे? उभरना क्या है? एक आदमी किसी विचार में डूबा हुआ है या किसी विचार के साथ

बन्धा हुआ है उसको उसकी असलियत बताकर उस विचार से जुदा कर देना उभारना है। सब लोग अपने मन के चक्कर में फँसे हुये है। मन से ही दुखी होते हैं, मन से ही सुखी होते हैं। मन से ही हाय-हाय करते हैं और मन से ही आज़ाद होते हैं। श्री देवी चरण मित्तल मर गया। वह मुझे याद करता था। लेकिन मुझे कुछ पता नहीं। सम्भव है कि उसको शान्ति मिलती हो लेकिन मुझे कोई पता नहीं कि वह कहाँ गया? मैंनै यह काम क्यों किया? इस समय गुरुमत या राधास्वामीमत से गुरु लोग यह विचार देते हैं कि नाम ले लो, तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आयेगा और तुमको सतलोक ले जायेगा। यह एक ऐसा धोखा है और फरेब है कि जीव बेचारे इस धोखे में आकर लूटे जा रहे हैं। गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। आप लोग गुरु-पूर्णिमा पर आये हैं। मैं हूँ समय का सन्त सत्गुरु। अपना कर्त्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूँ, तुम्हारी समझ में बात आये या न आये मैं इसकी परवाह नहीं करता। जो कुछ भी अच्छा या बुरा विचार या संकल्प किसी के अन्तर फुरता है वह तो उसके मस्तिष्क पर पड़ा हुआ संस्कार है और उस आदमी की सुरत उसमें फँस जाती है। इसलिए गुरु वह है जो आदमी की सुरत को मन के चक्कर से निकाल दे। जब तक कोई आदमी मन के चक्कर में है वह दुख-सुख, हर्ष और शोक से बच नहीं सकता। मैं अपनी आत्मा को साफ रखकर इस संसार से जाना चाहता हूँ ताकि मेरी आत्मा पर धोखे या फरेब का बोझ न रहे।

मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी मानी गुमानी।

यह दुष्टपना मन का काम है। मौज मुझे सन्तमत में ले आई जहाँ सबका खण्डन है। यह भी नहीं पहुँचा, वह भी नहीं पहुँचा और संसार को पैदा करने वाला जालिम है। मैं श्रीराम और श्रीकृष्ण को मानने वाला था। इस मत की समझ नहीं आती थी, तो हजूर दाता दयाल जी महाराज को तंग किया करता था कि मुझे वह बात बताओ जो तुम्हारे मत में है।

अब सच्चाई यह है कि जब तक कोई मन में है वह लाख यत्न करे वह नेकी, बदी, पाप, पुण्य और दुख-सुख से बच नहीं सकता क्योंकि मन का काम ही यही है। मन से परे जाने के लिए नाम है। कोई राधास्वामी नाम जपता है, कोई पाँच नाम जपता है, कोई राम नाम जपता है, कोई वाहेगुरु नाम जपता है और कोई अल्लाहू जपता है। जब तक कोई जपता है वह नाम से दूर है। इसलिए यह असली नाम नहीं है। असली नाम क्या है ?

नाम रहे चौथे पद माहीं, ये ढूढें तरलोकी माहीं।

शरीर मन और प्रकाश से परे नाम है। हम लोग आपस में नाम की असलियत को न समझ कर लड़ कर मर गये। कोई कहता है राधास्वामी नाम बड़ा है और कोई कहता है कि सतनाम बड़ा है। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। नाम तो एक अवस्था है। उसमें बड़ाई और छुटाई कैसी? जब तक कोई आदमी मन से ऊपर नहीं जाता वह नाम में नहीं जा सकता। मैं मन से नहीं निकल सकता था। केवल इस एक विचार से कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, दवाईयाँ बता जाता है, पुत्र दे जाता है और कई चमत्कार कर जाता है। लेकिन मैं नहीं होता तो तुझे समझ आ गई कि ये जो रूपरंग अन्तर में प्रकट होते हैं ये केवल मस्तिष्क पर पड़े हुये संस्कार है और इनकी असलियत कुछ नहीं तो मैं मन को छोड़कर आगे जाने के लिए विवश हो गया। अमरीका में भी बहुत से लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनके काम हो जाते हैं लेकिन मुझे कोई पता नहीं। क्योंकि मेरा कर्त्तव्य है इसलिए मैं यह काम करता हूँ। अब 90 साल की आयु है लेकिन गुरु आज्ञावश इस इस आयु में भी देश-विदेश धक्के खाता हूँ। मौज! कल गुरु पूर्णिमा है। गुरु की पूजा धन देना नहीं है। यह लेना-देना तो संसार का व्यवहार है। यदि रुपये देने से यह वस्तु मिल जाती तो बड़े-बड़े सेठ सब पार हो जाते। लेने-देने का

सम्बन्ध मन से है। जो दिया हुआ है वह मिलता है। मैं लेने–देने के विरुद्ध नहीं लेकिन इस से यदि तुम यह चाहो कि सदा के लिए चक्कर से निकल जाओ तो यह असम्भव है।

आप लोग आये हैं। मैं हूँ समय का सन्त सत्गुरु और अपना कर्त्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूँ। कहना चाहता हूँ कि ऐ मानव! तू मन के चक्कर से निकल। मैं भी जब गुरु ज्ञान को भूल जाता हूँ तो मन के चक्कर में आ जाता हूँ लेकिन फिर सम्भल जाता हूँ। तो फिर गुरु क्या करता है? गुरु नाम देता है। इन गुरुओं ने लोगों को यह विचार दिया है कि नाम ले लो तुम्हारे अन्त समय पर तुमको गुरु ले जायेगा। यह बिल्कुल धोखा है। मैं किसी को नाम नहीं देता। मेरा नाम तो चौथे पद का है और उसको वह लेगा जिसका समय आ गया है। अब मैं (''क, ख, ग'') नहीं पढ़ा सकता। मैंने नाम से क्या लेना है? मैं तो वह नाम देता हूँ जिससे आदमी मन के चक्कर से निकल जाये।

राधा स्वामी दीन दयाला, दीनन के हितकारी।
बाँह गहो दुख मेटो काटो, काल का बन्धन भारी।

वह कौन सा दुख है जिसको गुरु ने काटना है। मैंने इन सन्तों और गुरुओं के जीवन के हालात पढ़े और देखे। सिवाय कुछ एक के सबने बीमारियों से घोर कष्ट उठाया और कुछ एक का तो अपमान भी हुआ। तो फिर गुरुमत क्या है? मैं नाक–कटों में शामिल नहीं हुआ। मैं क्रियात्मिक रूप से हर एक वस्तु को देखना चाहता हूँ। एक गुरु महाराज ने अपने ग्रन्थ में लिख तो दिया कि प्रभु का सुमिरन करने से वैरी भी वैर भाव को छोड़ जाता है मगर उनके भाई ने उनके साथ जीते जी वैर भाव रखा यदि प्रभु सुमिरन से ऐसा होता है तो उनके भाई ने उनके साथ शत्रुता क्यों की? तो इससे यह भ्रम पैदा होता है कि या तो उन्होंने प्रभु सुमिरन

नहीं किया और यदि किया है तो प्रभु सिमरन के बारे जो कुछ उन्होंने लिखा है वह ग़लत है। मैं चाहता हूँ कि मेरा यह भ्रम दूर हो।

श्रीमदभागवत कहती है कि अर्जुन नर्क में गया और महाराजा युधिष्टर को भी 2½ घड़ी का नर्क मिला। अर्जुन ने गीता के अठारह अध्याय श्रीकृष्ण जी के मुखारबिन्द से सुने थे। यदि अर्जुन श्रीकृष्ण जी के मुख से गीता के अठारह अध्याय सुनकर फिर भी नर्क में जाता है तो फिर हम लोग किधर जायेंगे? मैं किसी का खण्डन नहीं करता और न ही नुक्ताचीनी करता हूँ। मैं भ्रम में हूँ और चाहता हूँ कि मेरा भ्रम दूर हो। मैं कहता हूँ कि ऐ मानव! तेरा बेड़ा न गीता ने पार करना है और न सुखमनी साहिब ने पार करना है। रामचरितमानस के लिखने वाला सन्त तुलसी दास अन्तिम आयु में तीन साल सख्त बीमार रहा। काफी कष्ट उठाने के बाद चोला छूटा। तुलसी दास ने रामायण में लिखा है –

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसी दास चन्दन घिसें तिलक देत रघवीर।

रामायण कहती है कि तुलसीदास को रामचन्द्र जी के दर्शन होते थे तो यदि राम के दर्शन होते थे तो उसके दुख क्यों दूर न हुये? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि ''फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना''। मेरी समझ में यह आया है कि ऐ मानव! तू इस भरोसे पर मत रह कि तेरा गुरु हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज है या बाबा फकीर है और या कोई और गुरु है और वह तुमको सतलोक पहुँचा देगा। तू अपने अमल, अपने कर्म और अपनी नीयत को ठीक कर और किसी से धोखा फरेब मत कर वरना तुम आवागवन के इस चक्कर से निकल नहीं सकोगे और अपने कर्म के फल से बच नहीं सकोगे। आप लोग आये हैं मैं सोचता हूँ कि आप लोगों को मैं क्या दूँ। मैंने जीवन में जो समझा और अनुभव किया वह आप लोगों को आपकी भलाई के लिए

कह रहा हूँ। शत प्रतिशत तो मैं भी बरी नहीं हूँ। यह मन बहुत चंचल है और बहुत बेईमान है। मगर मैं यत्न करता रहता हूँ।

सुनो मेरी विनती गुरु दाता।
तुम तो आये जीव उवारन, दया क्षमा के काजा।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा।

काम तो तभी बनेगा यदि तुम गुरु आज्ञा में रहोगे। यदि तुम आज्ञा नहीं मानते तो काम कैसे बनेगा। गुरु की सेवा क्या है? गुरु की आज्ञा मानना और उस पर अमल करना। गुरु को रुपये देना या कपड़े देना यह तो सांसारिक व्यवहार है, जो दोगे वह मिलेगा। इससे मैं भी बरी नहीं हूँ। मैं अमरीका गया। लोग मुझे वहाँ रुपये देते थे और मैं रोता था। क्यों? जिस वस्तु से कोई आदमी घृणा करता है वही वस्तु उसके गले का हार हो जाती है। मैं वह आदमी हूँ कि जिसने बाप के घर से रोटी नहीं खाई कि बाप रिश्वत खाते हैं और अब बाहर दौरे पर जाता हूँ तो लोगों के घर में रोटी खाता हूँ। जिनके घर में टुकड़ा खाता हूँ क्या यह सब रिश्वत से बरी हैं या क्या इन सबकी कमाई नेक है? अमरीका गया, वहाँ जो लोग गाय का माँस खाते हैं उनके घर भी टुकड़ा खा के आया हूँ। मेरे अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि जिस वस्तु से कोई घृणा करता है वह उसका शिकार हो जाता है। इसलिए किसी से घृणा मत करो।

मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी, मानी गुमानी।
दुखी जानकर चरण लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी।

जब मैं आप के घर से खाना नहीं खाता था तो क्या मैं अभिमानी और दम्भी नहीं था? मेरी वह अज्ञान की भक्ति थी। मैं समझता था कि मैं नेक कमाई खाता हूँ और मैं नेक हूँ। वह मेरा धार्मिक जुनून का अभिमान था और मेरी भूल थी।

दुख कलेश ने चहुँ दिस घेरा, मुझसा दुखी न कोई।
मुझे तार लो जब मैं जानूँ, पतित अधम गति सोई।

मैं भी पतित था। अपने आपसे पूछता हूँ कि क्या हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने तुमको तार दिया? हाँ! तार दिया। कैसे? उन्होंने मुझे यह समझ और ज्ञान दिया कि फकीर! यह सारा खेल तेरे ही मन का है। अब मुझे विश्वास हो गया, क्योंकि जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और कई प्रकार के चमत्कार कर जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे यह विश्वास होना चाहिए कि यह सब मन का खेल है। पहले जो मेरे अन्तर विचार या रंगरूप आते थे मैं उनको सत मानता था लेकिन अब नहीं मानता, तो मैं तो ऐसे तरा। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्त्तव्य है इसलिए मैं वही शिक्षा तुमको देता हूँ। जब यह समझ आ जाती है तो आदमी मन के चक्कर से निकल जाता है। यह है ज्ञान की आँख। ज्ञान यह है कि मैं न शरीर हूँ, न मन हूँ, न प्रकाश हूँ और न शब्द हूँ। मैं इन सबसे जुदा हूँ। मगर जब यह ज्ञान भूल जाता हूँ तो मैं भी फंस जाता हूँ। तो भई! मुझे तो यह मिला।

डॉक्टर राम जी लाल! तुम आये हो। सेवा करते हो, मंदिर की आर्थिक सहायता करते हो। मैंने जीवन में जो स्वयं अनुभव किया वह कहता हूँ दूसरों की उदाहरण नहीं देता। हो सकता है मैंने जो समझा है, वह गलत हो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है। इस समय के गुरुओं ने हमको धोखे में रखा। जो भी उठता है वह हम गृहस्थियों को अपने जाल में फँसाने का यत्न करता है। जो कुछ मैंने समझा है यदि यह ठीक है तो दूसरे महात्मा जिन्होंने अपने धन-धान्य और मान-प्रतिष्ठा के लिए परदा रखा और सच्चाई वर्णन नहीं की तो आप लोग तो कहोगे कि वे सतलोक गये लेकिन मैं कहूँगा कि यदि कोई नर्क है तो वह उनके लिए है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने भी किताबों में तो लिख दिया

और सैन-बैन में बहुत कुछ कहा मगर जुबानी उन्होंने भी बात को खोला नहीं जिस प्रकार कि मैंने खोला है। सन्तों के जीवन के हालात देखकर मैं डर गया। इसलिए मैं स्पष्ट वर्णन करता हूँ। तुम्हारी इच्छा करे आओ न चाहे मत आओ। मेरी किताब पढ़ो या न पढ़ो। मंदिर के लिए चार पैसे दो या न दो तुम्हारी इच्छा। मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता।

यह मंजिल बहुत कठिन है। आप लोगों को क्या करना चाहिए? आप लोगों के लिए वेद मार्ग है। मानव के विचार में बहुत शक्ति है। इस संसार में रहते हुये शिव-संकल्प रखो। अपना और अपने परिवार का भला चाहो। सन्तमत केवल उनके लिए है जिनको संसार का अनुभव हो चुका है कि यहाँ सुख नहीं है, उनके लिए सन्तों का मार्ग है। गृहस्थियों के लिए यह है कि नेक बनो, अपने बच्चों का ध्यान रखो, अपने विचार शुद्ध रखो, द्वेष को छोड़ो और संतान अच्छी पैदा करो। यह मैंने आप लोगों को नहीं कहा यह सब अपने ही आपको कहा है। अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है। मेरा तो जीवन केवल एक विचार से बदला कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मेरी आँख खुल गई। मैं शुभ भावना देता हूँ जो इसको गृहण कर लेते हैं उनको लाभ हो जाता है। Law of Radiation काम करता है। ध्यान शक्ति में बहुत शक्ति है। पिछली बार मैं अमरीका गया तो एक स्त्री-पुरुष का जोड़ा मेरे पास आया। वे अमरीका के रहने वाले हैं। गरीब थे। मैंने उनसे कहा कि मेरा ध्यान किया करो तुम्हारी इच्छा पूरी होती रहेगी। अब की बार मैं अमरीका गया तो वह फिर मेरे पास आये। अब के वह बहुत धनी थे। मुझे क्योंकि कुछ कम सुनाई देता है वह स्त्री एक डॉक्टर को बुलाकर लाई और मुझे Hearing Aid अर्थात् एक मशीन दे गया जिसका मूल्य 645/- डालर है। उसी स्त्री ने कहा कि इसका मूल्य हम देंगे। मेरे पास तो इतना पैसा है नहीं और न ही मैं दे सकता था। लेकिन मेरे मन पर इस Hearing Aid

का बोझ रहा। दिल्ली वापिस आया तो पता लगा कि यहां Hearing Aid का मूल्य लगभग 500/- रुपये है। यहाँ होशियारपुर आकर मैंने 500/- रुपये मंदिर में दे दिये। अब मेरी आत्मा पर इसका कोई बोझ नहीं है।

अब आप सोचो कि वह जो गरीब पति-पत्नी मेरे पास आये, पहले बहुत गरीब थे और अब अमीर हो गये। उनको किस ने दिया? ध्यान शक्ति ने। इसलिए मैं कहता हूँ जहाँ भी तुम्हारा विश्वास है उसका ध्यान किया करो। ध्यान से तुम्हारी Will Power बढ़ जायेगी और तुम्हारी मनोकामनायें पूरी होती रहेंगी जो चाहोगे मिल जायेगा। कई आदमी आ के कहते हैं कि बाबा जी! ध्यान नहीं बनता तो मैं कहता हूँ कि फिर मैं क्या करूँ? मैं तो तुम्हारे अन्तर आने से रहा। हज़ारों लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनके काम होते रहते हैं। यदि मैं सच्चाई वर्णन नहीं करता तो यह जो मैं तुम्हारा टुकड़ा खाता हूँ यह मुझे खा जायेगा। मैंने सन्तों के हाल देखे। काँप उठा कि पता नहीं मैं कैसे मरुँगा? मेरे पास शुभ भावना है। सच्चे दिल से चाहता हूँ कि मालिक करे सबसे पहले तुमको अच्छा स्वास्थ्य मिले, भोजन मिले, कपड़ा और मकान मिले और मन को शान्ति मिले। रब मिले या न मिले। रब तो पहले हर जगह मौजूद है। मेरा केवल भ्रम था। भ्रम दूर हो गया। अब किस को ढूँढने जाऊँ? तुम लोग आये हो। मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ। सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप लोगों को सुख मिले।

''सब को राधास्वामी''।

●

परमसन्त हज़ूर परमदयाल जी महाराज
गुरु पूजा
दिनाँक 11 जुलाई, 1976

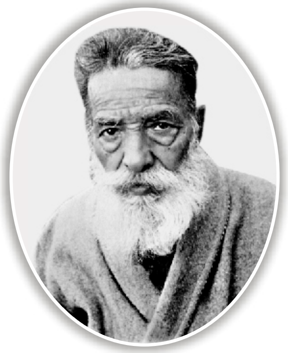

राधास्वामी!

ऐ मेरे जीवन को बनाने वाले! मैं संसार में आया। होश आई और तेरी याद आई। विचार आया कि मैं कौन हूँ और मेरा आद क्या है? मालिक की तलाश के जज्बे के कारण मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। मैंने उनके रूप में मालिक को माना और प्रेम किया। उन्होंने मुझे नामदान दिया और यह काम दिया। उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि ''फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना।'' मुझे नहीं पता कि मैंने संसार में क्या किया और क्या कर रहा हूँ। आज गुरु पूर्णिमा है और आप लोग आये हैं। यह वह दिन है जिस दिन हिन्दू जाति या गुरुमत वाले गुरु के उपकार और दया के बदले गुरु की पूजा करते हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि सच बता फ़कीर! तुमको गुरुमत से क्या मिला? जो कुछ मिला वह मैंने कल के सत्संग में बता दिया। मिलना क्या था? अब मेरा परिणाम क्या हा रहा है? मेरे अन्तर में मेरी ''मैं'' जो सोचती-समझती, विचार करती और अनुभव करती है और उस परमतत्व की तलाश करती है अब वह उस परमतत्व को ढूँढते-ढूँढते

स्वयं ही लोप हो रही है। मगर इस परिणाम को प्राप्त करने की संसार वालों को आवश्यकता नहीं। संसार वाले तो धन-धान्य और मान-प्रतिष्ठा चाहते हैं। मैं अपने जीवन के अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूँ कि सन्तमत की शिक्षा सर्व साधारण के लिए नहीं है। जो कुछ किसी को मिला, मिलता है या मिलेगा वह उसके अपने ही कर्म, अपनी ही वासना और अपनी ही नीयत का फल है। मैं अमरीका गया। वहाँ लोगों के अन्तर मेरे रूप प्रकट होता है। उन लोगों द्वारा चमत्कार सुन-सुन कर मेरे कान खड़े हो गये और देशों में भी और भारत वर्ष में भी हजारों लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं मगर मुझे कुछ पता नहीं होता। मैं अमरीका से वापिस आया। आने पर मुझे पता लगा कि मेरे मिलने वाले पांच जीव चोला छोड़ गये। श्री देवी चरण मित्तल एडीटर ''मनुष्य बनो'' मेरे बहुत मित्र थे और मुझसे बहुत प्रेम करते थे वह पूरे हो गये, मेरे पुराने मित्र पण्डित स्वर्गीय वली राम की स्त्री का देहान्त हो गया, मेरे मित्र श्री मंगल सैन तो पहले ही चोला छोड़ गये अब उनकी स्त्री स्वर्गवास हो गयी, ठाकुर शंकर सिंह जी सेक्रेट्री राधास्वामी सत्संग हनमकुण्डा का चोला छूट गया और सन्त सेवासिंह जी दिल्ली वाले जो कि सन्त थे और बहुत नेक थे वह भी इस नाशवान संसार से कूच कर गये। आज एक और सरदार ग्वालियर से आया हुआ है, कहता है कि उसका लड़का ट्रक एक्सीडेंट में मर गया है। उसका फोटो भी साथ लाया हुआ कहता है कि बाबा जी! उसका क्रिया-कर्म कर दो ताकि उसकी गति हो जाये।

आजकल का गुरुवाद क्या है? बस नाम ले लो और तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर तुमको ले जायेगा। क्योंकि मेरे जिम्मे शिक्षा को बदल जाने का कर्त्तव्य है इसलिए उत्साह से कहता हूँ कि यह धोखा है, प्रापोगण्डा और सरासर चार सौ बीसी है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मरते

समय बहुत से लोग कहते हैं कि बाबा जी आये, घोड़ा लाये, पालकी लाये या हवाई जहाज लाये मगर मैं कहीं नहीं जाता और न ही मुझे ऐसी घटनाओं का कोई पता होता है। मैं अपने कर्त्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूँ। इसलिए सच्चाई वर्णन करता हूँ और सच्चाई से काम करता हूँ। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा है वह गलत हो। मुझे किसी बात का दावा नहीं। लेकिन ये महात्मा संत, कृपालसिंह, बाबा चरणसिंह और भाई नन्दुसिंह इन्होंने मेरे सामने माना है कि वे नहीं जाते। लेकिन वे पब्लिक में यह बात नहीं कहते।

श्री देवी चरण मित्तल के लड़के ने मुझे बताया कि मरने से बारह दिन पहले से लेकर अन्तिम श्वास तक वह आपके फोटो को देखते रहे और आरती करते रहे। चोला छोड़ने से दो दिन पहले जब उनकी जुबान बन्द हो गई थी तब भी वह आपके फोटो को देखते रहे। लेकिन मैं सच कहता हूँ कि मुझे कोई पता नहीं। लोगों को विचार दिया गया है कि गुरु जीव के बारे सब कुछ जानता है। मैं अपने-आपसे पूछता हूँ कि फकीर! तू गुरु बन गया, भेंट लेता रहा, मान प्रतिष्ठा लेता रहा। सच बता कि क्या तुमको पता था कि देवी-चरण तुमको याद कर रहा है? नहीं। मुझे कोई पता नहीं। तो फिर गुरु मत क्या है? गुरुमत में बार-बार कहा जाता है पूरा गुरु, पूरा गुरु, पूरा गुरु। पूरा गुरु क्या है? पूर्ण ज्ञान, पूर्ण विवेक, पूरी समझ, भेद और रहस्य। आज गुरु-पूर्णिमा है और मेरे जिम्मे कर्त्तव्य है, गुरु ऋण है और मेरे ग्रह भी ऐसे है। जिस लगन में मैं पैदा हुआ हूँ ज्योतिषी ने बताया था कि आप वह काम करेंगे जो आज तक किसी ने नहीं किया। मैं एक दिन शिकागो (अमरीका) गया। वहाँ बहुत से आदमी मुझे मिलने के लिए आये। उनमें एक आदमी जो कि वहाँ यूनिवर्सिटी में हस्त रेखा का प्रोफैसर है, उसने मेरा हाथ देखा और कहा कि आपके हाथ की जो लकीरें हैं, पामिस्टरी के अनुसार इनका गुण यह

है कि आप जिसके सिर पर हाथ रख देंगे या जिसको *(Blessing)* आशीर्वाद देंगे उसकी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिए। अब मैं सोचता हूँ कि यदि यह ठीक है तो मैं किस बात का अभिमान करूँ। यह तो मेरे पिछले जन्म के कर्मों का फल है। इस जन्म के कर्मों का फल नहीं है। क्योंकि यदि इस जन्म के कर्म का फल होता तो ये लकीरें हाथ में नहीं होनी चाहिए थीं। इस जन्म में मैंने क्या किया? जो किया और जो समझा वह आज गुरु-पूर्णिमा के दिन कहना चाहता हूँ। स्वामी जी महाराज ने अपनी वाणी में लिखा है-

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

कर्म का फल सब को भोगना पड़ता है और मैं देखता हूँ कि भोगा। सर्व साधारण की तो बात ही क्या है जब बड़े-बड़े सन्तों-पीरों, पैगम्बरों को भी काफी दुख और कष्ट उठाना पड़ा तो मानना पड़ता है कि कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। गुरु क्या शिक्षा देता है कि पिछले जो कर्म किये हुये हैं वे तो अवश्य भोगने पड़ेंगे। भविष्य के लिए मत कोई बुरा कर्म करो वरना जब सन्त भी कर्म के फल से न बच सके तो तुम कैसे बच जाओगे। इसलिए मैंने गुरु पदवी पर आकर हेराफेरी नहीं की। मेरे नाम पर बहुत से चमत्कार ठहराये जाते हैं लेकिन मुझे किसी बात का पता नहीं होता। लाभ उन लोगों को होता है जो ध्यान करते हैं। मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं कहता हूँ कि जहाँ भी तुम्हारा विश्वास है उसका ध्यान करो। ध्यान से तुम्हारी *Will Power* बढ़ जायेगी और तुम्हारी वासनायें पूरी होती रहेंगी। एक तो आज गुरु पूर्णिमा के दिन आपको यह कहना चाहता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। हमारे ऋषि बहुत बुद्धिमान् थे उन्होंने सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए संसार वालों को कई उपाय बताये। धन को प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी का ध्यान बताया। शक्ति को प्राप्त करने के लिए शेर पर दुर्गा के रूप का

ध्यान बताया। श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज ने लड़ाई करने से पहले दुर्गा की पूजा की और उनको वहाँ से तलवार मिली और निर्वाण और ज्ञान के लिए गुरु के रूप का ध्यान बताया इसलिए कहता हूँ कि ऐ मानव! परमार्थ तो एक और रहा तुम लोग तो संसार चाहते हो। इसलिए संसार के कारोबार और संसार की वस्तुओं के लिए ध्यान किया करो। यह मुझे गुरुमत से मिला है। ध्यान त्रिकुटी में हो। त्रिकुटीओम् का स्थान है। यह ध्यान ही तुमको ऊपर ले जायेगा और ध्यान ही तुमको नीचे ले जायेगा क्योंकि जिस प्रकार की वासना रखकर तुम ध्यान करोगे वह वासना पूरी होगी। मैंने अपने आदघर जाने की आशा रखी थी।

राधास्वामी मत कहता है कि जहाँ सन्त पहुँचे वहाँ दूसरे मतमतान्तर नहीं पहुँचे। इन्होंने राम और श्रीकृष्ण को काल का अवतार कहा। न पराशर आगे गये और न वसिष्ट। वेदान्त को काल मत कहा और जैन, बुद्ध, मुसलमान और सब मत मतान्तर सब का खण्डन किया। मैं जब सन्तमत में आया और इनकी वाणियों को पढ़ा तो मैं रोया करता था कि मैं तो मालिक को ढूँढने निकला था। कहाँ फँस गया, तो उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। इस बार अमरीका गया। छः सूबों में घूमा। पैंतीस हज़ार का सफर हवाई जहाज, रेल गाड़ी और कार द्वारा किया। पैंतीस भाषण दिये और बहुत कुछ अपना अनुभव बताया जिसको वहाँ पढ़े-लिखे आदमियों ने बहुत पसन्द किया और *Appreciate* किया। इस लिए कहता हूँ कि यदि अपनी उन्नति चाहते हो तो तुम्हारी उन्नति तो तुम्हारे कर्म ने करनी है, राम-कृष्ण या किसी मरे हुये गुरु ने नहीं करनी। तुम्हारा बेड़ा तुम्हारे शुभ संकल्प, तुम्हारी नेक नीयत और तुम्हारे नेक कर्म ने पार करना है। गुरु जीव के विचार को शक्ति देते हैं और विश्वास दिला देते हैं और शुभ भावना देते हैं। इसके

सिवाय कोई गुरु कुछ नहीं कर सकता। इन गुरुओं ने हम भोले-भाले जीवों को अज्ञान में रखकर बहुत लूटा है। अगर मैं गलत हूँ तो ये महात्मा मेरे सामने आयें और मुझे पकड़ें कि मैं ग़लत कहता हूँ। सन्त तुलसीदास जी ने कहा है–

कर्म प्रधान विश्व कर राखा जो उस कीन तैसो फल चाखा।

स्वामी जी महाराज ने कहा है–

कर्म जो-जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

कबीर साहिब ने कहा है–

कर्म गति टारे नाहीं टरे।

इन सन्तों ने तो यह कहा लेकिन आज कल के गुरु क्या कहते हैं? तुम नाम ले जो फिर बेशक तुम कुछ भी करो चाहे शराब पीओ, माँस खाओ रंडीवाज़ी करो या धोखा-फरेब करो। तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर तुमको ले जायेगा। इस पाखण्ड को देख कर मेरी सुरत अनामी धाम से इस फकीर के चोले में यह कहने के लिए आई है कि ऐ मानव! तू चक्कर में आया हुआ है, तुमको सच्चाई का पता नहीं। इन गुरुओं, धर्मों और पंथों ने तुमको सच्चाई वर्णन न करके और अज्ञान में रखकर बहुत लूटा है। मैं तुम लोगों को इस लूट से बचाने के लिए आया हूँ। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज विचार शक्ति (*Will Power*) के धनी थे लेकिन उनके पिछले कर्मों के कारण उनकी धाम उजड़ गई। लेकिन क्या कर लिया उन्होंने? क्या धाम को बचा सके? आप लोग आये हैं और पैसा भी दिया। मैं आप लोगों को यह बता देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि इस भरोसे मत रहना कि तुमने किसी गुरु से नाम लिया हुआ है और तुम तर जाओगे। तुम भूले हूये हो। अपने कर्म को ठीक करो।

क्या कोई ऐसी युक्ति है कि हम इस चक्कर से निकल जायें? बुद्धि मानती है कि हम इस शरीर के रहते हुए मन से निकल कर प्रकाश और शब्द में ठहरने की कोशिश करें तो फिर यदि हमारे अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये तो क्योंकि हमारी सुरत मन के मण्डल से बाहर निकल जायेगी इसलिए मन के मण्डल का सारे का सारा अच्छा और बुरा कर्म तुम पर कोई असर नहीं कर सकेगा। उदाहरण के रूप में देखा कि तुमको शारीरिक और मानसिक कष्ट हैं जब नींद आ जायेगी और गहरी नींद में चले जाओगे तो तुमको कोई कष्ट महसूस नहीं होता। ऐसे ही इस जीवन में अगर तुम में वह शक्ति आ जाये कि तुम चैतन्य होकर जाग्रत अवस्था को भूल सको और प्रकाश और शब्द में जा सको तो तुम्हारे सब पाप समाप्त हो सकते हैं। यही सन्तों का नाम है अर्थात् प्रकाश में और प्रकाश से आगे शब्द में जाना है।

नाम जो रत्ती एक है पाप जो रत्ती हजार।
आध रत्ती घट सिंचरे जार करे सब छार।

इसलिए सन्तों ने प्रकाश और शब्द का साधन बताया। बुद्धि मानती है कि अगर अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये तो हमारे अच्छे और बुरे सब कर्म समाप्त हो जायेंगे और हम बच जायेंगे। मेरी इच्छा है कि अन्त समय पर निकल कर कहीं बाहर जाऊँ तो बता सकूँ कि मेरा क्या परिणाम हुआ। पता नहीं मैं इसमें सफल हूँगा या नहीं। मैं हूँ खोजी हर एक चीज़ की खोज करता हूँ। सोचता हूँ कि क्या मरने के बाद कोई चीज़ शरीर से निकलेगी? नियमानुसार निकलनी चाहिए। क्योंकि यह शरीर धातुओं से बना हुआ है। वे धातु सब निकल जायेंगे। प्रकाश और शब्द भी बाहर से आया हुआ है वह भी निकल जायेंगे। लगभग तीन साल पहले Tribune समाचार पत्र में एक लेख छपा था कि स्विटज़रलैंड के एक डॉक्टर ने एक आदमी को जो बिल्कुल मरने के

समीप था उसका वजन किया और मरने के बाद शीघ्र ही उसको तोला तो इक्कीस ग्राम कम हुआ। उसने लिखा कि रूह का वज़न 21 ग्राम है। लेकिन मैं उसके साथ सहमत नहीं हूँ। क्यों? क्योंकि जो चीज़ निकलती है अगर उसमें सांसारिक इच्छायें हैं तो इन वासनाओं के कारण सूक्ष्म शरीर भारी होगा और जब वह सूक्ष्म शरीर निकलेगा तो क्योंकि जमीन में (Gravity) (कशिश) है तो वह कशिश उस रूह को अपने दायरे से बाहर नहीं जाने देगी। तो चक्कर से निकलने के लिए क्या करना चाहिए? स्थूल पदार्थ की चाह को त्यागना पड़ेगा।

दुर्गादास और मास्टर मोहन लाल! सुन लो मैं क्या कह रहा हूँ? अगर अन्त समय तक सांसारिक इच्छायें मौजूद रहेंगी तो शरीर छोड़ने के बाद पृथ्वी की कशिश रूह को खींच लेगी और ऊपर नहीं जाने देगी। यदि नेकी और परोपकार की इच्छा है तो वह रूह ऊपर के लोकों में चली जायेगी और यदि कोई भी इच्छा नहीं है तो फिर रूह कहाँ जायेगी? सुनो! जैसे रोशनी की किरण एक सैकण्ड में लाखों मील का सफर कर जाती है ऐसे ही हमारी सुरत अपने आप में तुरन्त पहुँच जायेगी। इसलिए जो आदमी निर्वाण चाहते हैं उनको गुरु निर्वाण देगा। समझो मेरी बात को। अगर आप लोग मेरे पास परमार्थ के लिए आते हैं और रुपया भी खर्च करते हैं तो मैं आपको कहना चाहता हूँ कि जीवन में अपने सांसारिक बन्धनों को कम करते जाओ अन्त समय आने पर तुम्हारा कोई बन्धन और कोई इच्छा न रहे। तुमको अमूल्य जन्म मिला है। अगर होश है है तो मेरी बात को समझो। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्त्तव्य है इसलिए जो मैंने समझा और अनुभव किया वह बता दिया। यह अमल करने का सवाल है। धन्य गुरु-धन्य गुरु करने से या गुरु को रुपया पैसा देने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा।

मैंने कल के सत्संग में बहुत कुछ कहा। मैं सदा कहा करता हूँ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जिसको अन्त समय किसी गुरु का रूप आ

जाता है या राम, कृष्ण या किसी देवी देवता का रूप आ जाता है तो क्योंकि वह मन के चक्कर में है इसलिए वह आवागवन के चक्कर से नहीं निकल सकता। मौजूदा गुरुओं को कहना चाहता हूँ कि तुम लोग दूसरों को उपदेश करते हो। सच्चाई वर्णन किया करो वरना कर्म का फल सबको भोगना पड़ेगा। मैं यहाँ आया आप लोगों ने मेरी सेवा की। रुपया भी दिया। मैं सोचता हूँ इसके बदले आप लोगों को क्या दूँ? मैं अमरीका गया वहाँ से कोई चीज़ नहीं लाया। जो कुछ उन लोगों ने दिया मैंने सब बाँट दिया। अपना बिस्तर भी वहाँ दे आया। यह काम जो मैं करता हूँ मैं इस काम से सुखी नहीं हूँ। इस काम से अहंकार आ जाता है। अगर अज्ञानियों का पैसा खा जाऊँगा तो वह मेरी जान को खा जायेगा। मैं अमरीका में *Dr. I. C. Sharma* के घर खाना खाता रहा उसके लड़के को बीस डालर दे आया। मगर आदमी को किसी बात का अहंकार नहीं करना चाहिए, क्यों? मैंने बाप के घर की रोटी नहीं खाई क्योंकि वह पुलिस में काम करते थे और रिश्वत खाते थे और मैं अपने-आपको बहुत नेक-पाक और धर्मात्मा समझता था। लेकिन अब क्या किया? उनके घरों में रोटी खाता रहा जो माँस तो दरकनार रहा *Beef* खाते हैं। ऐसा क्यों हुआ? मेरा अहंकार था और अज्ञान था।

बड़े बड़े हंकारिये नानक गरभ गले।

इस आवागवन के चक्कर से पार जाने के लिए प्रकाश और शब्द का साधन है। प्रकाश और शब्द को पकड़ो ताकि तुम्हारे अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये मगर यह आयेगा तब जब तुमको यह विश्वास हो जायेगा कि तुम्हारे अन्तर में जो रंग, रूप, भाव, विचार और संकल्प प्रकट होते हैं ये हैं नहीं केवल भासते हैं और माया है। आप लोगों की बदौलत मेरी आँख खुली और मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रंगरूप और शक्लें आती हैं वह सब धोखा है। मैं आप लोगों को गुरुवाद की ग़लत लूट से बचाना चाहता हूँ। यह बिलकुल

सच्ची बात है। मैंने चेला बन के देखा और गुरु बन के देखा। लोग आते हैं उनके विश्वास के कारण उनके काम हो जाते हैं और उसका श्रेय (Credit) मुझे मिलता है। मैं किसी को कमजोर विचार नहीं देता। मेरी सच्चाई के कारण दूसरों के अज्ञान के विश्वास को धक्का लगता है। यह मैं जानता हूँ मगर मुझे पहले अपना आप प्यारा है उसके बाद तुम प्यारे हो। अगर मैं सच्चाई वर्णन नहीं करता और परदा रखता हूँ तो मैं तो दोषी हूँ। सच्चाई वर्णन करने से गुरु बनने का मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। ज्ञानदाता समझ कर मुझे आप जो चाहें दे दें मुझे कोई इन्कार नहीं है लेकिन वह भी आप जो कुछ मुझे देते हो मैं मन्दिर में दे देता हूँ अपने पास नहीं रखता। आज गुरु पूर्णिमा है, गुरु क्या करता है?

बारी जाऊँ मैं सतगुरु के मेरा किया भरम सब दूर।

गुरु भ्रम दूर करता है। भ्रम क्या है? चीज़ कुछ है और हम उसको समझते कुछ और है, जैसे अन्धेरे में रस्सी को साँप समझ लेते हैं। हम दुनिया में जाते हैं। असलियत को समझते नहीं। स्वप्न को सच मानते हैं। मेरा एक दृश्य ही तो था जिसको सच मानकर मैंने जीवन में क्या कुछ नहीं किया। जितना मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज से प्रेम करता था उतना ही वह मुझे कहते कि फकीर! तू अभी काल और माया से नहीं निकला। मेरी समझ में यह बात आती नहीं थी लेकिन उन्होंने मुझे यह नहीं कहा कि मैं तेरे अन्तर नहीं जाता वह कहते कि फकीर! तू ग़लती पर है। मैं बढ़े चाव और प्रेम से उनकी आरती करने जाता था। इसलिए अगर आज तुम मेरी आरती करते हो तो मैंने भी की हुई है। तुम तो नारियल रखके करते हो और मैं सोना और चादीं रख के किया करता था। मगर जो कुछ मैंने किया था वह मेरी ग़लती थी और मेरा अज्ञान था। धन देने से गुरु नहीं रीझता। यह तो संसार का व्यवहार है जो दोगे वह मिलेगा।

शिष्य को ऐसा चाहिए गुरु को सब कुछ दे।
गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य का कछु न ले।

इसलिए सिवाय चन्द आदमियों के किसी और से मैं कुछ नहीं लेता। रोटी अवश्य खा लेता हूँ इसमें शक नहीं। मैं जब हजूर दाता दयाल जी महाराज की आरती करने गया तो वह फरमाते हैं–

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया, भूला भरमाना।
कहाँ बसे कहाँ नसे ठौर न ठिकाना।

वह मुझे फरमाते हैं कि फकीर! तू ग़लत रास्ते पर चल रहा है। अब मैं भी आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि अगर आरती करने से या रुपये या कपड़े देने से कोई सतलोक जा सकता होता तो सारी दुनिया ही वहाँ पहुँच जाती। यह नहीं कि मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं या मैं इसके विरुद्ध हूँ मगर सच्चाई बता रहा हूँ। जो दोगे वह मिलेगा। यह दुनियाँ का व्यवहार है और कुदरत का कानून है। सार भेदी और दूसरे सब लोग सुन लो कि पैसा देने से काम नहीं बनेगा। कैसे बनेगा? सुनो –

संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई न सहाई।
ताक में हैं चोर डाकू कोई न सहाई।

न कोई संगी है और न कोई साथी है। कोई पाँच साल जिया कोई बीस साल जिया या पचास साल जिया। कहाँ गये हमारे पूर्वज? सबने यहाँ से चले जाना है लेकिन हम तो यह सोचते हैं कि हम सदा रहेंगे।

सोया सो पूंजी खोया पूंजी खोय रोया।
फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया।

हमने क्या पूंजी खोई? हमारी सबसे बड़ी पूंजी हमारी शान्ति है और हमारा अपना आप है। स्त्री, दौलत, धर्मपंथ और गुरु सब हमको लूटते

हैं और हमको अपनी ओर खींचते हैं। मुझे इस बात की समझ नहीं आती थी। आप लोगों की बदौलत मुझे यह समझ आई। हजूर दाता दयाल जी महाराज तो पता नहीं कहाँ हैं क्योंकि किसी के पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है। इस समय आप लोग मेरे सच्चे सतगुरु हैं क्योंकि आप लोगों से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई न येगाना।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्यों फकीर! क्या तुमने वह देश देखा है? हाँ। मगर मुझसे अभी वहाँ ठहरा नहीं जाता मगर मैंने वह देखा है। हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया से और आप लोगों की दया से।

गुरु बताबे साध को साध कहें गुरु पूज।
अरस परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ।

क्योंकि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रगट होता है यह है नहीं मगर भासता है तो मैं मन को छोड़ जाता हूँ। आगे है प्रकाश और शब्द। लेकिन प्रकाश और शब्द भी मेरा देश नहीं है इसलिए मैं उस चीज़ की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह है मेरा देश। जहाँ न मैं, न तू, न राम, न कृष्ण। वह एक अवस्था है Silence in the beginning and Silence in the End. मैं वहाँ से आया हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे बारे में लिखा है।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगा के, ले जा गुरु के देसा।

अब मैं महसूस करता हूँ कि मैं अनामी धाम से सच्चाई वर्णन करने के लिए ही आया हूँ। सच्चाई क्या है? सच्चाई यह है कि ऐ इन्सान! तूने केवल इसी बात में अपने जीवन को बरबाद कर दिया कि यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है, यह माँ है, यह बहन है, यह मेरी स्त्री है। यह तो सब स्वप्न है। यहाँ कौन किसी का है?

मैंने अपने ग्रह भी अपको बता दिये और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने जो कुछ मेरे बारे कहा वह भी बता दिया और जो कुछ मैं कहता हूँ उसका प्रमाण भी उनके वचनों से और उनकी वाणी से दे दिया। मैं अपनी नीयत से बिलकुल सच कहता हूँ कि मुझे धन देने से या मेरे गुण गाने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं हागा बल्कि मेरी बात पर अमल करने से होगा। धन देने से तुमको धन मिलेगा। यह ठीक है मगर मोक्ष नहीं मिलेगा। मोक्ष के लिए आपको अपनी सुरत सतगुरु की देनी पड़ेगी। सतगुरु है ज्ञान, अनुभव और सार।

पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपा सीस।
पीछे दाता गुरु भया, जिस नाम दिया बख्शीश।

लोग बात को समझने नहीं। सत्संग में जाकर पूरे ध्यान से सतगुरु की वाणी को सुनो ताकि तुम तन को भूल जाओ। यह है तन देना। मन का देना क्या है? सत्संग में इतने ध्यान से वाणी का सुनो कि मन किसी दूसरी ओर न जाये और मन में कोई और विचार करो। अहंभाव को दूर करो। गुरु ने तुमको केवल हिदायत करनी है अमल तुमने आप करना है। मिलेगा वही जो तुम्हारे कर्म में है। जब समझ आ जाती है तो आदमी की बुद्धि निश्चयात्मिक हो जाती है। शब्द के बाद जो अनुभव होता है उसका पूरा विश्वास हो जाना ही नाम है। स्वामी जी महाराज ने फरमाया है–

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

जो लोग केवल शब्द के पीछे ही पड़े रहते हैं वे असफल रहते हैं।

गुरु ने उपदेश दिया और मुझे चिताया।
सन्त पन्थ धार हिये कटे मोह माया।

अब मेरे मोह माया चले गये। किसी का मोह स्त्री के साथ, किसी का मोह पुत्र के साथ और किसी का का मोह बाबे फकीर या किसी और गुरु के साथ। क्या फर्क है? आखिर है तो मोह ही। एक गुरु के मरने पर कितने ही आदमी और स्त्रियाँ आत्महत्या कर लेती हैं। क्यों ? उस गुरु ने जीवों को गुरु का सच्चा रूप नहीं बताया। इसलिए उनकी मौत का जिम्मेदार वह गुरु है क्योंकि उसने सच्चाई वर्णन नहीं की और उनको अपने साथ बाँध रखा और उनको अज्ञान में रखकर उनसे धन–दौलत लेकर अपना डेरा बनाया इसलिए वह गुरु उन लोगों की मौत के जुर्म का जिम्मेदार है। कोई बाप के मरने पर रोया, कोई बेटे के मरने पर रोया और कोई गुरु के मरने पर रोया। क्या अन्तर है? मैं समय के सन्त सतगुरु के रूप में आप लोगों को चिता रहा हूँ। गलत शिक्षा का परिणाम भी ग़लत होता है। एक बार एक मिलिट्री का इन्जीनियर राधा स्वामी मत को सौ–सौ गाली दे रहा था। वह बाजार में एक दुकान पर बैठा था और मैं भी वहीं था। मैंने यह समझा कि यह शायद मुझे देखकर राधास्वामी मत को गाली दे रहा है लेकिन मैं चुप रहा। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उसकी स्त्री अपने गुरु के चोला छोड़ने पर आत्म हत्या कर गई। छः सात बच्चे हैं। अब उसको बच्चे सम्भालने में बहुत तकलीफ है। इसलिए यह गाली दे रहा है।

मैं तुम लोगों को लूटना नहीं चाहता बल्कि तुम लोगों को लूट से बचाना चाहता हूँ। जो भी आया उसने तुमको लूटा, सच्चाई ब्यान नहीं की।

लूट पड़ी लूट से, बचा ले धन अपना।
सह न काल कर्म चोट, सोध ले मन अपना।

वह कौन सा धन है जिसको तुमने बचाना है? मन की शान्ति। सब हमारी शान्ति को लूटते हैं।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने जब मुझे नाम दान दिया था तो फरमाया था कि अपने रिश्तेदारों और अफसरों को यह सिद्ध कर दो कि तुम्हारा शरीर और तुम्हारा धन उनका है मगर तुम उनके नहीं हो। उस समय समझ नहीं आई अब पता लगा।

राधास्वामी संत रूप तेरे है सहाई।
उनकी और ध्यान लगा, ले चरन शरनाई।

वह फरमाते हैं कि फकीर! मेरी बात को समझो। मैं अज्ञानी था और मुझे समझ नहीं आती थी। गुरु क्या करता है? जीव के भ्रम शँकाए और सवाल-जवाब दूर करता है मगर जिनको सांसारिक इच्छायें हैं और संसार की चीजों की इच्छा रखते हैं उनके लिए सन्त मत नहीं है। जो संसार के दुखों से तंग आ चुके हैं और इनसे निकलना चाहते हैं उनके लिए नाम है। दूसरों के लिए क्या है? शिव संकल्प अस्तु। विचारों को ठीक रखो। नीयत साफ रखो। अपने बच्चों को पालो। परोपकार करो और अपने धर्म को पालो। दुखियों की सहायता करो। इन गुरुओं ने लाखों के नाम दिया मगर सिवाय कुछ एक आदमियों के शायद ही किसी को कुछ मिला होगा। संसार तो संसार चाहता है मैं नाम किसको दूँ? दुनियादारों के लिए ध्यान योग है। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान

करो। जिस पर तुम्हारा विश्वास है था जिससे तुम्हारा प्रेम है उसका ध्यान करो। यह मैं अपना 90 साल का अनुभव बता रहा हूँ। मिसमरेज़म वाले भी ध्यान योग से ही अपनी विचार शक्ति को शक्तिशाली बनाते हैं। ये दीवार पर एक काला निशान बना लेते हैं और टिकटिकी बांधकर उसको हर रोज़ देखते हैं। जब वह काला निशान उनको सफेद फूल दिखाई देने लगता है तो उनकी विचार शक्ति बढ़ जाती है और उनमें सिद्धी शक्ति आ जाती है और वे अपने मामूली (सम्मोहित) से जो इच्छा हो कहलवा लेते हैं।

ऐसे ही जो आदमी अपने अन्तर में अपने इष्ट का ध्यान करता है और उसके मस्तिष्क और आँखों पर अपना ध्यान जमाता है उसमें सिद्धी-शक्ति आ जाती है। फिर वह जो इच्छा करेगा वह पूरी होगी। मिसमरेज़म वाला क्योंकि बाहर ध्यान करता है, इसलिए उसमें बाहर की शक्ति आती है और जो आदमी अपने अन्तर में अपने इष्ट का ध्यान करता है उसमें अन्तर की शक्ति आ जाती है। लेकिन यदि ध्यान करने वाले के विचार गन्दे हैं तो वह अपना नुक्सान कर लेगा। मैं इसलिए किसी को नाम नहीं देता। नाम में बहुत शक्ति है। जब तुम्हारा ध्यान बन जायेगा और विचार शक्ति बलवान् हो जायेगी तो अगर स्वार्थ चाहोगे तो स्वार्थ मिलेगा और अगर परमार्थ चाहोगे तो परमार्थ भी मिलेगा। यह कुँजी है। इसलिए किसी पूर्ण गुरु के सत्संग में जाकर उसके वचनों को ध्यान से सुनो और अमल करो। उस गुरु की यह डयूटी है कि वह तुमको असलियत का ज्ञान करा दे। लेकिन आज कल के गुरु तो यह कहते हैं कि नाम ले लो तुमको तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर सतलोक ले जायेगा। सन्तमत में स्वामी जी महाराज ने या हजूर महाराज जी ने कोई ऐसी बात नहीं कही लेकिन बाद में ऐसी मनघढ़ँत बातें घढ़ी गई है कि जिनको सुनकर बुद्धि चकित होती है। अज्ञानी जीवों को फँसाने की

कोशिश की गई है। जब ब्राह्मणों का राज था तो उस समय भी ऐसा ही हुआ। मुसलमानों के समय में भी काज़ियों का ज़ोर था और उनके बारे में भी बहुत कुछ कहा गया। बुद्धों और जैनियों के समय में उनका ज़ोर था। अब सन्तों का ज़माना है। किसी ने दाढ़ी बढ़ा ली और किसी ने जूड़ा रख लिया लेकिन असलियत का किसी को पता नहीं।

फूटी आँख विवेक की लखे न सन्त असन्त।
जिसके संग दस-बीस है उसका नाम महन्त।

कोई सच्चाई नहीं बताता, सब जीवों को फँसाने की कोशिश करते हैं। आजकल का गुरुवाद ठगवाद है। इसलिए मैं अनामी धाम से फकीर के चोले में सच्चाई ब्यान करने के लिए आया हूँ। गुरु क्या करता है?

वारि जाऊँ मैं सत्संग के मेरा किया भ्रम सब दूर।

यह है गुरु का काम कि वह तुमको सच्चाई बता दे कि तुम कौन हो। मैंने क्या समझा? जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके नाना प्रकार के काम कर जाता है, लेकिन मैं नहीं होता तो मैं मन के रूप को समझ गया और मन को छोड़ने के लिए विवश हुआ। आगे है प्रकाश और शब्द। प्रकाश को देखता हूँ और शब्द को सुनता हूँ लेकिन मैं वहाँ उस चीज़ को तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता। इतना ऊँचा चढ़ जाने के बाद मैं सोचता हूँ कि क्या मैं कुछ बन गया? नहीं। कैसे मानूँ? लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं और राज़ी हो जाते हैं। लेकिन मैं जब बीमार हो जाता हूँ तो डाक्टरों के पीछे फिरता हूँ। मैं न सही। मैंने बड़े-बड़े सन्तों के हाल देखे हैं। उन्होंने बीमारी के कारण काफी दु:ख उठाए अगर वो कुछ बन गए होते तो अपनी बीमारी को दूर कर लेते। किसी के लड़के बदमाश हो गए वो उनको ठीक न कर सके। किसी का स्त्री से या बच्चों से विवाद था उसको दूर न कर सके तो मैंने क्या समझा? कि मैं

चेतन का एक बुलबुला हूँ वो मालिक बेअन्त है। उसकी मौज से ही यह टूट जायेगा यहाँ आकर मुझे शान्ति मिली।

चंद चढ़या कुल आलम मैं देखूँ भ्रम दूर।

मेरे भ्रम दूर हो गए और मुझे सत्यता का पता लग गया, इसी चक्कर में मैं भी बहुत दौड़ता रहा। ब्यास के अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और वह माया के चक्कर में आकर यहाँ आ गया।

हुआ प्रकाश आस गई दूजी उगया निर्मल नूर।
माया मोह तिर सब नाशा पाआ हाल हजूर।

मोह माया तिमर यानी ये अज्ञान क्या है? माया हमारी बुद्धि यानी अक्ल है। मोह Attachments यानी बन्धन है। सम्बन्ध है। मैं रूप रंग और विचारों के साथ बँधा हुआ था। ऐ सत्संगियों! दु:ख है। मेरे पास कुछ है नहीं मैं आप अपना शरीर काट कर देने को तैयार हूँ। मैंने तुम्हारी बदौलत इस भेद को पाया। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मुझे बहुत समझाया करते थे लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आती थी। उनकी कृपा से मुझे खुशी और आनन्द मिला जब मैं उनकी बात को न समझ सका तो यह भेद समझाने के लिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था और फरमाया था कि फकीर! तुम में ९९ अवगुण हो सकते हैं मगर एक सच्चाई है। मेरी आज्ञा मानो तुमको सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। आप लोग आए हैं। मैं सच्चे दिल से सतगुरु मानकर आपको नमस्कार करता हूँ और चाहता हूँ कि देवी चरण की आत्मा! मेरी बहन पं. वलि राम की स्त्री!! ऐ मंगलसेन की स्त्री की आत्मा!!! सरदार सेवा सिंह जी की आत्मा और इस सरदार के लड़के की आत्मा!!!! अगर तुम यहाँ सूक्ष्म शरीर में कहीं हो तो तुमने मेरा सत्संग सुन लिया अब तुम अपने घर वापिस चले जाओ। दुनिया एक ख्वाबो ख्याल है। मैं यही कुछ कर

सकता हूँ और मेरे पास कुछ नहीं है। मैं आप लोगों को शुभ भावना देता हूँ।

आप लोग बाहर से दूर-दूर से आए हैं। ऐ दाता! आपने मुझे निबल, अबल, अज्ञानी और जगत् कल्याण का काम दिया था। ऐ मेरे बनाने वाले। मुझे समझ नहीं आती कि मैं क्या करूँ। मैं शुभ भावना देता हूँ कि तुम लोग जिस नीयत से मेरे पास आए हो मालिक तुम्हारी इच्छा पूर्ण करे। इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं है। जो विधि मैंने आपको बताई है सच्चे बनकर सुबह-शाम अकेले बैठकर अपने विचार और विश्वास के अनुसार जिस रूप में तुम उस मालिक को मानते हो अपने आपको उसे रूप के सुपूर्द किया करो। जहाँ सच्चाई से अपने-आपको उसके सपुर्द किया तो प्रकृति अपने-आप तुम्हारी माँग को पूरा करने के लिए सामान पैदा कर देगी। मैं यह दावा तो नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यह ठीक है लेकिन मैं अपने आपको Surrender (सुपूर्द) करता रहता हूँ कि ऐ मालिक मुझे तो कुछ नहीं आता। इसलिए अब मुझे ले चल। इन धर्मों के झगड़े ने मुझे उदास कर दिया। सब धर्म एक दूसरे को ग़लत कहते हैं। मैं कहाँ जाऊँ?

मैं उस ख़ुदा को नहीं मानता जिसको हिन्दू, मुसलमान या दूसरे धर्म मानते हैं। मैं उस ख़ुदा को मानता हूँ जो तमाम लोक लोकान्तरों का और सबका मालिक है।

सबको राधास्वामी!

परमसंत मानव दयाल जी महाराज
आये गुरु महाराज री!

सत्संग स्थान : होशियारपुर **दिनाँक 3 जुलाई, 1988**

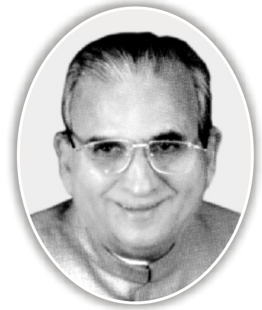

आये गुरु महाराज री, अपनी दासी घर॥
लाई प्रेम की थाली दासी, मंगल आरत साज री,
लख गुरु प्रीतम वर॥
प्रीति प्रतीति के भूषण बस्तर, आये सन्त समाज री
मन धन न्यौछावर॥

चरन कलम लग उमंग बढ़ाया, मनमानो कियो काज री,
माँगा भक्ति वर॥

शबरी के बेर राम बन खाये, रख लीह दया से लाज री,
करुणा के सागर॥

राधास्वामी दीन दयाला, हुए प्रसन्नचित आज री,
दासी के ऊपर॥

राधास्वामी!

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप सद्‌गुरु रूप सत्संगी भाइयो और बहनो!

प्रश्न उठता है कि यह जगत् क्यों पैदा हुआ? मालिक ने इतना बड़ा संसार क्यों पैदा किया और हम जीवों को अपने से अलग क्यों किया? क्या

हम स्वयं अपनी इच्छा से, अपनी संकल्प की शक्ति से, किसी जिज्ञासा को लेकर, किसी वासना को लेकर इस जगत् में आये? परम दयाल जी महाराज अपने सत्संगों में कहते थे कि यह जगत् वासना का है। इसलिए मैं तुम्हें Line of Action दे रहा हूँ। तुम्हें क्या सिखा रहा हूँ? गुरु नाम ज्ञान का है, विवेक का है और समझ का है। गुरु आपको समझाता है कि कौन-सी चीज़ आपको स्थायी सुख देने वाली है और कौन-सी अस्थायी सुख देने वाली है। विवेक गुरु के बिना और ज्ञान के बिना नहीं होता। इसलिए मालिक को इस जगत् में सन्त के रूप में आना पड़ता है। वह ज्ञान शरीर की रग-रग के अन्दर, हर साँस के अन्दर, रच जाने वाला है। राधास्वामी हालत में रहने का ज्ञान उस व्यक्ति को मिलता है, जिसके अन्दर तड़प है, प्यास है। यह तड़प हर व्यक्ति के अन्दर है, लेकिन हर व्यक्ति उस प्यास को पहचान नहीं पाता। हर व्यक्ति ढूँढ तो उसी (मालिक) को रहा है, जब तक इस तथ्य को वह समझ नहीं लेता, तब तक उसे शान्ति नहीं मिलती।

इस जगत् के अन्दर जितने भी धर्म हैं, इस बात का दावा करते हैं कि हम आपको उस जगह पर ले जायेंगे जहाँ से आप आये हैं। कोई उस जगह को स्वर्ग कहता हैं, कोई शिवलोक कहता है, कोई उसे ब्रह्मलोक कहता है। ये सब ख्यालात है, जो सीमित है। यह सत्य है कि ये सब लोक हैं। गोलोक में भगवान् श्रीकृष्ण सखियों के साथ नृत्य कर रहे हैं। शिवलोक में शिव जी तांडव नृत्य कर रहे हैं। विष्णुलोक में विष्णु भगवान् अपनी शेषनाग की शैय्या पर लेटे हैं। ईसाई कहते हैं कि वहाँ पर जीज़स क्राइस्ट बैठा है। ये सारे सिद्धान्त हैं। जिसने जहाँ तक अनुभव किया, उस अनुभव को एक सिद्धान्त बना दिया। अब ईसाई कहते हैं कि अगर तुमने जीज़स क्राइस्ट को नहीं माना, तो तुम नरक में जाओगे। मुसलमान कहते हैं कि ख़ुदा को मिलाने वाला गुरु हज़रत मोहम्मद है। केवल उसे मानो। अब इन सबकी बातों को सुनकर आदमी कहाँ जाये? परम दयाल जी महाराज ने यही सवाल मुझसे किया था। मैंने कहा –

सर्ववेदान्तसिद्धान्ता-गोचरम्।

हम उसे नमस्कार करें, जो सद्गुरु रूप है। उस मालिक को सभी ढूँढ रहे हैं। जो जहाँ तक पहुँचा अर्थात् जिसने जहाँ तक अनुभव किया, बस उसे ही आखिरी मंज़िल मान लिया। परमदयाल जी महाराज ने मेरे से कहा शर्मा! जब मैं इस मत में आया और मैंने 'सार-वचन' पढ़ा, तो मैं घबरा गया। उसमें लिखा था कि पराशर नहीं पहुँचा, छः शास्त्र भी ग़लत हैं। ये सब अधूरे हैं। मैं ब्राह्मण था। भला कौन ब्राह्मण इस बात को सुन सकता है? मैंने कहा, "'महाराज जी! मैं ब्राह्मण हूँ। क्या मैं इस बात को सुन सकता हूँ?" स्वामी जी महाराज ने खण्डन नहीं किया, न ही वह शास्त्रों के खिलाफ है। उनकी बात सही है। सबने अपने-अपने तरीके से, अपनी-अपनी पहुँच के मुताबिक उस मालिक को पाया। जो जहाँ तक पहुँचा बस, वहीं अटक गया। जो छः शास्त्र अपने-अपने तरीके से मालिक का रूप समझा रहे हैं, इन शास्त्रकारों ने जैसा समझा, वैसा लिख दिया और कहा कि यदि उसके तरीके को अपनाओगे, तो उस मालिक को वैसा ही पाओगे जैसा उसने पाया है। गुरु नानक देव जी ने भी कहा कि तुम उस मालिक के बारे में सोचते चले जाओ। जहाँ तुम्हारी सोच समाप्त हो जायेगी वहाँ तुम उस मालिक को पाओगे।

सोचे सोच न होई जे सोचे लखबार।

स्वामी जी महाराज ने या राधास्वामी मत ने खण्डन नहीं किया। जो जहाँ पहुँचा, बस वहीं बैठ गया। उससे आगे नहीं गया। राधास्वामी मत में शिवनेत्र अर्थात् आज्ञाचक्र से चलते हैं। शिवनेत्र से आगे सहस्र-दल कमल है। सहस्र-दल कमल क्या है? हज़ारों-करोड़ों शक्तियाँ, देवी-देवता सब विराट् के अन्दर मौजूद हैं। अक्सर धर्म विराट् तक ही पहुँचे हैं और उन्होंने कहा कि बस यही ख़ुदा है। ब्रह्मा ही ख़ुदा है। लेकिन विष्णु की मूर्ति तो बताती है कि ब्रह्मा विष्णु की नाभि से निकले हैं। अब जो

विष्णु को मानता है, वह ब्रह्मा से आगे है। अक्सर पश्चिमी धर्म ब्रह्मा अर्थात् विधाता तक ही पहुँचे हैं। विधाता इस जगत् का मालिक है। उसने नियम बनाया है–जन्मकर्म का फल। लेकिन जो ब्रह्मा तक सीमित है, वह 'जन्मकर्म के फल' के अन्दर ही रहेगा। मीमांसा वाले कर्मकाण्ड कराते हैं। कर्मकाण्ड से सनातन धर्म चलता है। जन्म के समय कर्मकाण्ड होता है, मृत्यु पर कर्मकाण्ड होता है। इस कर्मकाण्ड से क्या होगा? इस कर्मकाण्ड से आपको अगला जन्म अच्छा मिल जायेगा। लेकिन यह तो चक्कर में फँसना हुआ। इसलिए कबीर साहिब ने कहा–

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कहिये इन सिर लागी काई।
इनके भरोसे मत कोई रहियो इनहूँ मुक्ति न पाई॥

यदि तुम ब्रह्मा के जगत् में विचरते रहोगे, कर्मकाण्ड करते रहोगे, दान-पुण्य करते रहोगे, तो फिर तुम्हें अच्छा जन्म मिल जायेगा। लेकिन तुम्हें तो इससे आगे जाना है। सद्गुरु आपको बतायेगा कि कर्मकाण्ड करते हुए आप आगे कैसे जा सकते हैं? परमदयाल जी महाराज कहते थे कि जब तुम समाधि में बैठो, तो किसी वासना या इच्छा से बैठो। यह जगत् वासना का है। यदि मालिक से मिलने की इच्छा हो, तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन इससे भी आगे जाओगे। इससे आगे तब जाओगे, जब 'शिवसंकल्प' रखोगे। अब ब्रह्मा के भक्त ब्रह्मा तक पहुँचे। विष्णु भक्त विष्णु तक पहुँचे और शिवभक्त, शिवलोक तक पहुँचे। लेकिन ये तीनों त्रिकुटी में बैठे हैं। ये तीनों जहाँ से आये हैं, उसे सुन्न कहते हैं। सुन्न में दो हैं– एक तो प्रकृति और दूसरा पुरुष। अब प्रकृति और पुरुष कहाँ से आये? प्रकृति और पुरुष महासुन्न से आये। महासुन्न में सत्-सत् की ध्वनि है। यह सत्-सत् 'सोऽहम्' से आया। इस प्रकार सन्त इन सब दर्ज़ों से गुज़रता हुआ 'सोऽहम्' तक पहुँचता है। 'सोऽहम्' का अर्थ है 'मैं वहीं हूँ।' यहाँ पर वह और मैं पुरुष और प्रकृति दोनों मौजूद हैं, कभी तो सुरत ऊपर

मालिक की तरफ जाती है और कभी नीचे की ओर आती है। इसलिए इस अवस्था को भँवरगुफा कहा गया है; किन्तु गुरु के मार्गदर्शन से और नाम के सुमिरन से सुरत सत्यलोक में पहुँच जाती है, जहाँ पर शब्द और प्रकाश है। वहाँ पर साधक एक ऐसी अवस्था से पहुँचता है जहाँ पर उसे किसी प्रकार का सुख-दुःख, लाभ-हानि नहीं होते। यहाँ तक सन्त पहुँचते हैं। इससे आगे जाते हैं परमसन्त उनका लक्ष्य सत्पुरुष और सत्यलोक से भी आगे हैं। यहाँ मैंने देखा कि ज्यादातर नाम-दान देने वाले नामदान देते समय कहते है कि हम तुम्हें सत्यलोक पहुँचा देंगे, चाहे वह स्वयं सत्यलोक तक पहुँचे या न पहुँचे। वहाँ से भी आगे '**सर्ववेदान्तसिद्धान्तगोचरम्**' जितने रास्ते लोक-लोकान्तरों तक पहुँचे हैं, वो गोचर हैं। वह उस सत्पुरुष की तलाश कर रहे हैं जिसको सब तलाश कर रहे हैं। '**तम् अगोरचरम्**' लेकिन पूरी तरह से नहीं पहुँच सके। '**गोविदं परमानन्दम्**' ऐसे गोविन्द को, इस जगत् से परे चौथे पद में रहने वाले बिन्दु को और परमानंद को,जो आनन्द से परे हैं, नमस्कार करता हूँ।

आम लोग इस जगत् के सुख को ढूँढते हैं। अब जगत् में सुख के साथ दुःख भी होगा। इस जगत् में तो सुख-दुःख, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, जय-पराजय, निन्दा-स्तुति का संघर्ष तो रहेगा। इस संघर्ष के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। वहाँ का सुख अस्थायी सुख है।

सत्यलोक से आगे अलख, अगम और अनामी से भी आगे की अवस्था में परमसन्त रहता है। वहाँ 'मैं' नहीं रहती, वहाँ न शरीर की 'मैं' रहती है, न मन की 'मैं' रहती है, न आत्मा की 'मैं' रहती है, न सुरत की 'मैं' रहती है। वहाँ शब्द की भी 'मैं' नहीं रहती है। इस अवस्था में जो रहता है, वही कह सकता है कि सारे सिद्धान्त वहाँ तक नहीं पहुँचे। यदि वह खुद वहाँ नहीं पहुँचा, तो कैसे कहेगा कि वह वहाँ तक पहुँचा था या नहीं पहुँचा था। मैंने महाराज जी से कहा कि यह बात बिल्कुल ठीक है कि

जितने भी सिद्धान्त हैं, वे आधे रास्ते तक जाकर ही अपनी दृष्टि बता रहे हैं। शास्त्र भी ग़लत नहीं है बल्कि शास्त्रों पर चलने वाले सम्प्रदायवादी भूल कर गये, क्योंकि उन्होंने एक-दूसरे की बात को न सुना, न समझा। इसलिए स्वामी जी महाराज ने कहा-

खट शास्त्र बुद्धि चलाया
अन्ध मिल धूल उड़ाया।

जो शब्द महाराज जी को अखरे थे, वे शब्द मुझे नहीं अखरे क्योंकि शास्त्रों को चलाने वाले सच्चे थे। सोचते-सोचते एक हालत ऐसी आती है, जिसमें सोचने के लिए कुछ नहीं रह जाता। कुछ सोचा नहीं जा सकता, लेकिन अनुभव हो जाता है। कणाद ऋषि ने वैशेषिक दर्शन लिखा। उन्होंने सारे जगत् का विश्लेषण करते-करते अनुभव किया कि हर चीज़ के अन्दर अणु-अणु के अन्दर उस मालिक की झलक है। उन्होंने अन्दर जाकर महसूस किया कि ज़र्रे-ज़र्रे में उस मालिक की झलक है। दाता दयाल जी महाराज ने भी कहा है-

जहाँ आँख खोली वहीं तुझको पाया।
कहीं ज्योति था तू कहीं था तू छाया॥

यह हालत सन्त की होती है। इसलिए सन्त किसी को अच्छा-बुरा नहीं मानता। सांख्य वालों ने प्रकृति और पुरुष को माना अर्थात् ये प्रकृति-पुरुष तक पहुँचे। हमारा राधास्वामी मत भी प्रकृति और पुरुष को मानकर चलता है। इस बात को भी कहता है कि प्रकृति से अलग हो जाना, कर्मों का क्षय कर देना, प्रकृति के पर्दों को हटा देना ही राधास्वामी हालत में पहुँचना है। यही बात सांख्य के रचियता कपिल ऋषि ने कही है। पतंजलि ने योगशास्त्र लिखा। उन्होंने कहा कि उस हालत पर पहुँचने के लिए तुम अपनी सारी चित्तवृत्तियों को समाप्त कर दो। परमदयाल जी महाराज ने मेरी एक किताब की भूमिका लिखी है, जिसमें उन्होंने पतंजलि का कथन

भी दिया है- पतंजलि के अनुसार ''**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**'' अर्थात् सब चित्तवृत्तियों को समाप्त कर देने से, व्यक्ति उस हालत में पहुँच जाता है जिसमें भेदभाव सब समाप्त हो जाते हैं।

किसी स्थूल चीज़ से प्यार करना चित्तवृत्ति में फँसना है। इसलिए परम दयाल जी महाराज कहते थे कि अगर कोई व्यक्ति गुरु के शारीरिक रूप को मानकर के समझता है कि उसको मोक्ष मिल जायेगा या वह निजधाम पर पहुँच जायेगा, तो वह ग़लत है। अक्सर लोग मोक्ष का मतलब मरना समझते हैं। लेकिन मोक्ष का मतलब है कि इसी जीवन के अन्दर पूर्णता को पूरी आज़ादी को प्राप्त करना। किसी चीज़ का बन्धन नहीं हो। आज़ाद कौन है? आज़ाद वह व्यक्ति है, जो मालिक का स्वरूप बन जाता है। मालिक की तरह शरीर के अन्दर रहता है। इसी का नाम मोक्ष है। जब तक तुम स्थूल के साथ बन्धे हुए हो, पूर्णता को पूरी आज़ादी को प्राप्त करना कठिन है। इस जगत् में कोई बिरला ही आदमी होता है, जो संसार का त्याग कर देता है। पतंजलि ने त्याग के लिए योग बताया है, जिसमें अष्टांग योग को भी बताया, जो इस प्रकार है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

प्रत्याहार में ज्ञानेन्द्रियों को बाहर से हटाकर अन्दर ले जाना होता है। राधास्वमी मत भी इसी बात को कहता है कि तीन ज्ञानेन्द्रियों के अन्दर ले जाने से, अन्दर शब्द सुनने से, उसमें विलीन हो जाने से, दुनिया के सारे आभास, मन के सभी झगड़े समाप्त हो जाते हैं। लेकिन ये आभास कुछ देर के देर के लिए ही समाप्त होते हैं। क्योंकि जब मनुष्य शब्द योग से नीचे उतरता है, तो फिर से दुनिया के सभी आभास होने लगते हैं। परम दयाल जी महाराज कहते थे ''मैंने इतना अभ्यास किया, शब्द सुने, प्रकाश देखे; लेकिन इसके बाद भी क्या मुझे क्रोध नहीं आया? ये आभास कब समाप्त हुए, जब मैंने यह अनुभव कर लिया कि जितने भी मेरे अनुभव हैं, असली

नहीं हैं। असली तो वह हालत है, जहाँ पहुँच कर मुझे यह होश नहीं रहता कि **''मैं हूँ''** और यह भी होश नहीं होता कि **''मैं नहीं हूँ''**। मेरी हालत यह कब आई? जब मुझे पता चला कि तुम मेरा रूप देखते हो, पर मैं नहीं होता। आपका गुरु के रूप को देखना बिल्कुल ठीक है और आपको देखना भी चाहिए। यदि आप गुरु के रूप को नहीं देखते, तो आप अधूरे हैं। गुरु का रूप देखने का अनुभव आपको कब होगा? जब आप अपने इष्ट को पूर्ण मानकर रात-दिन उसी के ध्यान में रहेंगे। यदि आपको रूप प्रकट होने का अनुभव न भी हो, तब भी चिन्ता की बात नहीं है। लेकिन उसका रूप हमेशा आपके मन के अन्दर बसा रहे। इससे भी आपको शान्ति मिलेगी।

सन्तमत ने या गुरुमत ने पतंजलि के अनुभव की ओर इशारा करते हुए कहा है-

तीन बन्ध लगायकर सुन अनहद टंकोर।
नान सुन्न समाधि में नहीं साँझ नहीं भोर॥

हम आपसे यह नहीं कहते कि आप दोनों कानों में उँगली देकर बैठ जाओ। लेकिन जब आपको सन्तमत, आपको स्वयं ही वैराग्य आ जायेगा। यहाँ वैराग्य आ जायेगा। यहाँ वैराग्य का मतलब है कि आप गृहस्थ के अन्दर रहते हुए, सब वस्तुओं का भोग करते हुए, अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए, मालिक से जुड़े रहेगे। यह सहज रास्ता है। लेकिन लोग तो कठिन रास्ते से जाना चाहते हैं। पहिले एक इष्ट बनाओ उसको पूर्ण मानकर उसे अपनी खोपड़ी में रखो। उस इष्ट से इतना प्यार करो कि सब कुछ भूल जाओ। जब तुम स्वयं को भूल जाओगे, तब तुम्हारी प्रवृत्ति दुनिया में नहीं लगेगी। तुम लालच में नहीं फँसोगे। तुम्हारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार स्वयं ही समाप्त हो जायेंगे। यह प्रेम की पराकाष्ठा है। सन्तमत या राधास्वामी मत की यह ख़ासियत है कि इस मत के अन्दर

यह अवस्था आसानी से मिल जाती है, जिसको पाने के लिए पहिले ऋषि-मुनि हज़ारों वर्षों तक कोशिश किया करते थे, अनेक रास्ते अपनाते थे, तब भी वह अगोचर को नहीं पा सके। लेकिन जो पा गया, जो शरणागत हो गया, उसे नीचे के दर्जों की कोई परवाह नहीं। यही कारण था कि स्वामी जी महाराज ने कहा कि दूसरे धर्म वाले नहीं पहुँचे। जहाँ तक पहुँचे, उसी को अपना कहने लगे। इसीलिए विष्णु पुराण में, विष्णु पुराण को ही सब कुछ समझते हैं। लेकिन जब गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलोगे, तब उस सर्वाधार परमतत्त्व को प्राप्त कर सकोगे। यह विरोध नहीं है। यह तो जहाँ पर आप बैठे हो, वहीं से आपको ऊपर उठाकर ले जाना है। यह सद्गुरु का काम है कि आप जिस वातावरण में बैठे हो, वहीं पर आपको मालिक का साक्षात्कार करा देगा, लेकिन यह तब होगा, जब तुम्हारी अवस्था शरणगति की होगी। ये शर्त है।

गोविन्दं परमानंदं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्।

गुरु के अन्दर जो पूर्ण है, सत् है, बस उसको नमस्कार कर लिया। नमस्कार करते ही आपका काम बन जायेगा।

साधु की संगत गुरु की सेवा, सहज ही काम बनावे।

यह राज़ है। परम दयाल जी महाराज ने इस राज़ को खोला। मैं उनसे भी ज़्यादा खोलकर बता रहा हूँ कि पहिले सद्गुरु को ढूँढो। जब सद्गुरु मिल जाये, तो एक पतिव्रता स्त्री की तरह से उसके साथ जुड़ जाने से आपका काम बन जायेगा। जो एक सद्गुरु को नहीं मानता, वह बड़ी भारी ग़लती करता है। जब एक बार स्वीकार कर लिया, तो मन कभी भी विचलित नहीं होना चाहिए। जब मन विचलित होगा, तब कोई न कोई कष्ट अवश्य आयेगा। मानने का मतलब है कि तुम स्वयं वैसे ही बन जाओगे।

अमेरिका में एक सज्जन है। परम दयाल जी महाराज 1972 में जब अमेरिका उनके यहाँ गये, तो मुझे भी अपने साथ ले गए। उस समय वह सज्जन इंजीनियर थे। उन्होंने महाराज जी के पहुँचने पर बड़ी श्रद्धा-भक्ति दिखाई। महाराज जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद कब फलता है, जब मनुष्य सचमुच प्यार करता है। वह सज्जन कैलिफोर्निया में अपना काम करने लगा। महाराज जी के आशीर्वाद से काम चल गया और वह अरबपति बन गया। करोड़ों रूपये का उसने मकान बनाया। महाराज जी जब भी जाते तो, बड़ी इज्जत करता था। परम दयाल जी महाराज के चोला छूटने के कई साल बाद, उसने मुझे अपने घर बुलाया। मैंने महसूस किया कि उसकी श्रद्धा में फर्क था। उसके माँ-बाप आये थे, वे उसे मनाते थे। उनके कहने से उसने मन्दिर के लिए सिर्फ सौ डालर दिया और महेश योगी को उसने लाखों डॉलर दिये। मैं यह नहीं कहता कि मुझे दो। मुझे आपके पैसे की ज़रूरत नहीं है। अब उस सज्जन को एक साथ घाटा आया। हालत यहाँ तक बिगड़ गई कि शाम को खाने के लिए पैसे नहीं होते थे। वह भारत आया और मुझसे मिलकर कहने लगा, ''मुझसे बड़ी भूल हो गई, मुझे क्षमा कर दें।'' मैंने कहा, ''कोई बात नहीं, चिंता मत करो, सब ठीक हो जायेगा।'' बाद में मुझे पता लगा वह किसी ज्योतिषी के चक्कर में था। जब मैं अमेरिका गया, तो वह सज्जन और उसकी पत्नी मेरे पास आये। उसकी पत्नी ने बड़े अहंकार से कहा, ''हमारे से क्या भूल हो गई है?'' ''मैंने कहा कि तुम्हारे अन्दर अहंकार बहुत है। तुमने महेश योगी के पास जाकर गलती की है।'' वह दोनों चले गये। एक बार वह फिर मिलने आया। बड़ी नम्रता से कहा, ''महाराज! मेरी यह हालत कैसे हो गई?'' बड़ी मुश्किल से उधार पैट्रोल लेकर मैं आपके पास आया हूँ।'' मैंने कहा, ''अब तुम्हारा कल्याण हो जायेगा, क्योंकि तुम्हारी श्रद्धा वापिस आ गई।'' मैं उनके घर गया और रहा भी। अब हालत कुछ सुधर गई है।

मैं आपको बता रहा था कि थोड़ी-सी कमी आने से तुम्हारा काम नहीं बनेगा। खासकर वे लोग जो महाराज परम दयाल जी के समय से मन्दिर को आर्थिक सहायता देते आये हैं, उसे बन्द करने से हानि तो होगी ही, घमण्ड तो टूटेगा ही। यह प्रकृति का नियम है। हम तो जो हैं, सो हैं, गुरु के प्रति तो तुम दृढ़ संकल्प रखो। पहिले शब्द में गुरु को क्या माना है?

आये गुरु महाराज री अपने दासी घर।

देखा जाये तो सुरत अपने गुरु को मना रही है। सुरत आपके अन्दर है और राधास्वामी को स्वामी मानकर बुला रही है।

आये गुरु महाराज री अपने दासी के घर।

मैंने पहिले भी आपको बताया था कि अपनी दासी के घर नहीं, वह गुरु-गुरु नहीं जो दूसरों को दास-दासी बनाता है। दास-दासी बनाने का तो सवाल ही नहीं उठता। गुरु तो तुम्हें आज़ाद कर देता है। तुम्हें आज़ाद करने के लिए ही तो बन्धन लगाये हैं। वह बन्धन तुम्हें निर्बन्ध कर देंगे। दास-दासी तो वह बनाता है, जो दुनिया के अन्दर फँसा हुआ है। सद्गुरु कभी किसी को अपना भोजन नहीं बनाता। वह तो आज़ाद कर देता है। यदि तुम उसके पास इस दृष्टि से गये हो कि वह तुम्हें विलीन करके अपने जैसा ही बना देगा। इसीलिए इस शब्द में कहा है-

आये गुरु महाराज री अपने दासी के घर।

अपनी दासी के घर नहीं। अपने घर के अन्दर आये। वह घर तुम्हारा मन है और मन '**शिवसंकल्प**' है, तो गुरु महाराज जायेंगे कहाँ? तुम्हारे मनरूपी घर को अपना घर मानकर आयेंगे। '**आये गुरु महाराज**'। कह देने से कुछ नहीं, बल्कि महाराज को मन में बैठाओ और इतना प्यार करो कि तुम शरीर, मन और आत्मा तक को भूल जाओ। तुम एक कदम चलोगे, तो वह लाख कदम चलकर तुम्हारे पास आयेगाऔर तुम्हें अपने में मिला लेगा।वह तुम्हें अपने में विलीन करने के लिए ही तो आया है।

पहिले दाता शिष्य भया, तन, मन अरपा शीश।
पाछे दाता गुरु भया, नाम दिया बख्शीश॥

यह सारा जगत् उसी की सृष्टि है, उसी का अंश है, उसी ने ही अपने-आपको एवं अपने अंशों को जगत् में भेजा है और वह स्वयं ही उन अंशों को वापिस निजधाम ले जाने के लिए गुरु के रूप में प्रकट होता है। सभी जीव आरम्भ में स्थूल जगत् में मालिक का प्रेम अनुभव करने के लिए आये; किन्तु वे अपने उद्देश्य को भूलकर माया-जाल में फँस गये। उन्होंने धारा में बहकर संसार में सुख अनुभव करने का प्रयास किया, किन्तु उन्हें स्थायी सुख न मिल सका। इस धारा में बहते हुए जीवों को अपने मालिक की याद आई। इस तड़प से प्रेरित होकर जब उन्हें सच्चा सद्गुरु मिल गया तो उन्होंने **'धारा'** से **'राधा'** बनकर शरीर, मन और आत्मा के अनुभव से ऊपर उठकर अपने-आपको पूरी तरह से सद्गुरु को अर्पित कर दिया। परमतत्त्व स्वयं उनकी तड़प आप से मिल लिया अर्थात् उन्हें राधास्वामी अवस्था में पहुँचने का भेद बता दिया। किन्तु उसकी यह दया जीवों की कुर्बानी के कारण नहीं, बल्कि अनायास करूणा के कारण हुई। यही ऊपर दिये गये शब्द का भाव है।

सद्गुरु बिना किसी स्वार्थ के जीव को ऊपर उठाता है, क्योंकि उसे यह पूर्ण आभास है कि जीव उसी का ही अंश है। जब जीव अपनी अपूर्णता का अनुभव करके अपने-आपको समर्पित करते हुए दासभाव को प्रकट करता है और इस प्रकार उसका बन कर संसार के विचारों से मुक्त होकर पवित्र हो जाता है, तो सद्गुरु उसके अन्दर प्रवेश करता है। यही वास्तव में इस शब्द की पहली कड़ी का अर्थ है।

लाई प्रेम की थाली दासी, मंगल आरति साज री।
लख गुरु प्रीतम वर, आये गुरु महाराज री॥

यहाँ पर दाता दयाल जी महाराज प्रेममय भक्त को उसी प्रकार उत्सुक और अपने प्रीतम की इन्तज़ार में भावुक बता रहे हैं जैसे कि एक दुल्हन दूल्हा की प्रतीक्षा की उत्सुकता में थाली में दीपक आदि सजाकर दूल्हा के आने पर उसकी आरती करती है। क्योंकि उसको वह अपना वर मानती है एवं स्वामी मानती है। इसी प्रकार साधक या सत्संगी अपने स्वामीरूपी वर को प्राप्त करके उसकी आरती करता है;किन्तु वह आरती मानसिक होती है और वही मानसिक आरती उसके गुरुरूपी पति के प्रति श्रद्धा और प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

प्रीति-प्रतीति के भूषण वस्तर अरपे सन्त समाज री।
मन धन न्योछावर॥

जिस प्रकार वर-वधू के सम्बन्धी एवं वर-वधू का समाज उपहार के रूप में दूल्हा को भूषणवस्त्र आदि का दहेज देते हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक विवाह के समय वर-वधू के सम्बन्धी अर्थात् उसके भाव और विचार प्रीति और श्रद्धारूपी वस्त्र अपने दूल्हे को भेंट करते हैं। उसके भाव और शुद्ध होने के कारण सन्त विचार समाज कहे गये हैं। दुल्हन या साधक अपने शरीर, मन और आत्मा को भूल कर सद्गुरु रूपी दूल्हा में विलीन हो जाती है।

चरन कमल लग उमंग बढ़ाया,
मनमानो किया काज री,
माँगा भक्ति वर,
आये गुरु महाराज री॥

जिस प्रकार दुल्हन-दूल्हा के चरण छूकर प्रेमभाव से ओत-प्रोत होकर दूल्हारूपी वर को प्राप्त कर लेती है, उसी प्रकार साधक सद्गुरु के चरणों में अत्यन्त प्रेम का अनुभव करता हुआ, सद्गुरुरूपी दूल्हा से पराभक्ति का वर प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार दुल्हन की वरप्राप्ति की इच्छा पूरी हो जाती है।

शबरी के बेर राम बन खाये, रख ली दया से लाज री।
करुण के सागर, आये गुरु महाराज री॥

जो जिस भाव से सद्‌गुरु को प्राप्त करना चाहता है, उसी भाव के अनुसार ही सद्‌गुरु उसकी इच्छा पूरी करता है। प्रेम की पराकाष्ठा के कारण सद्‌गुरु का वही रूप प्रकट होता है, जिससे सत्संगी की इच्छा पूरी हो सकती है। रामायण की कथा में शबरी भीलनी का ज़िक्र आता है। शबरी को यह विश्वास था कि उसका इष्ट साक्षात् मनुष्य के रूप में उसके घर आयेगा। वह अपने घर के रास्ते को फूलों से सजाती रहती थी। इस विश्वास में कि मनुष्य के रूप में भगवान् उसके घर आकर भोजन करेंगे, शबरी ने बहुत से मीठे बेर चख-चख कर भगवान् के भोजन के लिए इकट्ठे कर लिए थे। उसकी इस इच्छा को पूरा करने के लिए और उसकी भावना की लाज रखने के लिए भगवान् ने राम का रूप धारण करके उसके जूठे बेरों को खाया।

इस प्रकार के अनेक चमत्कारी उदाहरण भक्तों के जीवन में और सत्संगियों के जीवन में देखने में आते हैं। नरसी भक्त की हुण्डी तारने और उसकी बेटी के विवाह के समय सोना, आभूषण, वस्त्र और दहेज आदि उपस्थित होने के चमत्कार विश्वविदित हैं। हमारे सत्संगी प्रतिदिन ऐसे चमत्कारों का अनुभव करते रहते हैं। इन घटनाओं का मुख्य कारण सच्चा प्रेम, अगाध विश्वास और श्रद्धा है, गुरु का स्थूल रूप नहीं है। जब सद्‌गुरु आपकी दुनियावी इच्छाओं को पूरा करके तुम्हारी सांसारिक लाज रखने का माध्यम बन जाता है, तो यदि तुम उसे परमतत्त्व मानकर उससे अगाध प्यार करोगे, तो तुम परम पद को प्राप्त कर लोगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि परमतत्त्व आधार, जब मनुष्य का चोला धारण करता है, तभी वह करुणा का सागर बन जाता है। करुणा एक मानवीय अनुभव है। इसलिए मानवीय चोले में ही परमतत्त्व आधार अपने भक्त के भावों से प्रभावित होकर उसकी लाज रख लेता है।

राधास्वामी दीन दयाला हुए प्रसन्नचित्त आज री।
दासी के घर आये गुरु महाराज री॥

इस कड़ी में राधास्वामी पराभक्ति का भेद छुपा हुआहै। जब तक मनुष्य अपने अहंकार को छोड़कर, दीन-हीन नहीं होता, तब तक सद्‌गुरु पूरी तरह से उस पर प्रसन्न नहीं होता। राधास्वामी सद्‌गुरु के रूप में असहाय लोगों के लिए प्रकट होता है। जो व्यक्ति अपने प्रयास पर या अपने बलबूते पर विश्वास रखता है, वह शरणागत नहीं हो सकता है। इसलिए उसका काम बनने में देरी लगती है। भक्त को हमेशा नम्र होना चाहिए और अपने आपको पूर्ण रूप से सद्‌गुरु की शरण में प्रस्तुत करना चाहिए। वास्तव में, यह शरणागत की अवस्था अभयदान की अवस्था है। ज्योंहि भक्त अपने अहंकार को समाप्त करके खाली हो जाता है, तो सद्‌गुरु उसका अहंकार बनकर उसके सभी काम सहज सम्पन्न करा देता है। इसीलिए यहाँ कहा गया है कि सद्‌गुरु राधास्वामी निर्बल दीन-हीन असहाय लोगों का आश्रय है और उनकी दीनता के कारण तुरन्त प्रसन्न हो जाते हैं।

राधास्वामी!

॥ सूचना ॥

॥ फ्री होम्योपैथिक डिस्पैंसरी ॥

सूचित किया जाता है कि 1 दिसम्बर, 2013 से फ्री होम्योपैथिक डिस्पैंसरी, मानवता मन्दिर, होशियारपुर में हर देसी महीने के प्रथम रविवार को (मासिक सत्संग वाले दिन) भी सुबह 12.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक खुली रहेगी। सभी इसका लाभ उठा सकते हैं।

सचिव
मानवता मन्दिर होशियारपुर।

सत्संग दयाल कमल जी महाराज
गुरु पूजा

दिनाँक 22-7-2013

आज का दिन संतमत, गुरुमत व सनातन धर्म में बहुत पूजनीय माना जाता है। क्यों माना जाता है? आज के युग में तो गुरु पूजा आडम्बर बन कर रह गया है। आज का दिन उस महान ऋषि का जन्मदिन है, जिसने सनातन धर्म को जन्म दिया, जिसने वेद, भागवत-गीता, महाभारत लिखे यह दिन उस महान संत को समर्पित है और उनका नाम है - ऋषि वेद व्यास। मैं उस महान् ऋषि को प्रणाम करता हूँ। उनके साथ -साथ इस भारत भूमि पर या इस ब्राह्मंड में, इस पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ भी जो संत आए, महापुरुष आए, चाहे वह हिन्दू धर्म से आए, चाहे वह गुरु ग्रन्थ साहिब को जन्म देने वाले थे, चाहे वह इस्लाम धर्म को पैदा करने वाले थे, चाहे जिन्होंने ईसाई धर्म शुरू किया, पारसी धर्म शुरु किया, यहूदी धर्म शुरु किया वे जितने भी संत थे जिन्होंने इस मानव जाति का किसी न किसी रूप से मार्गदर्शन किया, मेरा उन सब महापुरुषों को भी आज के दिन नमस्कार है। उनके उस परमतत्व को, उस परम तत्व के अवतार को जिसके बारे में दाता दयाल जी महाराज ने अपने कर-कमलों में लिखा है। आज तक संतमत में, गुरुमत में कोई ऐसा शिष्य नहीं हुआ है। जिसके बारे में गुरु ने ऐसा लिखा हो। परमदयाल जी महाराज के बारे में उनके गुरु दाता दयाल जी ने लिखा-

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा।
दु:खी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देशा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी
तेरा रुप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आए परमदयाल स्नेही॥

हम सौभाग्यशाली हैं जिन्हें ऐसे सद्गुरु मिले। राज-ए-हकीकत को पर्दे में रखा हुआ है। सच्चाई क्या है? सच्चाई लोगों को नहीं बताई जा रही। वह पर्दा उठाया नहीं जा रहा, बल्कि मानव-जाति को जाल में फँसाया जा रहा है। मेरे सद्गरु ने दया की, वे परमदयाल जी के रुप में आए और उन्होंने सब पर्दे खोल दिए। इन्सान को यह बता दिया कि तू वास्तव में क्या है। अगर आज के दिन मैं उस महापुरुष को याद नहीं करता, अगर उस महापुरुष को मैं अपने-आपको समर्पित नहीं करता और धन्यवाद नहीं करता, तो मैं गुरु - पूर्णिमा नहीं मना रहा हूँ केवल अपना नाम जपा रहा हूँ। उन्हीं का नाम है, उन्हीं का काम है उन्होंने जो बताया जिस रास्ते पर मुझे चलाया और आदेश दिया सच्चाई, असलियत का भेद दे दिया। **मेरा शरीर तेरा गुरु नहीं है, क्या ऐसे कोई कहता है?**

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्य का कछु न लेय॥

आज के दिन वह गुरु क्या है? जिसकी पूजा करनी है अगर तुम्हें यह पता नहीं तो तुम पूजा क्या करोगे? अगर तुम शरीर के साथ बंधे रहे जैसा मुझे मेरे दाता परमदयाल जी महाराज ने कहा, बच्चा तू मेरे चोले के साथ कब तक बँधा रहेगा? मेरा प्यार जो उनके शरीर के साथ था वह उन्होंने हटा लिया। यह शरीर सदा रहने वाला नहीं है। जो मैं कहता हूँ, जो शिक्षा तुम्हें दी है तुमने उस पर चलना है और यही मेरे जीवन का मार्ग है। वह गुरु क्या है? अगर गुरु का तुम्हें पता नहीं है और किसी आदमी का नाम लेकर

तारीफ कर रहे हो। मेरे गुरु परमदयाल जी महाराज की शिक्षा सारे ब्राह्मंड में फैली हुई है। जो – जो वचन उनके मुखारविन्द से निकले वह ब्राह्मंड में है। जो – जो महापुरुषों ने कहा वह ब्राह्मंड में है। तुम आँख बन्द करो, मन को इकट्ठा करो वहाँ से शक्ति ले लो तुम्हें सब कुछ मिलेगा। जैसे टेलीविज़न के कई चैनल हैं वैसे ही गुरु का भी एक चैनल है उसको स्विच (ऑन) करना सीखो किसी अनुभवी आदमी के पास बैठो वह तुम्हें बता देगा कि यह स्विच है। आज मैं आपको दाता– दयाल जी महाराज का एक शब्द सुनाऊँगा। मैं जब भी यहाँ आता था खाली आता था और भरकर जाता था। आज भी आता हूँ तो भरकर ही जाता हूँ। मैं भी चाहता हूँ कि तुम भी आज भरकर जाओ। तुम्हारे मन में संदेह न रहे, तुम्हारे मन में कोई शंका न रहे, तुम्हारे मन में कोई चिन्ता न रहे, तुम्हारे मन में कोई फिक्र न रहे तुम उस मालिक के हो जाओ जैसे कोई छोटा बच्चा स्कूल में पढ़ता है और वह हर चीज़ की माँग अपने पिता जी से करता है। पिता जी उसकी हर माँग पूरी करते हैं। जरा बच्चे बनकर तो देखो मगर तुम तो बाप बने हुए हो। गुरु के बच्चे बन जाओ। परमदयाल जी महाराज ने भी एक बार यहाँ कहा था जो यहाँ आएगा उसका दोबारा जन्म नहीं होगा।

गुरु रुप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी

अज्ञानी कौन होता है? अँधेरे में रस्सी पड़ी है और वह कहता है साँप है, लाठी ले आओ वहाँ साँप है वह अज्ञानी है। परमदयाल जी महाराज ने मेरे साथ बहुत खेल खेले। अरे! मैं अठारह साल का बच्चा ही तो था। परमदयाल जी महाराज ने समाधि में पकड़ा और इतनी ऊपर आकाश में ले गए। उन्होंने मुझे ऊपर का सारा ब्राह्मंड दिखा दिया। मैंने उनसे कहा कि पिता जी आपने मुझे यहाँ– यहाँ सैर करा दी। वह कहते हैं बेटा मैं नहीं था वह तेरा अपना – आपा था। मुझे विश्वास नहीं आया। यह 1969 की बात है।

मैं आपको यह बता रहा हूँ कि गुरु कैसे समझाता है। 1972 में मेरे पिता जी बीमार हुए। उन्होंने मेरे छोटे भाई को बुलाकर कहा कि प्रौफेसर

को चिट्ठी लिख। उन्होंने लिखा कि 2 से 4 बजे के बीच में दो सफेद कपड़ों वाले आए। वे पहले पाँव की तरफ खड़े हुए, फिर मेरे सिर की तरफ आए और मेरी जान (मेरा सूक्ष्म) निकाली और ले गए। वहाँ जाकर पिता जी देखते हैं कि बड़े– बड़े ग्रंथ रखे हुए हैं और जीवों की लाईन लगी हुई है। पिता जी को भी लाईन में खड़ा कर दिया। पिता जी सोचने लगे कि यह तो मुझको ले आए। सूक्ष्म शरीर में 13 दिन तक पूरी जागृति होती है। वहाँ पिता जी ने कहा कि तुम मुझे यहाँ कैसे ले आए? मेरा बेटा एक बहुत बड़े महापुरुष का शिष्य है। परमदयाल जी महाराज का शिष्य है, मैं अभी उनको बुलाता हूँ तुम्हें मुझे छोड़ना पड़ेगा? उन्होंने मुझे याद किया कि बेटा मैं तकलीफ में हूँ परमदयाल जी महाराज को लेकर जल्दी आ जा और मुझे इनसे छुड़ा। मैं और परमदयाल जी महाराज वहाँ पहुँच गए। मैंने परमदयाल जी महाराज से कहा कि मैंने तो अब तक इनकी पूरी तरह से सेवा भी नहीं की इन्हें इनके चंगुल से छुड़ाओ। परमदयाल जी महाराज ने कहा ईश्वरदास जी (मेरे पिता जी का नाम) को छोड़ दो। उन्होंने हाथ जोड़कर मेरे पिता जी को छोड़ दिया और वह दोनों आदमी पिता जी को घर पर छोड़कर गए। उन्होंने सारी बात मेरे भाई को बताई, चिट्ठी लिखवाई और सारी बात मेरे पास बिलासपुर में पहुँच गई। जैसे ही चिट्ठी मिली मैं पत्नी और बच्चों को लेकर यहाँ होशियारपुर में आ गया।

मेरे दाता यहाँ बैठे हुए थे कुछ सत्संगी भी बैठे हुए थे। मैं सीधा गया और उनके चरणों में शीश झुकाया मैंने वह चिट्ठी उनके हाथ में दे दी। उन्होंने चिट्ठी देखी और कहा बेटा यह तो पंजाबी में है और पंजाबी मुझे आती नहीं तू मुझे पढ़कर सुना। मेरे प्यारे सत्संगी भाई– बहनो मैंने एक– एक अक्षर पढ़कर सुना दिया। हजूर हुक्का पी रहे थे और मेरी चिट्ठी सुन रहे थे। जब चिट्ठी खत्म हो गई तो हुक्का छोड़कर बोले बच्चा अब तू बता तेरा पिता यह कहता है तू मेरे साथ वहाँ था क्या तू वहाँ था? अगर तू था तो मैं भी था। अगर तू नहीं था तो मैं भी नहीं था। मैंने हाथ जोड़कर पिता जी से कहा कि मुझे कुछ भी पता नहीं। बस यह सब तेरे अज्ञान को दूर करने के

लिए हुआ है। न वहाँ तू था, न वहाँ मैं था। हाँ , तेरे पिता जी नेक आदमी हैं इसलिए सफेद कपड़े वाले लेने आए। अगर उनके ख्याल गन्दे होते तो उन्हें लेने वाले काले कपड़े वाले आते। उस दिन के बाद परम-पिता परमदयाल जी महाराज का रुप प्रकट होना बन्द हो गया। मेरा अज्ञान चला गया। तुम्हारा अपना विश्वास है गुरु नहीं आता, कोई देवी नहीं आती, कोई देवता नहीं आता। लोग पागल हो गए किसी ने जुबान काट कर देवी के आगे रख दी। किसी ने बेटे को चढ़ा दिया। अगर दुनिया अज्ञानी नहीं है तो क्या है? ऐ इंसान जैसा मेरे दाता ने दर्द-ए-दिल से कहा- कोई गुरु, देवी, देवता बाहर से तुम्हें दर्शन देने के लिए नहीं जाता। जो कुछ भी है वह तुम्हारा अपना संकल्प है तुम्हारा अपना ख्याल है बाकि कुछ भी नहीं है। इसलिए अज्ञानी नहीं बनना।

गुरु रुप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी

लोगों की धारणा है, गुरु मरने के समय लेने आता है बुरा नहीं मानना, कोई गुरु नहीं लेने आता। गुरु का अपना कल्याण नहीं हुआ, वह भी ब्राह्मंड में घूम रहा है। वह वहीं पर बुला रहा है मैं भी यहाँ हूँ, तू भी यहाँ आजा वह न खुद आगे जा रहा है, न आपको जाने दे रहा है। 'जहाँ हम लटके, वहाँ तुम लटको' गुरु तो वह है जो शरीर , मन , आत्माओं की सीमा से परे ले जाए। अब सवाल यह है कि कब ले जाए? जब तुम्हारी सांसारिक इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँ। जब खाने को रोटी न हो, पहनने को कपड़ा न हो, रहने को घर न हो तब कुछ करने की इच्छा नहीं होती- मेरे दाता सत्संग के बाद आशीर्वाद दिया करते थे- तुम्हें पहनने को कपड़ा मिले, तुम्हें अच्छी सेहत मिले, रहने को मकान मिले और मन को शान्ति मिले वह यह आशीर्वाद देते थे। अब जिसके पास यह चार चीजें हैं वह क्या भाग्यशाली नहीं होगा। गुरु पहले तुम्हें सम्पन्न करता है। गुरु तुम्हें भूखा नहीं रखता। गुरु तुम्हारी गरीबी को दूर करता है। गुरु तुम्हें अपने-आप में ठहराता है। वह पहले तुम्हारी जिन्दगी को बनाता है। जब जिन्दगी बनेगी तब हस्ती का ज्ञान होगा, अगर जिन्दगी नहीं बनेगी तो हस्ती

का ज्ञान नहीं होगा। इसलिए अज्ञानी यहाँ अज्ञानता हटाता है। किसी को यहाँ अंधेरे में नहीं रखा जाता।

गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यौपार।
सो प्रानी अति मूढ़ है, कैसे जायें भव पार॥

कहते हैं आप गुरु को मनुष्य जानकर भक्ति का व्यवहार करते हैं। भक्ति क्या है? आप समझते हो गुरु के पास गए मत्था टेका, पैसे दिए प्रसाद लिया आशीर्वाद लिया और भक्ति हो गई। यह गुरु भक्ति नहीं है। गुरु भक्ति क्या है? तुम गुरू भक्ति अब कर रहे हो, इस वक्त आप गुरु की हाज़िरी में बैठे हो। परमदयाल जी महाराज गुरु भक्ति उसको कहा करते थे-

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन- सुनकर नित मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ लये तिस सार, काढ़ सार तिस करे आहार।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई , जग भव,भय सब गई गवाई।

शारीरिक रुप से पुष्ट कौन होता है? जिसकी खुराक अच्छी है। मानसिक रुप से कौन पुष्ट होता है? जिसका मनोबल ठीक है। आध्यात्मिक रुप से कौन पुष्ट होता है? जिसने गुरु की वाणी को समझा और उस पर चला। जो उस पर चलेगा वह पुष्ट होगा, केवल सुनने से काम नहीं चलेगा- खाओ, पचाओ, पचाओगे तो खून बनेगा। गुरु की वाणी सुनोगे, उस पर चलोगे, अनुभव करोगे तुम्हारी नस- नस बदल जाएगी, तुम्हारा रोम-रोम बदल जाएगा, तुम्हारे खून का दौरा बदल जाएगा। तुम्हारे खून का दौरा खत्म हो जाएगा। ब्लड़ - प्रैशर क्या होता है? टैंशन, कभी यह चिन्ता , कभी वह चिन्ता। लड़के की शादी नहीं हो रही तो चिन्ता, लड़के को नौकरी नहीं मिली तो चिन्ता, बेटी के बेटा नहीं हुआ तो चिन्ता, पोता नहीं हुआ तो चिन्ता। जब तुम सतगुरु का ध्यान करते हुए उसके नाम का सिमरन करते हुए जाओगे तो तुम्हारी चिन्ताएँ अपने -आप ही खत्म हो जाएँगी। तुम्हारी मनोकामनाएँ अपने आप ही पूरी होती जाएँगी। तुम्हारे

अन्दर तो बड़ा भारी बल्ब लगा हुआ है उसकी रोशनी इतनी ज्यादा होती है कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता। तुम अज्ञानता में भागे हुए हो। ऐ इन्सान जो कुछ भी है वह तेरे घट में है–

ढूँढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ,
मैं न काशी हूँ न मथूरा, मैं न गिर कैलाश हूँ।
तू हुआ मेरा तो मैं भी तेरा बन गया।
कर भरोसा तेरा मैं ही , तेरी सच्ची आस हूँ।

तुम्हारा विश्वास है गुरु, तुम्हारी आस है गुरु। उससे कभी मत डोलना।

परमदयाल जी महाराज के पास एक औरत आई। डॉक्टरों ने उससे कहा कि बच्चा नहीं हो सकता। पंडितों ने भी कह दिया कि तू बाँझ है। तेरे बच्चा नहीं हो सकता। परमदयाल जी की मौज थी– एक आम उठाकर माथे से लगाया और कहा कि जा बच्चा, ले जा तेरी मनोकामना पूरी होगी। वह औरत जाकर डॉक्टरों को कहती है 'डॉक्टर तेरी डॉक्टरी फेल'। तुम कहते हो, मेरे बच्चा नहीं होगा यह देख बाबा जी ने प्रसाद दिया है, दस महीने बाद तुझे बच्चा दिखा कर जाऊँगी। उसके दस महीने बाद लड़का पैदा हुआ, इसको कहते हैं विश्वास। मीरा की तरह विश्वास, जहर का प्याला पकड़ा हुआ है उसको बताया भी है कि इसमें जहर है मगर वह कहती है कि मेरे देवता का प्रसाद जहर नहीं हो सकता और वह उसे गट गट करके पी गई । तुम मानते नहीं, मानो, चलो और पाओ। यह वह रास्ता है इसमें इधर- उधर झाँकने की जरुरत नहीं है, इधर- उधर भटकने की जरुरत नहीं है। न इधर की सुनो, न उधर की सुनो केवल अन्दर की सुनो। वह आवाज तुम्हारे अन्दर है।

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान है , संशय में अटके॥

कबीर साहिब एक जगह लिखते हैं– गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु, वेद पशु संसार ....

सत्संग में क्या मिलता है – बिन सत्संग विवेक न होई, ज्ञान नहीं होता। उसकी कृपा के बिना तुम यहाँ आ भी नहीं सकते। जब उसकी कृपा होगी तब तुम यहाँ आओगे नहीं तो धक्के खाओगे।

जब दया गुरु की हुई चरणों की भक्ति मिल गई। हम पशु नहीं हैं। हमें हमारे दाता ने मानुष के झण्डे के नीचे खड़ा किया है। जहाँ न कोई जात-पात है, न कोई धर्म है, न कोई संस्था है, न कोई परम्परा है कोई चीज़ नहीं है। हम उस मालिक-ए-कुल के सब बच्चे हैं। कोई छोटा है, कोई बड़ा है, कोई स्त्री है, कोई पुरुष है, कोई काला है, कोई गोरा है, कोई धनी है, कोई निर्धन है यह सब हमारे कर्म हैं लेकिन हैं हम सब उसकी औलाद। दाता दयाल जी हमें समझाने आए हैं कि आखिर गुरु है क्या –

गुरु को मानुष जानकर, मानुष करो विचार।
सो नर मूढ़ गँवार है, भूल रहे संसार॥

जो गुरु को इंसान मानकर कि वह होशियारपुर के रहने वाले हैं, उनके इतने बच्चे हैं। वे यह करते थे, वे वह करते थे। उनका सामाजिक जीवन देखते हैं। वे बेचारे अभी मूढ़ हैं उनको कुछ नहीं पता। उनको नहीं पता कि गुरु क्या है –

गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।

उन्होंने यह बहुत महत्वपूर्ण बात कही है –

गुरु को मानुष जानते, टेढ़ी चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल॥

भेड़ चाल क्या होती है? मैं कॉलिज में पढ़ता था। मेरा हौसला न पड़े महाराज जी से यह पूछने को, कि भेड़चाल क्या होती है? मैंने सोचा कॉलिज में पढ़ता हूँ अपने प्रौफेसर से पूछूँगा कि भेड़ चाल क्या होती है? मेरे अंग्रेजी के प्रौफेसर थे, वे मुझसे बहुत प्यार करते थे। मैंने उनसे कहा सर, आज मैं आपसे अजीब सा प्रश्न पूछने जा रहा हूँ कि भेड़चाल क्या

होती है? उन्होंने मुझसे कहा कि अरे! कमल, तू कहाँ रहता है? मैंने कहा कि मैं तो गाँव में रहता हूँ अरे! गाँव के बच्चों को यह नहीं पता कि भेड़चाल क्या है? मैंने कहा कि मेरे गाँव में भेंड़े नहीं है बकरियाँ हैं। उन्होनें कहा कि भेड़चाल यह है कि जब भेड़ें आ रही हों तो एक रस्सी थोड़ी ऊँची करके दोनों किनारों से बाँध दो। पहले एक भेड़ आएगी वह रस्सी से टकराएगी और छलाँग लगाकर दूसरी ओर जाएगी। उसके बाद दूसरी भेड़ आएगी वह भी रस्सी से टकराएगी और छलाँग लगाकर दूसरी ओर जाएगी। ऐसे ही उनके पीछे वाली भी छलाँग लगाती जाएगी। जब चार-पाँच भेड़ें निकल जाएँ तो रस्सी को निकाल दो। अब जितनी भी भेड़ें जाएँगी छलाँग लगाती ही जाएँगी, इसको भेड़चाल कहते हैं। जिधर एक चला, उधर ही सारे चल पड़े।

आज गुरु पूर्णिमा का दिन है गुरु को मनाने का दिन है। लेकिन गुरुमत में भी भेड़चाल आ गई। अगर किसी ने बताया कि वहाँ लंगर इतना बढ़िया, लाइनें लग जाती हैं। वहाँ तो लाखों लोग जाते हैं। वहाँ के महाराज जिस कुर्सी पर बैठते हैं वह कुर्सी अपने-आप उठ जाती है। फिर सब उधर को चल पड़े। किसी ने यह नहीं देखा कि असलियत क्या है? **दुनिया में भेड़चाल है।** अशोक कुमार को किसी ने कहा कि होशियारपुर में बहुत अच्छा सत्संग होता है चलो वहाँ चलते हैं। फिर किसी ने कहा कि जम्मू चलना है , फिर किसी ने कहा कि कुरुक्षेत्र चलना है, कोई कहीं भागा हुआ है, कोई कहीं भागा हुआ है। कहीं कुछ नहीं है जो कुछ है तुम्हारे पास है, तुम्हारे घट में है तुम्हारे तीसरे नेत्र के ऊपर है। नीचे सारी दुनिया है। शारीरिक दुनिया नीचे है और मानसिक दुनिया यहाँ माथे के पास है। जब तुम आँख बन्द करते हो तो एक नयी दुनिया ही पैदा हो जाती है। जब तुम नाम जपने बैठते हो तो एक नई दुनिया पैदा हो जाती है। कभी कोई रिश्तेदार सामने आ गया, कभी कोई मित्र सामने आ गया कभी कोई शत्रु सामने आ गया, कभी पत्नी सामने आ गई। वह दुनिया खतरनाक है। इस

दुनिया से तो बच गए आँख बद कर ली लेकिन उस दुनिया में तो फँस गए। उस दुनिया से निकलो किसके सहारे? नाम के सहारे, उस दुनिया को यहाँ से मिटाने वाला नाम है, वह माया है वह है नहीं भासती है। जैसे तुम स्वप्न देखते हो आनन्द लेते हो ऐसे ही वह स्वप्न है असलियत नहीं है। बैठे थे नाम जपने के लिए और अपनी दुनिया और ही बना ली, क्या फायदा हुआ नाम जपने का? वह दुनिया नहीं है वह माया है , यह काल है उसके आगे चलो यहाँ दयाल है। (यह शरीर सिर के नीचे का हिस्सा पिंड देश है, माथा अंग देश है, ऊपर मस्तिष्क ब्रह्म देश है।) तुम्हारे तीन टुकड़े हैं। बाजू को लो वह भी तीन टुकड़ों में है, शरीर भी तीन टुकड़ों में है। तीन- तीन टुकड़ों में बँटे हो, यह त्रिलोकी है। इस ब्रह्मांड देश में, इस पिंड देश में अखंड देश में दुनिया है। इससे आगे चलना है। आगे क्या है? आगे गुरु है। मैं तो आपका गुरु नहीं हूँ मैं तो बस आपका सेवक हूँ , मैं तो संगत का दास हूँ। तुम मन के भ्रमों में पड़े हुए हो, तुम्हारे मन पर जो संशय है, तुम्हारे मन पर जो चिन्ताएँ हैं गुरु की शक्ति के द्वारा उन पर मैं झाड़ू देता हूँ। दाता दयाल जी कहते हैं-

धोबिया प्रकटा जगत में सजनी, लीजो चूनर धुलाय।

गुरु क्या है ? गुरु धोबी है वह चुनरी साफ करता है। अगर आपकी चुनरी साफ नहीं हुई, मैली की मैली रह गई तो सत्संग का कोई फायदा नहीं हुआ। अपने ख्यालों को बदल दो। ईर्ष्या नहीं करनी, शत्रुता नहीं करनी, नफरत नहीं करनी सबके साथ प्रेम से रहो। हम सब इन्सान हैं। तुम किसी से शत्रुता नहीं कर रहे, तुम शत्रुता अपने आप से कर रहे हो। जो कहता है मैंने उसको धोखा दिया, उससे चार सौ बीसी की। मैंने पैसे कमा लिए, मैंने उसको पैसे देने थे, नहीं दिए। वह अपने लिए खाई खुद खोद रहा है। तुम किसी को धोखा नहीं दे रहे, तुम अपने-आपको धोखा दे रहे हो, तुम किसी को नहीं मार रहे, अपने आप को मार रहे हो। तुम किसी से झूठ नहीं बोल रहे तुम अपने आप से झूठ बोल रहे हो, तुम मालिक-ए-

कुल की संतान हो, तुम परम पुरुष की सन्तान हो। पर हम यहाँ आकर बँट गए और उसी बँटबारे के कारण रो रहे हैं, चीख रहे हैं। कहते हो रात को नींद नहीं आती जैसे सारी दुनिया को तुमने कंट्रोल में किया हुआ हो। बारिश ज्यादा हो गई तो कहोगे अरे, कीचड़ ही कर दिया है अब बस कर। तुम बारिश भी अपने मतलब की चाहते हो, धूप भी अपने मतलब की चाहते हो। हवा भी मतलब की चाहते हो, पानी भी हमारी मर्जी से बहे, यह नहीं होगा। यह उस परमात्मा के हाथ में हैं, यह उसके हाथ में ही रहने दो। जो तुम्हें ताकत दी है तुम उसका सदुपयोग करना सीखो। वह ब्रह्म तुम्हारे अन्दर है जो सृष्टि को पैदा करता है। अगर तुम उसका दुरुपयोग करो, अच्छी औलाद पैदा न करो और दोष उस परमात्मा को दो। वह मानेगा, वह कहेगा मूर्ख कहीं का पैदा तुम ने किया है और दोष मुझको दे रहा है।

इसलिए मेरे दाता परमदयाल जी महाराज कहते हैं 'ऐ इन्सान औलाद को औलाद के ख्याल से पैदा कर। आज दुनिया में दुःख इस बात का है– जिनके बच्चे नहीं हैं वे भी दुःखी हैं, जिनके हैं वे भी दुःखी हैं। कारण क्या है? औलाद पैदा करने का संस्कार ही भूल गए। हम इच्छा से बच्चे पैदा नहीं कर रहे, जो बिना इच्छा के बच्चा आयेगा, Out of Control जो बच्चा आयेगा, वह कैसे तुम्हारा कहना मानेगा? मेरे पास हजारों लोग आते हैं, कहते हैं बच्चे कहना नहीं मानते उनसे पूछो कि तू पति का कहना मानती हो। जो पति पत्नी का कहना न माने या पत्नी पति का कहना न माने उनकी औलाद भी उनका कहना नहीं मानेगी। संतमत कहता है –

एक ने कही, दूसरे ने मानी, दोनों जानो ब्रह्म-ज्ञानी।

परमदयाल जी महाराज एक बात सुनाया करते थे– कोई साधु भक्ति करने चला गया। जंगलों में जाकर भक्ति की, बड़ा तप किया। रोटी नहीं खाई, फूल और पत्ते खाए। कुछ महीनों बाद उसने सोचा कि मैंने बड़ी तपस्या कर ली है, अब जरा आज़मा के भी देखूँ कि मुझमें कितनी शक्ति

आ गई है। सामने चिड़िया दाना चुग रही थी। वह कहता है चिड़िया मर जा और चिड़िया मर गई। वह बड़ा खुश हुआ कि अब तो ताकत आ गई है। अब भक्ति करने की जरुरत नहीं है। उसने फिर चिड़िया से कहा, चिड़िया उड़ जा चिड़िया फर्र करके उड़ गई। उसने सोचा अब तो मौज़ लग गई। अब मैं बीमार भी कर सकता हूँ और इलाज भी कर सकता हूँ। वह आगे चल पड़ा। उसने सोचा अब पानी पीया जाए। एक स्त्री कुएँ से पानी निकाल रही थी। वह पानी निकालती और फैंक देती, फिर पानी निकालती फैंक देती। उस साधु ने कहा बेटी, पानी पिला दे। वह बोली बैठ जा, यहाँ पर चिड़िया मर जाओ और चिड़िया उड़ जाओ नहीं, ठहर कर पानी पिलाऊँगी। वह साधु एकदम ठंडा होकर बैठ गया। जब उस स्त्री ने अन्तिम बाल्टी पानी की निकाली तब उसने कहा ले, अब तू यह पानी पी ले। वह साधु बोला बीबी मेरी प्यास तो बुझ गई, अब यह बता कि तू पानी निकाल-निकाल कर फैंक क्यों रही थी? वह बोली यहाँ से बीस कोस मेरी बहन की झोंपड़ी को आग लगी थी वह बुझा रही थी। साईंस इस बात को आज साबित करेगी कि इंसान के Will Power में कितनी ताकत है? तुम्हारे अन्दर बहुत ताकत है। मैंने परमदयाल जी महाराज की शिक्षा के मुताबिक बहुत तजुर्बे किए हैं। तुम्हारे अन्दर इतनी ताकत है कि तुम यहाँ से उठकर आकाश की सैर कर सकते हो। वह साधू बोला बीबी यह तो बता इतनी ताकत तुमने कहाँ से प्राप्त की?

उसने कहा जब मेरी शादी हुई और मैं ससुराल आई। पति भी सोए थे मैं भी सोई थी। पति ने पानी माँगा। सर्दी का मौसम था मैं फटाफट रसोई में गई, पानी लेकर आई तो देखा पति सो रहे हैं। मैंने उनको जगाया नहीं, उनके चेहरे की तरफ देखती रही। कब उनकी आँख खुले और वह पानी माँगे और मैं पानी दूँ। उसका ध्यान केन्द्रित हो गया, ध्यान ठोस हो गया। जब तक पति उठे तब तक सुबह हो चुकी थी। उन्होंने मुझे देखा तो मेरी हालत ही कुछ और थी। मेरा प्रकाश खुल गया था, मुझे ज्ञान हो गया था।

मैंने अपने पति को पानी पिलाया और उनके चरणों में शीश झुकाया कि तुम्हारे कारण मेरा यह काम हो गया। वह बोला अच्छा, इसके आगे की बात बता। वह बोली फलाँ जगह पर मेरा छोटा भाई है, तू उसके पास चले जा। वह तुम्हें अगली बात बतायेगा। उसने पूछा वह कहाँ मिलेगा? वह बूचड़खाने में मिलेगा। वह वहाँ क्या करता है? वह बकरे काटता है और माँस बेचता है। जो बकरे काटता है और बेचता है उसको ज्ञान कैसे हो सकता है? वह बोली ऐसा मत सोच और जा। वह वहाँ पहुँच गया। सामने से ही उस औरत के भाई ने आवाज़ लगाई आजा तुझे मेरी बहन ने भेजा है। इधर आजा और यहाँ बैठ जा। यह थोड़ा सा माल रहता है इसे बेचकर तुमसे बात करुँगा। सारा माल बेचकर बोला आ घर पर चलें। घर पर जाकर माता-पिता के पानी से पैर धोए, फिर रोटी बनाई उनको खिलाई। वह बोला भाई, अब तो मुझको कुछ बता, वह बोला तुमने देखा नहीं, तुझे पता नहीं चला कि मैंने कहाँ से पाया? वह बोला नहीं। मैंने माँ-बाप की सेवा से पाया।

अब आप बताओ कि वह जंगल की भक्ति अच्छी या माँ-बाप की भक्ति अच्छी। यह सब अच्छा है या जंगल में घूमना अच्छा है। जिस घर में माँ-बाप हैं और हम माँ-बाप की सेवा नहीं करते और गुरु के पीछे भागे हुए हैं, उनको इस जन्म में भी शान्ति नहीं मिलेगी और दूसरे जन्म में भी शान्ति नहीं मिलेगी। तुम्हारे घर में ही है देवी और देवता, तुम्हारे घर में है माँ-बाप, पहले उनकी सेवा दूसरी सेवा बाद में।

परमदयाल जी महाराज मेरे पास धर्मशाला आए। महाराज मेरी पत्नी से बोले! बेटा बाबा जी को इतनी अच्छी-अच्छी सब्जियाँ-रोटियाँ बनाकर खिला रही हो कभी सास को भी इतने प्यार से खाना खिलाया है? वह बोली पिताजी, खाना खाओ, उनका ही तो आसरा है।

घर में घट दिखलाय दे, सो सत्पुरुष सुजान।

तुम्हारे घर में ही सब कुछ है। तुम्हारे अन्दर ही है सब कुछ, इस चोले में ही सब कुछ है। यह चोला नर-नारायणी देह है। हजूर चरणसिंह जी महाराज के वचन मैंने सुने हुए हैं। वह कहते थे यह नर-नारायणी देह है इसके जैसा दुनिया में और कुछ नहीं है। आप मेरे सामने बैठे हैं आप अपनी फोटो लेकर जाओ और पूरी दुनिया में एक भी अपने जैसा ढूँढ कर बता दो। आप जैसा रूप या जैसे आप हैं दुनिया में कोई और नहीं है। आप जैसा रूप आज से 100 साल पहले भी नहीं था, 100 साल बाद में भी नहीं होगा। इसलिए इस रूप की कद्र करो। मत भटको, मत धक्के खाओ, मत भागो, ठहर जाओ, अपने-आप में ठहरो। भेड़-चाल में मत पड़ो कि वहाँ कोई जा रहा है तो हम भी चलें। दुनिया तमाशा है, इस तमाशे से बचो। एक गुरु की बाँह पकड़ लो, उसको मत छोड़ो। कबीर साहब जी का एक शब्द है-

मेरे सद्गुरु पकड़ी बाँह, नहीं तो मैं बह जाता।

इसीलिए एक के हो जाओ। एक के रहोगे तो भक्ति हो सकती है, अनेक के रहोगे तो भक्ति नहीं होगी। मैं उदाहरण के साथ कहता हूँ एक पति की, जो पत्नी होती है वह माँ भी बनती है, दादी भी बनती है, नानी भी बनती है, मासी भी बनती है वह सब कुछ बनती है। जिसकी शादी न हो, पति न हो, वह क्या बनती है? कुछ भी नहीं, उसको कोई पद नहीं मिलता। पद प्राप्त करना है तो गुरु की शरण में जाओ -

सद्गुरु शरण गहो, मेरे प्यारे कर्म झुकात झुकाए।

वह हस्ती तुम्हारे में आई है। वह हस्ती कोई मूर्ति नहीं है। वह तुम्हारे दिल की धड़कन को पहचानता है, वह तुम्हारी वासना को समझता है, वह तुम्हारे दु:ख को समझता है, वह तुम्हें अपने जैसा समझता है। इसलिए वह तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता है-

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप।

अब क्या हुआ? गुरु कौन है? शिष्य कौन है? गुरु शब्द है और तुम्हारी सुरत शिष्य है। शरीर गुरु नहीं है। शरीर आदरणीय है, क्योंकि उसने तुम्हें रास्ते पर लगाया है उस का अहसान सारी ज़िन्दगी है। मैं परमदयाल जी का जब तक इस शरीर के चोले में हूँ उनको नहीं भुला सकता, उनके अहसास को कभी भूल नहीं सकता। यह उनकी कृपा है, उनकी दया है कि मुझे यह भेद मिला और वही भेद मैं तुम्हें देना चाहता हूँ। ऐ मेरे प्यारे बच्चो, मेरे प्यारे भाई-बहनो, बच्चों के लिए गुरुमत की शिक्षा नहीं उनके लिए शिक्षा और है। बच्चों के लिए डॉक्टर बनो, इंजीनियर बिजनैसमैन बनो, पहले अपनी दुनिया बनाओ। भूखे ने क्या भक्ति करनी? संतमत नौजवानों से कहता है आगे बढ़ो जैसे मेरे दाता ने मुझको बढ़ाया। अठारह साल में बढ़ाना शुरु किया अब सत्तर साल का हूँ अभी तक बढ़ रहा हूँ। पहले शारीरिक रूप से बढ़ाया फिर मानसिक रूप से बढ़ाया, फिर धन के रूप से बढ़ाया, आत्मिक रूप से बढ़ाया, अब रुहानी रूप से बढ़ा रहे हैं। आत्मिक रूप ओर है और रुहानी दुनिया ओर है। वह सूरत क्या है? वह तुम हो। शब्द तुम्हारे अन्दर है। तुम्हारे अन्दर ही सवाल पैदा होता है, तुम्हारे अन्दर में जवाब मिलता है। तुम बैठो तो सही तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब अन्दर मिलेगा।

मैं तो परमदयाल जी से दूर रहता था तब टेलीफोन नहीं होते थे, चिट्ठी लिखते थे और चिट्ठी चार-पाँच दिन में मिलती थी। सुबह जो कुछ अभ्यास में होना चिट्ठी लिख देनी कि अभ्यास में आज यह-यह दृश्य देखे। वह लिखते थे कि बच्चा तेरा पत्र मिला, तेरा अभ्यास ठीक है। जब होशियारपुर आना तब आमने-सामने बात होती थी।

गुरु शब्द को कीजिए, बहुते गुरु लभाए।
अपने-अपने स्वार्थ को, ठौर-ठौर बट मार॥

जो भी अन्दर नज़र आता है उसको छोड़ते जाओ। जब तक ''राँझा-राँझा कहदीं नी मैं आपे राँझा होई।'' जब तुम नाम जपते-जपते वो ही न बन जाओ तब तक जो ख्याल आता है उसको निकालते जाओ।

शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप।
गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार।

तत्व किसको कहते हैं? कोई घटना घटी घर में, देश में, परिवार में, समाज में उस घटना के कारण को ढूँढना कि यह क्यों हुई? वह जो कारण है, वह तत्व है। उस घटना का जो कारण है वह तत्व है। अगर तुम पहले हाय-हाय करते हो कि यह क्यों हुआ? जब उस घटना के तत्व तक पहुँचोगे तो कहोगे कि जो हुआ अच्छा हुआ। उदाहरण के तौर पर तुम्हें बताता हूँ कि तुम बस में कहीं जा रहे हो और बस का टायर पंक्चर हो गया। आपने जल्दी पहुँचना था। बस से ड्राईवर भी उतर जाता है और कंडक्टर भी उतर जाता है और कहते हैं भई, अब तो आधा घंटा लग जायेगा। आप वहाँ खड़े होकर ड्राइवर को भी गालियाँ निकाल रहे हो, कंडक्टर को भी गालियाँ निकाल रहे हो और सरकार को भी गालियाँ निकाल रहे हो। अरे! इतनी दूर जाना था पहले ही टायर बदल लेते। मैकेनिक मर गए, सरकार मर गई, मिनिस्टर मर गए। तुम इसी चक्कर में पड़े रहते हो और मान लो उस वक्त गाड़ी खराब न होती।

आगे जाकर देखते हैं कि एक गाड़ी का एक्सीडेंट हुआ है। किसी ने पूछा कब हुआ यह आधा घण्टा पहले। फिर तुम सोचते हो, अच्छा हुआ टायर पंक्चर हो गया अगर हमारी गाड़ी पहले आती तो हमारा ही एक्सीडेंट होना था। तुम्हारे साथ जो कुछ भी होता है अच्छा या बुरा किसी को दोष मत दो, इसमें तुम्हारी ही भलाई है। गाड़ी पंक्चर हो गई भलाई है। गाड़ी निकल गई आप रह गए इसमें भी भलाई है। आप हाय-हाय करना छोड़ दो। कब तक मन की दौड़ में लगे रहोगे। कब तक दूसरों को गालियाँ दोगे या दूसरों की गालियों को रोकोगे? तत्व हो जाओ। गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार। मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज ने कहा बच्चा तेरे जीवन में जो भी घटना घटेगी, उसमें तेरा भला है। भला ही हुआ, भला ही हो रहा है और भला ही होगा। भागवत-गीता का सार है – कहने वाले

बहुत कुछ कहते हैं, कोई इतिहास न पढ़ो। भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को क्या कहते हैं या अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से क्या पूछता है? सारा कुछ भूल जाओ केवल एक लाईन याद रखो– **जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा ही हो रहा है और जो होगा अच्छा ही होगा।** यह लिखकर अपने घरों में लगा लो कभी बुरा नहीं होगा, नहीं होगा।

आप सत्संग में आए हैं। तुम खुद बुरे ख्यालों के बीज बोते हो। वे ख्याल ब्रह्माण्ड में जाते हैं और वहीं वापिस आ जाते हैं। जहाँ से ख्याल गया वहीं वापिस आयेगा। तुम्हारा बुरा ख्याल तुम्हें ही तंग करेगा। इसलिए कभी भूल कर भी बुरा नहीं सोचना– Be Positive. परमदयाल जी हमेशा कहते थे कि आशावादी रहो। दाता दयाल जी महाराज ने कहा –

आस कर गुरु की दया, हो न तू निराश कभी।
जो हुआ निराश समझ ले, तू न गुरु का दास कभी॥

जो उदास है वह गुरु का दास नहीं है। आशावादी रहो। हमेशा आस के तीर चलाते रहो। तुम्हारा तीर ठीक निशाने पर पहुँचेगा।

गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भवभय भार।

जब मैं छोटा था और महाराज जी के दरबार में नहीं आता था। मैं सोचता था 'भवसागर' शायद किसी विशाल पानी के सागर को कहते हैं, जिसे हमें पार करना है। नहीं, कोई सागर नहीं है। भव है– तुम्हारे शरीर के Label पर, तुम्हारे मन के Label पर, आत्मा के Label पर जितने ख्याल उठते हैं, जितनी भावनाएँ उठती हैं, जितनी आशाएँ उठती हैं, जितनी वासनाएँ उठती हैं वह भव है। अगर तुम्हारे ख्याल गन्दे हैं। तुम ईर्ष्या करते हो, द्वेष करते हो, शत्रुता करते हो, चार सौ बीसी करते हो, झूठ बोलते हो, गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करते तो तुम्हारा भव सागर गन्दा है। तुम्हें सुख नहीं मिलेगा। अगर तुम नेक ख्याल रखते हो, दूसरों की मदद करते हो, दूसरों की इज्जत करते हो, किसी को सहारा देते हो, हक–हलाल की

कमाई खाते हो, घर में शान्ति रखते हो तब तुम्हारा भव–सागर बहुत अच्छा होगा। भव–सागर को बनाना तुम्हारा काम है। तुमने अपना भव–सागर अच्छा करना है। गुरु तुम्हें भव–सागर से पार कर देता है। वह कहता है कि कब तक ख्यालों में डूबा रहेगा, यह ख्याल छोड़ दो। यह केवल मनोरंजन है। कोई फिल्म अपने अन्दर बना लेते हो और उसको देख–देखकर खुश होते रहते हो। आगे चल बच्चा यह कुछ नहीं है केवल तुम्हारा मन है उससे आगे निकल प्रकाश में जा, शब्द में जा, वही तेरा असली रूप है।

फिर क्या हुआ? सारे भ्रम टूट गए। दुनिया स्वप्न लगने लगी। यह दुनिया स्वप्न ही है। पचास–साठ या सौ साल का स्वप्न है। जैसे स्वप्न में तुम किसी को अपना बना लेते हो, कभी सुखी होते हो, कभी दुखी होते हो। इस स्वप्न को सुन्दर बना लो, तुम्हारा जीवन सुखमय हो जायेगा यही दाता दयाल जी महाराज कहते हैं–

राधा स्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय।
जो नहीं माने वचन को, उरझ उरझ उरझाय॥

जो नहीं मानता वह मन के ख्यालों में उलझता जाता है। राधा स्वामी कौन है? हम सबको राधा स्वामी बोलते हैं। राधा स्वामी एक हालत है, जहाँ शरीर का ख्याल नहीं रहता। जहाँ मन का संकल्प नहीं होता। जहाँ आत्मा भी नीचे रह जाती है। सुरत शब्द में जाकर ठहर जाती है। सुरत का शब्द में ठहर जाना ही राधा स्वामी है।

'कौन समझे यह बानी, भरम में पड़े अज्ञानी' अब वह कहते हैं इस वाणी को वह समझेगा जिस पर गुरु की दया होगी। ऐ इंसान गुरु तेरे से दूर नहीं है। दाता दयाल जी हमें गुरु का रूप बताते हैं। आप सत्संग में आए हैं और आज गुरु का दिन है, आज गुरु पूर्णिमा है। हम गुरु की पूजा करते हैं, फूल चढ़ाते हैं, धन देते हैं, आरती करते हैं। दाता दयाल जी कहते हैं–

साधो गुरु का रूप लखाऊँ।
जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ।
सत रज तम के हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊँ॥

हम सबमें सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी आत्मगुणी गुण हैं। वे कहते हैं यह तीनों से परे है न वह सतोगुण में है, न वह रजोगुण में है, न तमोगुण में है।

निर्गुण सगुन देह नहीं जाके, अद्‌भुत भेद जताऊँ।

वह क्या है? वह शब्द है। उसका कोई रूप नहीं है, वह न निर्गुण है, न सर्गुण है, न उसका शरीर है, न रज है, न तम है, न सत है। इस शरीर में तो रजोगुण भी है, सतोगुण भी है, तमोगुण भी है।

हाड़ माँस नाड़ी नहीं जाके, वाके रूप न नाऊँ।

गुरु कहाँ है? तुम्हारे अन्दर है।

सबका सबमें सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ।

वह गुरु सबका है किसी अकेले का नहीं है।

रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ।

उसका रूप नहीं है। जिसने बाहर का शब्द नहीं पकड़ा वह अन्दर के शब्द को भी नहीं पकड़ सकता।

राधा स्वामी चरन शरन बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊँ।

उस सत्पुरुष की वाणी इस ब्रह्माण्ड में गूँज रही है। स्वामी जी महाराज का शब्द है–

मन रे क्यों गुमान अब करना॥
तन तो तेरा खाक मिलेगा। चौरासी जा पड़ना।
दीन गरीबी चित में धरना। काम क्रोध से बचना॥

दीन वह नहीं है जिसके पास खाने को रोटी नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, बल्कि दीन वह है सब कुछ होते हुए भी समझता है कि मेरा कुछ नहीं है, वह दीन है। यह सब गुरु ने दिया है, मेरा कुछ नहीं है। काम-क्रोध से बचना। क्रोध तब आता है जब तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होती। पत्नी

कहना नहीं मानती, क्रोध आ गया। बच्चा कहना नहीं मान रहा, बच्चा अब बड़ा हो गया, अब वह क्यों तुम्हारा कहना मानेगा, तुम उसका कहना मानो। तुम भी किसी का कहना मानना सीख लो। जो आदमी हुक्म चलाना चाहता है, उसको क्रोध आयेगा। जो हुक्म मानता है, उसको क्रोध नहीं आयेगा।

प्रीत प्रतीत गुरु की करना, नाम रसायन घट में जरना।
मन मलीन के न चलना। गुरु का वचन हिये में रखना॥

गुरु का वचन सदा हृदय में रखना यही नहीं कि दरवाजे से बाहर गए और कहने लगे पता नहीं आज बाबे ने क्या कहा, हमें तो भूख लगी हुई थी और वह बन्द ही नहीं हो रहे थे, बोले ही जा रहे थे। मन को रोको, खाना तो सदा ही खाना है, सब कुछ खाना है, सब कुछ मिलना है। थोड़ी देर के लिए मन को मुझे दे दो। मन और है हिय और है। मन दौड़ता है और हिय दौड़ता नहीं है। हिय तुम्हारा 'जिया' है।

यह मतिमंद गहे नहिं सरना, लोभ बढ़ाय उदर को भरना।
तुम मानो मत इसका कहना, इसके संग जगत बिच गिरना।
इस मूर्ख को समझ पकड़ना, गुरु के चरन कभी न विसरना।
गुरु का रूप नैन में धरना; सुरत शब्द से नभ पर चढ़ना।
राधा स्वामी नाम सुमिरना, जो वह कहें चित में धरना॥
मन रे क्यों गुमान अब करना।

किसका गुमान करना? गुरु का, गुरु की शिक्षा का, गुरु के ज्ञान का, गुरु के चरणों की आस का, विश्वास का। मैं अटल हो गया हूँ, मैं सम्पन्न हो गया हूँ, मुझे जो चाहिए था वह मिल गया। अब मुझे कहीं नहीं जाना है। जो मेरी इच्छा थी वह पूर्ण हो गई। आज गुरु पूर्णिमा के दिन जो कुछ भी मैंने जिन्दगी में अनुभव किया। अपने मन को समझाया। तुम इसका लाभ उठा लो तो मेरा भाग्य अच्छा। मैं समझूँगा मैंने आपकी सेवा कर ली। इस पवित्र दिन आप दूर-दूर से आए हो, बच्चों को साथ लाए हो। मैं इसको

महसूस करता हूँ। आपका दिया पैसा आपकी सुविधा के लिए खर्च हो रहा है। मैं इसका हकदार नहीं हूँ। मैं हकदार केवल तुम्हारे दर्शनों का हूँ। आपके दर्शन हो गए। मेरे सद्‌गुरु परमदयाल जी महाराज ने फरमाया था कि दाता दयाल जी ने मुझे हर तरह का ज्ञान दिया, हर तरह से समझाया पर मेरे बात समझ में नहीं आती थी। उन्होंने कहा कि फकीर तेरे में 99 ऐब हो सकते हैं किन्तु तेरे अन्दर एक सच्चाई है और वह सच्चाई सत्संगियों के रूप में तुम्हें मिलेगी।

परमदयाल जी महाराज कहा करते थे कि वह सच्चाई उन्हें सत्संगियों से मिली और सत्संगी ही मेरे गुरु हैं। इसलिए आप मेरे सद्‌गुरु के गुरु हो और मैं आपके चरणों की धूल हूँ। मैं तो आपका सेवक हूँ। मैं आपसे झूठ कैसे बोल सकता हूँ। मैं आपसे हेराफेरी कैसे कर सकता हूँ। तुम सुखी रहो, शारीरिक रूप से तंदुरुस्त रहो, तुम्हें इज्जत की रोटी मिले, पहनने को बढ़िया कपड़े मिलें, रहने को बहुत बढ़िया मकान मिले। तुम्हारे मन को शान्ति मिले, तुम्हारी आशाएँ पूरी हों। जिन बच्चों की शादी नहीं हो रही उनकी शादी हो जाये। जिनको नौकरी नहीं मिली उनको नौकरी मिल जाये। जिसका मकान नहीं बना उनका मकान बन जाये। जो कुछ भी तुम लेने आए हो वह तुम्हें मिल जाये और तुमको वह मिलेगा। यह मेरे दाता का आपको आशीर्वाद है, आप सभी सुखी रहो।

आप सबको राधास्वामी!

●

के. एम. सी. परदेसी नहीं रहे

जीवन यात्रा पर पूर्ण-विराम!

यह कोई दु:ख का विषय नहीं है क्योंकि संसार से जाना तो तय है। किसी ने अपना जीवन कैसे गुजारा, यह महत्त्वपूर्ण है। परमदयाल जी के श्री चरणों में अपना जीवन गुजारा, इससे बढ़कर क्या हो सकता है? उनको पूर्ण-पुरुष मानना तथा उनकी सेवा में बेटे की तरह रहते हुए परदेसी जी एक पारिवारिक सदस्य की तरह रहे।

– जीवन –

25 अगस्त, 1928 को चलेट गाँव, जिला ऊना (हि. प्र.) में लैफ्टिनेंट लक्ष्मण सिंह बहादुर तथा माता पार्वती देवी जी के घर जन्म लिया तथा 19 जून 2014 को कैनेडा में अपने बच्चों के पास रहते हुए दुनिया से रुख्सत हो गए।

अपने जीवन में अच्छी पढ़ाई करते हुए Agriculture Field में बड़ा जमींदारा स्थापित किया। खरबूजा उत्पादन में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति Dr. Randhawa व Dr. Cheema ने उनको Award से सम्मानित किया।

उनके शब्दों में 1937 में बाबा सावन सिंह जी ने सारे परिवार को घर पधार कर नाम दान दिया। लेकिन अपनी मनमर्ज़ियों के कारण वे घर छोड़कर कलकत्ता चले गए। तब ब्यास की गद्दी पर बाबा जगत सिंह जी

महाराज जिनका परमदयाल जी महाराज से भी विशेष स्नेह था, उन्होंने पत्र लिखकर परदेसी जी को घर वापिस आने तथा होशियारपुर में परमदयाल जी महाराज के पास जाने की सलाह दी तथा इस विषय पर परमदयाल जी महाराज को भी पत्र लिखकर परदेसी जी को अपनी शरण में लेने को कहा।

परदेसी जी, 18, रेलवे-मंडी, होशियारपुर में परमदयाल जी महाराज के पास गए। अपने स्वभाव के अनुसार कहा कि मैं कोई सत्संगी नहीं बनना चाहता। अगर मुझको अपने बेटे की तरह मानोगे, तो मैं आपकी बात मानूँगा।

परमदयाल जी महाराज ने इनको जीवन-भर अपने परिवार के सदस्य की तरह ही माना तथा इनकी शादी से लेकर, इनकी ज़िन्दगी की साज-संभाल की। इनकी शादी स्वर्गीय सरला जी के साथ परमदयाल जी के आशीर्वाद से हुई तथा इनके दो बेटे व एक बेटी हैं जो कि कैनेडा में Settled हैं।

मानवता-मंदिर की नींव-पत्थर रखने से लेकर अपने जीवन के आखिरी सफर तक तन, मन और धन से सेवा की। मन्दिर के सैक्रेटरी, प्रधान तथा पूर्णरूपेण सलाहकार रहे।

परमदयाल जी महाराज के साथ इनका बेटे, एक दोस्त तथा एक प्रेमी का सम्बन्ध रहा। जहाँ पर भी परमदयाल जी महाराज सत्संग करने जाते थे, परदेसी जी भी वहाँ पहुँच जाते थे। यह मानवता-मन्दिर की स्थापना से भी पहले की बात है कि परमदयाल जी महाराज तलवाड़ा के एक गाँव में सत्संग कर रहे थे कि परदेसी जी रात को 9 बजे साइकिल द्वारा पहुँच गए जिस पर परमदयाल जी महाराज ने इन्हें प्यार से डराते हुए कहा कि यहाँ उड़ने वाले हरे रंग के साँप होते हैं। परदेसी साहिब ने कहा कि महाराज जी! आपके होते हुए मुझे कोई साँप नहीं काट सकता। परमदयाल जी महाराज ने एक सत्संग में इनको सम्बोधित करते हुए

ख्याल की ताकत के ऊपर फरमाया तथा समझाया कि तुम्हारा अपना अच्छा ख्याल ही भगवान् का नज़दीकी रूप है।

इस ख्याल की ताकत पर परदेसी जी ने एक किस्सा सुनाया कि परमदयाल जी महाराज गाँव महिलाँवाली, होशियारपुर के दस किलोमीटर दूर सत्संग कर रहे थे तो परदेसी जी भी वहाँ पहुँच गए। जब परमदयाल जी महाराज ध्यान से उठे तो उन्होंने जिस औरत ने सत्संग करवाया था उसको पूछा कि बेटी, बोलो क्या चाहती हो? उसने कहा कि महाराज जी, मुझे कुछ नहीं चाहिए। परदेसी जी ने झटपट उठकर कहा कि 'महाराज जी मुझे चाहिए।' महाराज जी ने कहा, तुझसे किसने पूछा है लेकिन फिर कहा कि बता तुझे क्या चाहिए? परदेसी जी ने कहा कि कार (Car) चाहिए क्योंकि आप जगह-जगह साइकिल पर बैठकर सत्संग कराने जाते हैं इसलिए। परमदयाल जी महाराज ने कहा कि पहले तेरी शादी होगी तब कार मिलेगी और ऐसा ही हुआ। जब होशियारपुर वापिस आने लगे, तो गोपालदास जी से सिगरेट का पैकिट परमदयाल जी महाराज ने ले लिया। परदेसी जी तथा गोपालदास जी जब वापिस आ रहे थे तो गोपालदास जी ने सिगरेट पीने की इच्छा प्रकट की। परदेसी जी ने कहा कि ठहरो, मैं अभी मँगवाता हूँ और वे सड़क पर आँखें बन्द करके ध्यानमग्न हो कर बैठ गए। दस मिनट के बाद गोपालदास जी ने परदेसी जी को उठाया और सिगरेट की डिब्बी व माचिस उनके हाथ में थी। उन्होंने बताया कि ऊना की तरफ से एक बस आ रही थी उसमें एक फौजी-वर्दी पहने हुए आदमी ने बस से हाथ बाहर निकाला हुआ था उसके हाथ से छूटकर सिगरेट व माचिस की डिब्बियाँ गोपाल दास जी के पैरों के पास गिर गईं। यह है ख्याल की ताकत। लेकिन जब यह बात गोपालदास जी ने परमदयाल जी महाराज को बताई, तो परदेसी जी को डाँट पड़ी तथा आगे से ऐसा करने से मना किया। परमदयाल जी महाराज की दया से और बहुत सी बातें उनकी ज़िन्दगी में हुईं जिनका जिक्र फिर कभी किया जायेगा।

उन्होंने आखिरी साँस पर भी मन्दिर का ही जिक्र किया। शरीर में कई रोग होने तथा डॉक्टरों के सख्त मना करने पर भी हर वैसाखी तथा हर अवसर पर हठयोगी की तरह आते रहे। एक साधारण आदमी ऐसा नहीं कर सकता। यह उनका परमदयाल जी महाराज की शिक्षा तथा ट्रस्ट के लिए एक प्रण था जो उन्होंने आखिर तक निभाया।

आज इस दु:ख के अवसर पर दयाल कमल जी महाराज तथा ट्रस्ट प्रधान ब्रह्मशंकर जिम्पा जी, सैक्रेटरी राणा रणबीर सिंह जी जिन्हें वे बेटे की तरह ही मानते थे तथा होशियारपुर में उनके पास ही रहा करते थे, हमारे समस्त ट्रस्टीगण कुलदीप शर्मा, डॉ. के. के. शर्मा, रणजीत कुमार, अरविन्द पराशर, फकीर प्रसाद डोगरा, विजय डोगरा, राजेश्वर दयाल (बब्बी), अनुराग सूद, सुच्चा सिंह, बालकृष्ण, विपिन जैन, जे. सी. गुप्ता (U.K.), डॉ. रामदेव रॉव (U.S.A.), पवन प्रकाश मल्हन, सरवण सिंह, सवर्ण सिंह, सुरेश कुमार की तरफ से परमदयाल जी महाराज से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा इनके परिवार पर अपना आशीर्वाद बनाएँ रखें।

– राधा स्वामी!

●

हजारी लाल शर्मा जी, जो कि मन्दिर के सरप्रस्त हैं तथा कैनेडा में अक्सर परदेसी जी से टैलीफोन पर मन्दिर तथा ट्रस्ट से सम्बन्धित चर्चा करते रहते थे, परदेसी जी के परिवार के प्रति सम्वेदना प्रकट करते हैं।

राधा स्वामी!

आभार प्रदर्शन

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि भेजी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों और इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। – सचिव

S. NO.	DONOR	AMOUNT
1.	H. H. Dayal Kamal Ji Maharaj	1552/–
2.	Rajesh K. Hiranandani–Mumbai	50000/–
3.	Bhagat Singh– Jodhpur	26101/–
4.	Lajpat Rai–Hoshiarpur	21926/–
5.	Ravinder Pal Singh – Ferozabad	21000/–
6.	Dr. Rinki – U. S. A.	14824/–
7.	Sachin Kumar M. D. S.–Kapurthala	11000/–
8.	M/s. Durga & Co.– Billari	10000/–
9.	Mukul/ Sudha Bhatnagar– U. S. A.	8584/–
10.	Gaurav Gas Service– Hoshiarpur	5500/–
11.	Sri Parkash/ Tulsi Bai Gupta– U. S. A.	5871/–
12.	Ajit Kumar– U. S. A.	5871/–
13.	Rahul/ Vandana Bhatngara– U. S. A.	5798/–
14.	Faqir Chand – Nawanshahar	5100/–
15.	Sunil Kumar–Kapurthala	5100/–
16.	Harbhajan Singh – Hoshiarpur	5000/–
17.	Amar Singh – Jhawan	5000/–
18.	Gaurav Srivastava– Billari	5000/–

19.	Satwinder Singh & Sons– Batala	5000/–
20.	Geobin– Mumbai	5001/–
21.	Asha Rajput– Dudley (U. K.)	4965/–
22.	Romesh Chandiwala– Delhi	4000/–
23.	Tarun Sharma– Delhi	3100/–
24.	Chaman Lal (I. T. B. P.)– Delhi	4500/–
25.	Rajeshwar Dayal – Hoshiarpur	3600/–
26.	Nand Sihra's Family– Canada	5000/–
27.	In Memory of Late Sh. G. D. Bhardwaj–Noida	2500/–
28.	Kirpal Dogra– Chandigarh	2500/–
29.	Mohal Lal Bagga– Hoshiarpur	2600/–
30.	Ved Parkash Sharma– Ferozabad	2100/–
31.	Virender Kr./ Kiran Sharma– Ludhiana	2100/–
32.	Daljit Gupta– Delhi	2100/–
33.	R. P. Joshi– Panchukula	2100/–
34.	Ashok Khetarpal– Chandigarh	2100/–
35.	Mr. Happy– Hoshiarpur	2100/–
36.	Vikramjit Kaur–Batala	2000/–
37.	Mahohar Lal–Hoshiarpur	1100/–
38.	Suresh Kumar– Jalandhar	1100/–
39.	Krishna Sharma–Delhi	1100/–
40.	Neha Sharma– Delhi	1100/–
41.	Lekh Raj – Jaipur	1100/–
42.	Dr. Battu Singh– Alwar	1100/–
43.	K. C. Sharma– Nepa Nagar	1100/–
44.	Smt. Master Gian Chand– Nawanshahar	1100/–
45.	Kamalpur Wali Mai's Family– Jalandhar	1100/–
46.	Kamal & Agam Parshad– Hoshiarpur	1100/–
47.	Nand Singh– Harchowal	1185/–
48.	Mohinder Kumar – Kapurthala	1150/–
49.	Inderjit Sharma– Panipat	1100/–

50.	Upinderveer Singh – U. S. A.	1000/–
51.	Padam Singh – Sikkar	1000/–
52.	Agam Trading Co.– Batala	1000/–
53.	Surinder Jaiswal– Canada	1000/–
54.	Ach. Ajay Kapil Ji–Santokhgarh	1000/–
55.	Saroj Menon– Membai	1100/–
56.	R. G. Kulkarni– Mumbai	1500/–
57.	Smt Ram Kirti Devi – Aligarh	551/–
58.	Ex. Sub. Major Karam Singh–Passi Kandi	700/–
59.	J. K. Trading Corp. – Mumbai	531/–
60.	Gyanendra Sood – Aurangabad	501/–
61.	Akshay Kumar – Adampur	501/–
62.	Gian Chand – Nawanshahar	500/–
63.	Vinod K. Sharma – Jalandhar	500/–
64.	Mr. Geeta – Moradabad	500/–
65.	Harshita Kanwar– Khattu Shyam	600/–
66.	Ratti Kanwar– Khattu Shyam	500/–
67.	Baljeet Singh– Batala	500/–
68.	Sardool Singh– Dhira	500/–
69.	Babu Ram Thakur– Sosa (H. P.)	1000/–
70.	Prof. Om Parkash – Pune	500/–
71.	Gaurav Bedi – Saharanpur	500/–
72.	Balbir Chand– Butter Kalan	500/–
73.	Sukhdev Singh – Budhawar	500/–
74.	Inder Mohan – Hoshiarpur	500/–
75.	In Memory of Late Sh. Kartar Singh Bhatia – Hoshiarpur	500/–